आईएसएसएन-0972-6608

भाकृअनुप
ICAR

IIMR
भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
ICAR - Indian Institute of Millets Research
Global Centre of Excellence on Millets (Shree Anna)

श्री अन्न

वार्षिक प्रतिवेदन

2024

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान

श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केन्द्र

राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत

ई-मेल: director.millets@gmail.com

वेबसाइट: http://www.millets.res.in

हैदराबाद स्थित भाकृअनुप संस्थानों के निदेशकों की उपस्थिति में श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र की प्रगति की समीक्षा करते हुए डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप)

श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र की प्रगति की समीक्षा करते हुए डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) एवं डॉ. डी के यादव, सहायक महनिदेशक (बीज), भाकृअनुप

वार्षिक प्रतिवेदन

2024

भाकृअनुप
ICAR

IIMR
भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
ICAR - Indian Institute of Millets Research
Global Centre of Excellence on Millets (Shree Anna)

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केन्द्र
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: director.millets@gmail.com
वेबसाइट: http://www.millets.res.in

आईएसएसएन-0972-6608

संदर्भ

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान.
वार्षिक प्रतिवेदन 2024.
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद 500 030, भारत पृ. 69

संपादक

डॉ. पी जी पद्मजा
डॉ. आर स्वर्णा
डॉ. के हरिप्रसन्ना
डॉ. जे स्टेनली
डॉ. एन अनुराधा
सुश्री उषा सतिजा
श्रीमती डी रेवती
डॉ. सी तारा सत्यवती

हिंदी रूपांतर

डॉ. महेश कुमार
डॉ. जिनु जेकब

छायाचित्रकारी

श्री एच एस गावली

प्रकाशक

निदेशक
भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद 500 030, भारत
दूरभाष : +91-40-24599301
वेब : www.millets.res.in

मुद्रक

सर्वश्री बालाजी स्कैन प्रा.लि.
हैदराबाद

विषय-वस्तु

प्रस्तावना

1. संस्थान के बारे में 1
2. अनुसंधान उपलब्धियां 3
3. प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण 13
4. पुरस्कार और सम्मान 19
5. संपर्क एवं सहयोग 23
6. बाजरा, ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर भाकृअनुप-अभासअनुप की विशेषताएं 25
7. प्रकाशन-सूची 27
8. वर्तमान अनुसंधान परियोजनाएं 29
9. अनुसस, पंसद तथा अन्य महत्वपूर्ण बैठकें 31
10. बैठकों / संगोष्ठियों / कार्यशालाओं / सम्मेलनों आदि में सहभागिता 35
11. बैठकें, प्रक्षेत्र दिवस तथा प्रदर्शनियां 37
12. विशिष्ट आगंतुक 43
13. कार्मिक 49
14. प्रमुख गतिविधियां 53
15. आधारिक संरचना का विकास 61
16. राजभाषा कार्यान्वयन 65

प्रस्तावना

मुझे आपके समक्ष भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान (भाश्रीअनुसं) का वार्षिक प्रतिवेदन 2024 प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं श्री अन्न किसानों के लाभ को बढ़ाने हेतु फसल सुधार, फसल प्रबंधन, बुनियादी विज्ञान, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण, प्रसंस्करण तथा मूल्य वर्धन प्रौद्योगिकियां शामिल श्री अन्न के अनुसंधान तथा विकास पर कार्यरत एक वैश्विक संस्थान है। अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं (बाजरे पर अभासअनुप तथा ज्वार एवं श्री अन्न पर अभासअनुप) देशभर में परीक्षण केंद्रों के एक नेटवर्क को शामिल करते हुए भाश्रीअनुसं के अलावा बीज उत्पादन व विकास अभिकरणों के साथ प्रभावी संपर्क स्थापित करती हैं। संस्थान ने श्री अन्न सुधार, उत्पादन, संरक्षण, मूल्य-शृंखला प्रतिरूप के विकास, क्षमता निर्माण व उद्यमिता विकास पर आधारभूत एवं नीतिपरक अनुसंधान का बीड़ा उठाया है एवं देश में श्री अन्न को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार के प्रयासों को निरंतर बल प्रदान किया है।

संस्थान ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान एवं विकास प्रौद्योगिकियों की सर्वोत्तम पद्धतियों को साझा करने हेतु श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत आगामी विश्व स्तरीय अनुसंधान सुविधा के रूप में नवीनतम बहुमूल्य उपकरण जैसे नैनोपोर - प्रोमेथियन जीनोम सीक्वेंसर, डिजिटल पीसीआर, क्यू पीसीआर, जीनोमिक्स, कार्यात्मक जीनोमिक्स तथा आणविक प्रजनन अनुसंधान हेतु आनुवंशिक विश्लेषक; स्वचालित खाद्य रेशे विश्लेषक, माइक्रोवेव पाचन प्रणाली, पोषक तत्व विश्लेषण के लिए माइक्रोवेव ऐशिंग प्रणाली स्थापित की है। पौधों, कीड़ों एवं सूक्ष्म जीवों में कोशिकीय एवं आणविक कार्यों का पता लगाने हेतु पूर्णतः स्वचालित फ्लॉरेसेंश स्टीरियोमाइक्रोस्कोप, क्रायो अल्ट्रा माइक्रोटोम, लेजर माइक्रोडिसेक्शन के साथ उन्नत माइक्रोस्कोपी सुविधाएं तैयार की है। वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र हेतु अत्याधुनिक भवन का निर्माण कार्य इस वर्ष शुरू किया गया तथा यह तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत इस वर्ष एचपीसीसी संरचना के साथ प्रक्षेत्र अनुसंधान परिसर का विकास कार्य शुरू किया गया है।

आलोच्य अवधि के दौरान अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति काफी प्रभावशाली रही है। इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर लोकार्पण हेतु 1 एकल-कट चारा ज्वार किस्म (एसपीवी 2884), 1 मीठी ज्वार किस्म (एसपीवी 2890) तथा 1 कंगनी किस्म (एफएक्सवी 647/सीआरएस एफएक्सएम-4) की पहचान की गई है। संस्थान द्वारा विकसित 1 मीठी ज्वार किस्म - सीएसवी 58एसएस, 1 भूरी मध्य शिरा किस्म - सीएसवी 59 बीएमआर, 1 कंगनी किस्म - सीएफएक्सएमवी-1 तथा 1 सावां किस्म - सीबीवाईएमवी-1 को 2024 में लोकार्पित एवं अधिसूचित किया गया है। श्री अन्न जीन संग्रह में श्री अन्न जननद्रव्य की कुल 49,779 वंशावलियों को संरक्षित किया जा रहा है। स्थान-विशिष्ट अध्ययनों तथा फसल सुधार कार्यक्रमों हेतु देश भर में प्रमाणित उपयोगकर्ताओं को कुल 2961 वंशावलियां वितरित की गईं। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबतूर में 12,100 रागी वंशावलियों के बृहत लक्षण वर्णन में संस्थान की भागीदारी थी। भाकृअनुप-रापाआसंब्यो, नई दिल्ली में एक ज्वार आनुवंशिक भंडार पंजीकृत किया गया है। सभी फसलों, विशेष रूप से बाजरे में गर्मी व सूखा सहिष्णु आनुवंशिक सामग्री विकसित करने, एसएनपी-विशेषता साहचर्यों की पहचान, रेपिड जनरेशन एडवांसमेंट योजनाएं, रबी ज्वार में बहु-पैतृक संकरण कार्यनीति, खरीफ ज्वार सुधार में भू-प्रजातियों का उपयोग, संकरओज की पूर्व-सूचना, सभी श्री अन्न में मेटाबोलोमिक प्रोफाइलिंग आदि नई पहलें कार्यान्वित की गईं, जिसमें इन जलवायु-लचीली फसलों में आनुवंशिक लाभ बढ़ाने के साथ-साथ श्री अन्न के स्वास्थ्य लाभों को समझने की अत्यधिक संभावनाएं हैं। कुटकी तथा कोदो का जीनोम अनुक्रमण शुरू किया गया तथा यह पूर्ण होने की विभिन्न अवस्थाओं में है। आलोच्य अवधि के दौरान संस्थान ने ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश एवं बिहार के किसानों सहित राज्य सरकारों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, किउसं के विभिन्न हितधारकों के लाभ हेतु उत्पादन पद्धतियों, मूल्य शृंखला विकास,

स्टार्टअप प्रज्वलन आदि पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण और 40 से अधिक राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण आयोजित किए। विभिन्न राज्यों के 1000 से अधिक किसानों ने संस्थान का दौरा किया तथा नवीनतम श्री अन्न उत्पादन एवं प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों का अवलोकन करके लाभान्वित हुए। भाश्रीअनुसं देश के विभिन्न हिस्सों के कृषि छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है और इस वर्ष 3000 से ज्यादा छात्रों ने इस संस्थान दौरा किया। संस्थान ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, दो पुस्तकों तथा कई अन्य प्रकाशनों में 64 शोध लेख प्रकाशित किए हैं।

संस्थान ने अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज सम्मेलन (आईएनसीसी-6.0) का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जिसने शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, उद्योगों, किसान संगठनों, वित्तीय संस्थानों और नीति निर्माताओं के बीच एक सेतु के रूप में कार्य किया। भाश्रीअनुसं ने राज्य श्री अन्न मिशनों के सफल कार्यान्वयन में विभिन्न राज्य सरकारों के लिए ज्ञान साझेदार के रूप में भी सेवाएं प्रदान की।

संस्थान के द्वारा अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में प्राप्त सफलताएं परिषद से प्राप्त निरंतर समर्थन एवं मार्गदर्शन के कारण ही संभव हो पाई हैं। मैं डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप); डॉ. तिलक राज शर्मा, भूतपूर्व उप महानिदेशक (फसल विज्ञान); डॉ. डी के यादव, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान); डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य तथा चारा फसल), भाकृअनुप और मुख्यालय के कई अन्य प्रशासनिक पदाधिकारियों के द्वारा संस्थान के अधिदेश के कार्यान्वयन में समय-समय पर मार्गदर्शन तथा समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करती हूं।

विभिन्न समितियों के अध्यक्ष एवं सदस्यों, विशेष रूप से पंचवर्षीय समीक्षा दल, अनुसंधान सलाहकार समिति, संस्थान प्रबंधन समिति और विभिन्न संस्थान समितियों, सभी परियोजना प्रमुखों, वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन तथा इस संस्थान के अन्य कर्मचारियों के प्रयासों, समर्थन एवं सहायता के लिए आभार व्यक्त करती हूं। मैं राष्ट्रव्यापी श्री अन्न अनुसंधान नेटवर्क को सफल बनाने में योगदान के लिए अभासअनुप केंद्रों, स्वैच्छिक केंद्रों और निजी क्षेत्र के प्रतिभागियों के प्रधान अन्वेषकों एवं श्री अन्न वैज्ञानिकों के बहु-विषयक दलों की भी सराहना करती हूं। मैं विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, गैर-सरकारी, निजी संगठनों तथा अन्य सभी हितधारकों के समर्थन की सराहना करती हूं जो हमारे प्रयासों में सहयोगी हैं।

संस्थान के लक्ष्यों को पूरा करने में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए मैं संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों, प्रशासनिक, वित्त और अन्य कर्मचारियों की सराहना करती हूं। इस वार्षिक प्रतिवेदन के हिंदी संस्करण को समय पर अनुदित करने और प्रकाशित करने के लिए डॉ. महेश कुमार तथा डॉ. जिनु जेकब की प्रशंसा करती हूं।

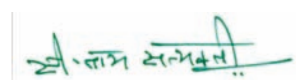

हैदराबाद

10 मार्च, 2025

सी तारा सत्यवती

निदेशक

1 संस्थान के बारे में

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान (भाश्रीअनुसं), हैदराबाद श्री अन्न की सभी अनुसंधान एवं विकास आवश्यकताओं हेतु भारत में नोडल अनुसंधान संस्थान है, जो बाजरा और ज्वार व लघु श्री अन्न पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं (अभासअनुप) के साथ संबद्ध है। संस्थान ज्वार की उच्च उपज युक्त किस्मों व संकरों, तथा लघु श्री अन्न की उच्च उपज युक्त किस्मों के साथ-साथ नवीन फसल उत्पादन, फसल सुरक्षा, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धित उत्पाद प्रौद्योगिकियों के विकास कार्यों में व्यस्त है। यह आधारभूत एवं कार्यनीतिक अनुसंधानरत है, जबकि 15 राज्यों में 31 केंद्रों के साथ ज्वार व लघु श्री अन्न पर अभासअनुप एवं 10 राज्यों में 13 केंद्रों के साथ बाजरे पर अभासअनुप नेटवर्क मोड में अनुप्रयुक्त अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों में संलग्न है।

संस्थान की स्थापना 1987 में भाकृअनुसं के क्षेत्रीय केंद्र से राष्ट्रीय ज्वार अनुसंधान केंद्र (एनआरसीएस) के रूप में उन्नयन से हुई, तत्पश्चात 2009 में ज्वार अनुसंधान निदेशालय (डीएसआर) के रूप में तथा 2015 में भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान (आईआईएमआर) के रूप में उन्नयन हुआ। रबी ज्वार अनुसंधान गतिविधियों में सहायता हेतु 1991 में, सोलापुर (महाराष्ट्र) में रबी ज्वार केंद्र (सीआरएस) की स्थापना की गई। देश में ज्वार पर अभासअनुप शोधकर्ताओं को सहायता प्रदान करने हेतु 1995 में वरंगल (तेलंगाना) में राष्ट्रीय सुविधा के रूप में एक गैर-मौसमी पौधशाला की स्थापना की गई। भारत के माननीय प्रधान मंत्री के द्वारा 2023 में, श्री अन्न अनुसंधान और विकास हेतु इसके वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में उन्नयन की घोषणा की गई। सबसे बड़े श्री अन्न क्षेत्र वाले राज्य राजस्थान में विशेष रूप से बाजरा की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाड़मेर के गुड़ामालानी में एक क्षेत्रीय बाजरा अनुसंधान केंद्र खोला गया है, और भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ द्वारा 27 सितंबर, 2023 को इसकी आधारशिला रखी गई।

दूरदृष्टि (विजन)

हमारी दूरदृष्टि देश की संवृद्धि हेतु खाद्य, पशु-आहार, चारा, पोषण एवं जैव-ईंधन की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए मूल्य-वर्धन के द्वारा जीवन-निर्वाह के रूप में प्रचलित श्री अन्न की खेती को वैश्विक प्रतिस्पर्धी जलवायु अनुकूल पौष्टिक अनाज उद्यम के रूप में परिवर्तित करना है।

भाश्रीअनुसं के मुख्य अधिदेश (लक्ष्य) :

- श्री अन्न की उत्पादकता में वृद्धि तथा उनसे लाभप्रदता बढ़ाने के लिए उनके विविध उपयोग हेतु मूलभूत तथा कार्यनीतिक अनुसंधान।
- श्री अन्न की उन्नत उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकियों का समन्वय एवं विकास।
- श्री अन्न उत्पादन एवं उपयोग पर प्रशिक्षण एवं परामर्श सेवाएं।
- प्रौद्योगिकियों का प्रसार एवं क्षमता निर्माण।

पदों की स्थिति

31 दिसंबर, 2024 तक

वर्ग	स्वीकृत	पदस्थ	रिक्त
अनुसंधान प्रबंधन पद (आरएमपी)	1	1	0
वैज्ञानिक	50	42	8
तकनीकी	44	25	19
प्रशासनिक	30	17	13
सहायक कर्मचारी	18	06	12
कुल	143	91	52

वित्तीय स्थिति - 2023-24

31 मार्च, 2024 तक

₹ लाख में

योजना	स्वीकृत	व्यय	उपयोग %
भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद	3065.27	3063.85	99.95%
श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र	8310.80	7050.80	84.84%

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान
श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र
का संगठनात्मक ढांचा

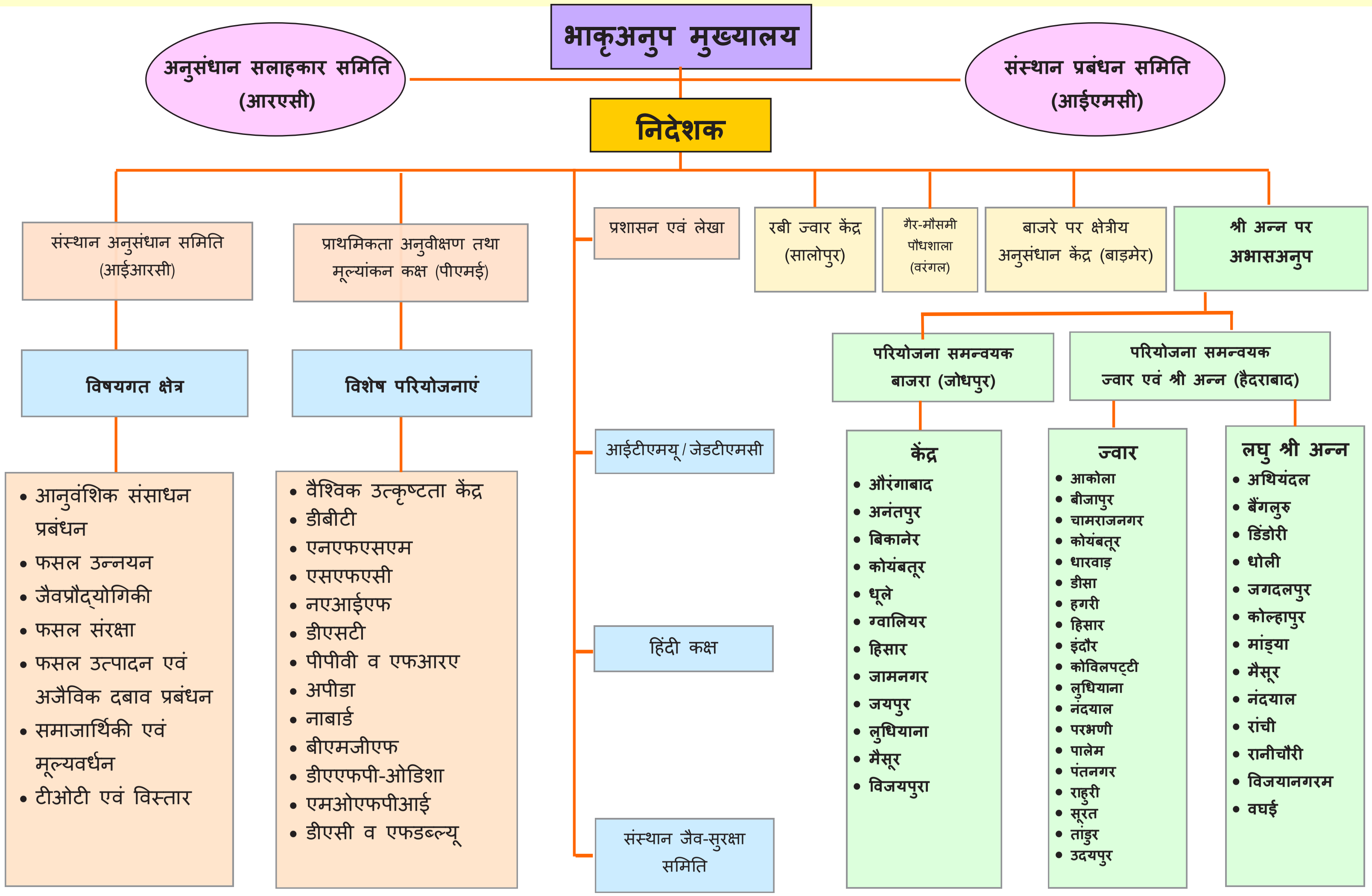

2 अनुसंधान उपलब्धियां

1. उत्पादकता, गुणता तथा तनाव सहनशीलता हेतु आनुवंशिक वृद्धि

1.1 आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन

- ज्वार: रबी 2023-24 के दौरान, भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में 22 विभिन्न आकारिकी-सस्यीय लक्षणों (9 मात्रात्मक और 13 गुणात्मक लक्षण) के लिए 242 ज्वार जननद्रव्य वंशावलियों का लक्षण-वर्णन किया गया।
- कोदो : कुल 567 कोदो प्रजातियों को 13 कृषि-आकृति विज्ञान संबंधी लक्षणों के लिए चिह्नित किया गया; सभी कृषि-संबंधी लक्षणों के लिए पर्याप्त परिवर्तनशीलता दर्ज की गई।
- 2023-24 के दौरान विभिन्न श्री अन्न जननद्रव्य की कुल 5864 किस्मों को गुणित किया गया, तथा 2024 में 2961 किस्मों को वास्तविक उपयोगकर्ताओं में वितरित किया गया।
- भाश्रीअनुसं के श्री अन्न जीन संग्रह में श्री अन्न की कुल 49,779 किस्मों को संरक्षित किया जा रहा है।
- 29 आकारिकी-सस्यीय विवरणकों के लिए टीएनएयू, कोयम्बतूर में 12,100 रागी वंशावलियों का बृहत लक्षण-वर्णन किया गया।
- रागी के जननद्रव्य की पत्ती, तने और गर्दन झोंका हेतु बहु-स्थानीय (मांड्या, विजयनगरम एवं अल्मोड़ा) जांच की गई; विभिन्न स्थानों पर प्रतिरोधी वंशावलियों की पहचान की गई।

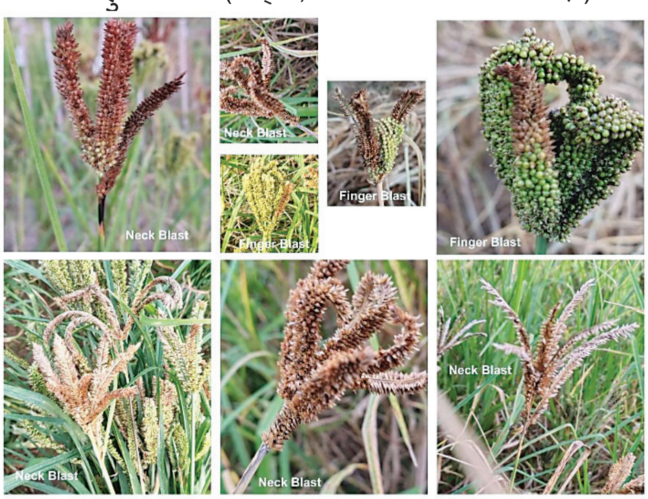

- तना बेधक व प्ररोह मक्खी सहिष्णु एक ज्वार आनुवंशिक भंडार (आईआईएमआर 20048 / आईसी651981 / आईएनजीआर 24022) को रापाआसंब्यू, नई दिल्ली में पंजीकृत किया गया।

1.2 फसल सुधार

बाजरा

- खरीफ 2024 के दौरान, मंडोर में 21 उन्नत संकरों का मूल्यांकन किया गया; दो संकर, 843-22ए × बीएल 73 तथा 291 ए × बीएल 73 में अनाज उपज उच्चतम (4.3 ट/हे) थी; द्विपोषी (शटल) प्रजनन दृष्टिकोण के माध्यम से आर-वंशक्रम बीएल 73 का विकास किया गया।
- झोंका एमडीआर 23 के नए विषैले मंडोर विलग हेतु विविधता पैनल के 300 वंशक्रमों की जांच में ≤3.0 मान के साथ 57 प्रतिरोधी थे, जिनमें आठ बी-वंशक्रण तथा और 49 आर-वंशक्रम शामिल थे।
- शुष्क वंशक्रम, स्थापित बी- तथा आर-वंशक्रम एवं भू-प्रजातियों के बीच 51 संकरणों से उत्पन्न 322 संततियों में 72 आर-वंशक्रम उन्नत थे।
- कुल 13,464 भिन्न प्रकटन जीन (डी.ई.जी.) की खोज की गई, जिनमें से 6932 को कम-विनियमित किया गया तथा 6532 को ताप तनाव के अधीन पत्ती और जड़ के ऊतकों में अधिक-विनियमित किया गया।
- तनाव की स्थिति में बड़ी संख्या में आरओएस स्कैवेंजिंग एंजाइम्स, डब्लूआरकेवाई, एनएसी, पोषक तत्व अवशोषण में शामिल एंजाइम्स, प्रोटीन काइनेज, प्रकाश संश्लेषक एंजाइम्स और हीट शॉक प्रोटीन (एचएसपी) तथा कई प्रतिलेखन कारक (टीएफ) को सक्रिय करने वाले जीन सक्रिय हुए।
- एम. ग्रिसिया के तीन अलग-अलग विलगों के प्रति झोंका प्रतिरोध से संबद्ध 68 महत्वपूर्ण एसएनपी की पहचान की गई।

चारा बाजरा

- चारा वंशक्रम आईआईएमआर एफबी 88, आईआईएमआर एफबी 81 तथा आईआईएमआर एफबी 24 वांछनीय चारा उपज के साथ सबसे ज्यादा स्थिर जीनप्ररूप पाए गए, जबकि आईआईएमआर एफबी 51, आईआईएमआर एफबी 98 एवं आईआईएमआर एफबी 90 कुल हरे चारे उपज हेतु अच्छे पाए गए।
- जीनप्ररूप आईआईएमआर एफबी 17, आईआईएमआर एफबी 38 तथा आईआईएमआर एफबी 71 ने कच्चे प्रोटीन सामग्री एवं पात्रे कार्बनिक पदार्थ पाच्यता हेतु बेहतर प्रदर्शन दर्शाया।
- चारे उपज एवं गुणता हेतु संबद्ध महत्वपूर्ण एसएनपी-लक्षणों का पता लगाया गया; साथ ही अनेक संभावित उम्मीदवार जीनों का भी पता लगाया गया।

खरीफ ज्वार

- 164 प्रायोगिक संकरों में से चौदह मध्यम तथा दो शीघ्र परिपक्व होने वाले संकरों ने संबंधित चेकों की तुलना में 10% से ज्यादा उपज लाभ दर्ज किया; आर वंशक्रमों में जंगली ज्वार संकर (11) तथा स्थानीय भू-प्रजातियों (12) के व्युत्पन्न शामिल थे।
- प्ररोह मक्खी सहिष्णुता के लिए मूल्यांकित 296बी के 50 उत्परिवर्तियों में से चार में ~30% मृतकेंद्र दर्ज किए गए, जबकि 296बी की अपेक्षा सभी उत्परिवर्तियों में प्ररोह मक्खी घटनाएं कम थी।
- एलीट x गिनी-कौडेटम प्रजाति के व्युत्पन्न एसपीवी 3031 ने 100 बीजों के भार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की तथा अनाज की उपज भी चेक के बराबर थी।
- मूल्यांकित 42 भू-प्रजातियों में से, ब्यहट्टी स्थानीय, बालापुर स्थानीय तथा बुंदेला एक से ज्यादा विशेषताओं हेतु आशाजनक थीं।

रबी ज्वार

- 28 परीक्षण वंशावलियों में से 8-वे संकर व्युत्पन्न एस22086आरवी, एस22085आरवी, व एस22087 में 2-वे और 4-वे संकर व्युत्पन्न की तुलना में अनाज उपज, चारा उपज तथा 100-बीज वजन ज्यादा था।
- रबी ज्वार में महत्वपूर्ण विविधता उत्पन्न करने हेतु, आठ संस्थापक वंशक्रमों से वांछनीय लक्षणों को संयोजित करने के लिए एक व्यापक बहु-पैतृक संकरण कार्यनीति प्रस्तावित की गई।
- सात लोकप्रिय रबी किस्मों की पृष्ठभूमि में प्रतीप संकरण प्रजनन पद्धति का उपयोग करके तना बेधक, माहू, प्ररोह मत्कूण, किट्ट, सूखा एवं सदाहरित जैसे लक्षणों हेतु आठ बीसी$_2$ एफ$_4$ समष्टियां उत्पन्न की गई।
- रबी आधारित संस्थापक वंशक्रमों का उपयोग करके रबी अनुकूली लक्षणों के आनुवंशिक विच्छेदन हेतु तीन आरआईएल समष्टि (एफ$_7$) उत्पन्न की गई।
- रबी×खरीफ संकरण के बाद नए बी वंशक्रमों का विकास, तथा विभिन्न पीढ़ियों के अंतर्गत शीघ्र तथा बौनी संततियों का उपयोग करके आर वंशक्रमों का विकास प्रगति पर है।
- मालदंडी आधारित कोशिकाद्रव्यी नर बंध्य एम31-2ए के लिए छह स्थिर पुनर्स्थापक वंशक्रमों की पहचान की गई।

मीठी ज्वार

- खरीफ 2024 के दौरान मीठी ज्वार की उत्पादकता विशेषताओं हेतु मूल्यांकित 14 संकर किस्मों में, संकर आईआईएमआर 35ए × आईसीएसवी 17335 ने चेक सीएसएच 22एसएस की तुलना में 33% श्रेष्ठता के साथ उच्चतम जैवभार उपज दर्ज की; इसी संकर किस्म ने ताजा डंठल उपज (62%), रस उपज (58%) और इथेनॉल उपज (67%) के लिए उच्चतम श्रेष्ठता दर्ज की।
- संकर 2295ए x 11एनआरएल में तने की परिधि सबसे ज्यादा (2.13 सेमी) दर्ज की गई, जबकि पौधे की ऊंचाई के लिए संकर 356ए x आरएसएसवी 260 श्रेष्ठ (383 सेमी) था।
- संकर, टीएक्स 623 ए × एसपीवी 2593 ने रस निष्कर्षण प्रतिशत उच्चतम (52.3%) दर्ज की तथा संकर 479ए x आरएसएसवी 558 ने उच्चतम ब्रिक्स (18.1%) दर्ज किया।
- बीएमआर संकर आईआईएमआर बीएमआर6ए × एस 21-बीसी-10 ने चेक सीएसएच 54 बीएमआर की तुलना में 22% श्रेष्ठता तथा सीएसवी 43 बीएमआर की तुलना में 62% श्रेष्ठता के साथ हरा चारा उपज उच्चतम दर्ज की।

चारा ज्वार

- 257 ज्वार × सूडानग्रास व्युत्पन्नों में से चार बहु-कट चारा गुणों हेतु चेक की अपेक्षा श्रेष्ठ पाए गए।
- नए पैतृक वंशक्रमों का उपयोग करके विकसित 250 प्रयोगात्मक संकरों में से 52 ने चेक सीएसएच 24एमएफ की तुलना में बेहतर प्रदर्शन दर्शाया;

सर्वोत्तम ए तथा आर वंशक्रमों की पहचान की गई।

- मूल्यांकित 28 उच्च जैवभार मीठी ज्वार x चारा संकर व्युत्पन्नों में से, आईआईएमआर 606, आईआईएमआर 613, आईआईएमआर 651 एवं आईआईएमआर 609 में हरा चारा उपज, चेक सीएसवी 35एफ से 25% ज्यादा था।
- विविधता सुधार व संकर नर पैतृक विकासार्थ, विभिन्न संयोजनों में 37 नए ज्वार × सूडानग्रास संकरण किए गए।

ज्वार जैव-पौष्टिकीकरण

- लोकार्पित ज्वार किस्मों में आयरन की औसत मात्रा 26.1 पीपीएम, 19.4 - 39.9 पीपीएम तक थी, जबकि जिंक की औसत मात्रा 19.2, 14.0 - 37.7 पीपीएम तक थी।
- पचानवे में से कुल 7 प्रजनन वंशक्रमों में धान्य आयरन >30 पीपीएम दर्ज किया गया, जबकि धान्य जिंक 23 में >25 पीपीएम था; 25 वंशक्रमों ने सर्वश्रेष्ठ चेक सीएसवी 20 की तुलना में >10% अनाज उपज लाभ दर्ज किया।
- उन्नत प्रजनन वंशक्रमों के बहु-स्थानीक मूल्यांकन में धान्य आयरन तथा जिंक, व अनाज उपज एवं संबंधित लक्षणों के लिए महत्वपूर्ण स्थान x जीनप्ररूप (जी × ई) अंतःक्रिया देखी गई; औसतन धान्य आयरन 26 - 44 पीपीएम तक था, जबकि जिंक 18 - 36 पीपीएम तक था।

ज्वार डीयूएस परीक्षण और पौकिकृअधिसंप्रा से संबंधित गतिविधियां

- पौकिकृअधिसं प्राधिकरण के दिशा-निर्देशों के अनुसार रबी 2023-24 के दौरान संदर्भ किस्मों साथ ज्वार की तीन उम्मीदवार किस्मों में डीयूएस विवरणकों को चिह्नित करने हेतु प्रक्षेत्र परीक्षण की पुनरावृत्ति की गई, तथा खरीफ 2024 मौसम के दौरान पांच किसान किस्मों का परीक्षण किया गया।
- आलोच्य वर्ष के दौरान पौकिकृअधिसंप्रा पंजीकरण हेतु विद्यमान किस्मों के नौ नए आवेदन प्रस्तुत किए गए।

रागी

- मूल्यांकित 50 सफेद रागी जीनप्ररूप में आईसी 0065595, आईसी 0474206 तथा आईसी 0474233 3.8 ट/हे अनाज उपज के साथ आशाजनक थे, जो रंगीन चेक पीआर 202 एवं जीपीयू 67 के बराबर था।
- खरीफ 2024 के दौरान एल्युसिन कोराकाना × ई. अफ्रीकाना से प्राप्त 105 अंतर-विशिष्ट व्युत्पन्नों में सोलह को वीएल 376 तथा सीएफएमवी 2 की तुलना में 20% से ज्यादा अनाज उपज श्रेष्ठ पाया गया।
- आईआईएमआर/के24/2868, आईआईएमआर के 24/2869 तथा आईआईएमआर/के 24/2855 व्युत्पन्नक ने चेक (2.2 - 2.6 ट/हे) की तुलना में औसत अनाज उपज > 3.0 ट/हे दर्ज की।

कुटकी

- 73 उत्कृष्ट वंशक्रमों में - जेके-8 × आईपीएमआर 1075, आईआईएमआर-7092 × 7103-4 तथा आईआईएमआर-7091 × आईआईएमआर-7103-2 उन्नत व्युत्पन्न, तथा जीपीएमआर-960-2 एवं जीपीएमआर-325 जननद्रव्य चयन श्रेष्ठ थे तथा उत्तम चेक सीएलएमवी 1 की अपेक्षा 10% से ज्यादा उपज श्रेष्ठता दर्ज की गई।

आशाजनक सफेद रागी जीनप्ररूप के रागी लक्षण

कंगनी

- कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश राज्यों में उच्च उपज युक्त, मध्यम अवधि वाली किस्म एफएक्सवी 647 (सीआरएस एफएक्सएम-4) की सीएफएक्सएमवी-2 के रूप में लोकार्पण हेतु पहचान की गई है; यह किट्ट रोग प्रतिरोधी है एवं भूरा धब्बा, पर्ण झोंका एवं धारीदार अंगमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है, तथा प्ररोह मक्खी सहिष्णु है।

कंगनी किस्म सीएफक्सएमवी-2 (एफएक्सवी 647) का प्रक्षेत्र दृश्य

- दो वर्षों में मूल्यांकित 57 आशाजनक जीनप्ररूपों में बारह ने उत्तम चेक डीएचएफटी 109-3 की तुलना में अनाज उपज लाभ 10% से ज्यादा दर्ज किया; छह जीनप्ररूपों में उत्तम चेक की अपेक्षा बहुत लंबे पुष्पगुच्छ (>22 सेमी) थे।
- सूर्यनंदी के 11 में से 4 उत्परिवर्ती तथा एसआईए 3156 के 30 में से 10 उत्परिवर्ती प्रजातियों में पैतृक प्रजातियों की अपेक्षा अनाज उपज लाभ >10% का दर्ज किया गया।
- बहु-स्थानीक परीक्षण में उत्परिवर्ती आईआईएमआर एफएक्सएम-23323, 23324, 23328, 23308, 23307, 23326, 23313, 23301, 23327, 23305 तथा 23309 का पुष्पक्रम बहुत लंबा (>25 सेमी) था।

कोदो

- गामा विकिरण के परिणामस्वरूप पराग बंध्यता उत्पन्न हुई तथा मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ इसमें वृद्धि (4%-19%) हुई, परंतु टीएनएयू 86 किस्म में शूकिका (स्पाइकलेट) प्रजनन क्षमता पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा।
- 300 गीगा विकिरण से प्राप्त उत्परिवर्ती में चेक की अपेक्षा अनाज उपज (31-35 ग्राम/पौधा), चारा उपज (70-94 ग्राम/पौधा) तथा पुष्पगुच्छ की लंबाई (7.5-8.4 सेमी) ज्यादा थी।

सावां

- एक सौ पचास वंशावलियों में पहचाने गए विविध वंशक्रमों (बीएआर 1221, बीएआर 1235, बीएआर 565, बीएआर 577) का उपयोग विविधता उत्पन्न करने के लिए सीबीवाईएमवी-1 प्रजाति के साथ संकरण कार्यक्रम में किया गया।
- जांच किए गए 562 वंशक्रमों में पर्ण धब्बा व पर्ण झोंका रोग का प्रकोप 7 में <5% तथा 45 में 6-10% पाया गया।
- मूल्यांकित 136 जीनप्ररूपों में से अनाज एवं चारा की अच्छी उपज क्षमता के साथ उच्च खाद्य रेशे सामग्री (9.7% - 10.5%) युक्त चार जीनप्ररूप की पहचान की गई; बीएआर 1452, आईईसी 647, बीएआर 1446 और बीएआर 1453 में प्रोटीन सामग्री ज्यादा (13.3% - 14.1%) थी।

चेना

- दस में से चार बहुरूपी एसएसआर चिह्नक पैतृक वंशक्रमों (आईआईएमआर-पीएम-59 एवं आईआईएमआर 225) तथा उत्पन्न एफ1 में विभेद करने में सक्षम थे।
- आईआईएमआर पीएम59 × आईआईएमआर225 के संकरण से उत्पन्न 225 संततियों में से 11 का व्यष्टिक लक्षणों, जैसे शीघ्र पुष्पन, शीघ्र परिपक्वता, तथा पुष्पगुच्छ की अधिक लम्बाई के लिए चयन किया गया।
- जीडब्ल्यूएएस का उपयोग करते हुए, पौधे की ऊंचाई, ध्वज पर्ण लंबाई, ध्वज पर्ण चौड़ाई, प्रोटीन सामग्री तथा अनाज उपज जैसे विभिन्न लक्षणों के लिए 92 महत्वपूर्ण एसएनपी-लक्षण परिसंघों की पहचान की गई।

छोटी कंगनी (ब्राउन टॉप श्री अन्न)

- मूल्यांकित 31 जीनप्ररूपों में, विभिन्न सस्यवैज्ञानिक लक्षणों हेतु पर्याप्त विविधता देखी गई; दाने की उपज के साथ पुष्पगुच्छ प्रकार का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था।
- एम4 पीढ़ी में, उच्च अनाज उपज युक्त पांच चयन किए गए; चयन 8-3-1 में अनाज व चारा दोनों उपज उच्च दर्ज की गई।
- किस्म जीपीयूबीटी-6 में एचबीआर-2 की अपेक्षा वितान तापमान अवनमन ज्यादा था, जो उच्च तापमान तनाव के कारण बेहतर शुष्कन सहनशीलता दर्शाता है; जीपीयूबीटी 6 की तुलना में उच्च तापमान के कारण एचबीआर -2 में पर्णहरित सामग्री (स्पैड रीडिंग) प्रभावित हुई।

1.3. बीज विज्ञान

- कोदो में, नियंत्रण की तुलना में बोरोन (बी) छिड़काव

से प्रति पौधा बीज उपज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जबकि जिंक के अकेले या बी के साथ संयोजन में प्रयोग से महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ।

कोदों में बोरोन तथा जिंक का पर्णीय छिड़काव

- पुष्पगुच्छ निर्माण (पी.आई.), पुष्पन (एफ.एल.) तथा पी.आई. + एफ.एल. अवस्था में पर्ण अनुप्रयोग की अपेक्षा मृदा अनुप्रयोग बीज उपज बढ़ाने में आशाजनक सिद्ध हुआ।
- बीज अंकुरण, खेत में उद्भव एवं पौध ओज सूचकांक-2 लक्षणों पर नियंत्रण की तुलना में बी, जिंक तथा बी + जिंक अनुप्रयोग का काफी बेहतर प्रभाव पड़ा।
- कंगनी के संदर्भ में, लगभग 98% संचयी बीज एवं उच्चतर बीज गुणता प्राप्ति हेतु प्रसंस्करण के दौरान 1.8 मिमी गोल छिद्र वाली छलनी बीज श्रेणीकरण हेतु उपयुक्त प्रतीत हुई।
- वैश्विक प्रतिनिधित्व के 221 रागी वंशावलियों में जीडब्ल्यूएएस का उपयोग करके, विभिन्न बीज गुणता लक्षणों हेतु 1236 महत्वपूर्ण एसएनपी-लक्षण परिसंघों की पहचान की गई।
- थायामोमेथोक्साम 30% एफएस @ 10 मिली/किग्रा + मेटालैक्सिल 35% डब्लूएस @ 6 ग्राम/किग्रा बीज के उपचार से बाजरा तथा ज्वार में सभी प्रमुख पीड़कों का प्रकोप अपेक्षाकृत कम दर्ज किया गया, तत्पश्चात बाजरा के मामले में अर्का माइक्रोबियल कंसोर्टिया @ 10 ग्राम/किग्रा + एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 2.5% @ 4 ग्राम/किग्रा बीज तथा ज्वार के मामले में अर्का माइक्रोबियल कंसोर्टिया @ 10 ग्राम/किग्रा + टेबुकोनाज़ोल 2% डीएस @ 6 ग्राम/किग्रा बीज से उपचार किया गया।
- थायामोमेथोक्साम 30% एफएस @ 10 मिली/किग्रा + एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 2.5% @ 4 ग्राम/किग्रा बीजोपचार से ज्वार व बाजरा दोनों में अनाज उपज उच्चतम दर्ज की गई।
- रागी के संबंध में, टेबुकोनाजोल 2% डीएस @ 6 ग्राम/किग्रा बीज + ट्राइसाइक्लाजोल 75 डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम/किग्रा से बीजोपचार करने पर प्रमुख पीड़कों का प्रकोप काफी कम दर्ज किया गया।

2. फसल सुधार में मूलभूत तथा कार्यनीतिक विज्ञान अनुप्रयोग

2.1 पूर्व प्रजनन

- दो वर्षों तक 30 जंगली ज्वार वंशावलियों की प्ररोह मक्खी के प्रति जांच के फलस्वरूप, पुनरावृत्ति योग्य सहनशील स्तर की पहचान नहीं हो सकी।
- इक्रिसेट जीन संग्रह से जंगली ज्वार की 18 नई वंशावलियों का एक समूह लिया गया तथा प्ररोह मक्खी के प्रति जांच हेतु उनका गुणन किया गया।

2.2 आणविक प्रजनन

- पैकबायो सीक्वेल II प्लेटफॉर्म का उपयोग करके लॉन्ग रीड अनुक्रमण के माध्यम से कोदो किस्म आरके 390-25 का डी नोवो समग्र जीनोम अनुक्रमण किया गया; जीनोम का लगभग 0.9 जीबी एकत्र किया गया ।
- अडतालीस रागी जीनप्ररूप समूह में विधिमान्य 50 जीनोमिक एसएसआर चिह्नकों में से 34 बहुरूपी थे, जिनका पीआईसी मान 0.56 - 0.85 के बीच था।
- 0.5 से ज्यादा पीआईसी मान वाले 80 एसएसआर चिह्नकों का उपयोग करने वाले पैतृक वंशक्रमों के बीच चिह्नक बहुरूपता गुणांक (सीएमपी) तथा संबंधित एफ1 संकरों में अनाज उपज संकरओज के बीच सहसंबंध से अनाज उपज (आर = 0.43*) एवं बेहतर पैतृक संकरओज (आर = 0.51*) के लिए मध्य-जनक संकरओज के साथ सीएमपी का एक महत्वपूर्ण, मध्यम और सकारात्मक सहसंबंध का पता चला है, जो अनाज उपज संकरओज की भविष्यवाणी में इन चिह्नकों की क्षमता को दर्शाता है।

2.3 जैव प्रौद्योगिकी

- ज्वार नर बंध्य वंशक्रम 296ए के 4500 एग्रोबैक्टीरियम संक्रमित प्ररोह शीर्षों से, एसईआरके जीनों को लक्ष्य करके सीआरआईएसआर-सीएएस प्रौद्योगिकी के माध्यम से विकसित कुल 140 फॉस्फिनोथ्रीसिन

प्रतिरोधी प्यूटेटिव जीनोम संपादित वंशक्रमों को पुनर्जीवित किया गया।

- इनमें से 41 वंशक्रम एसबीएसईआरके जीन हेतु, 46 वंशक्रम एसबीएसईआरके 2 जीन के लिए एवं 53 वंशक्रम एसबीएसईआरके 3 जीन हेतु विकसित किए गए।

- ज्वार जीनप्ररूप सी43 के 900 प्ररोह शीर्ष कर्तोतक (एक्सप्लांटों) में से कुल 79 फॉस्फिनोथ्रीसिन प्रतिरोधी जीनोम संपादित वंशक्रम पुनर्जीवित किए गए; बाजरे के संदर्भ में जीन संपादन का उद्देश्य लाइपेस जीन को लक्ष्य बनाकर बासीपन को नियंत्रित करना है।

श्री अन्न दानों की मेटाबोलाइट प्रोफाइलिंग

- एलसी-एमएस/एमएस आधारित अलक्षित मेटाबोलोमिश्रण पद्धति का उपयोग करके सभी श्री अन्न बीजों की मेटाबोलाइट प्रोफाइलिंग की गई; विभिन्न वर्गों से संबंधित लगभग 1900 मेटाबोलाइट्स की पहचान की गई है।

- ज्वार x मक्का संकरण से उत्पन्न उच्च खीलकरण (पॉपिंग) वंशक्रम तथा एक अन्य उच्च खीलकरण स्थानीय किस्म के बीच संकरण से चयनित संततियों में एमाइलोज एवं एमाइलोपेक्टिन सामग्री का अनुमान लगाया गया; 13 वंशक्रमों में एमाइलोपेक्टिन > 70% था, जबकि कुछ वंशक्रमों में यह 50% से भी कम था।

2.4. फसल कार्यिकी

- रबी ज्वार जीनप्ररूपों में अंत्य सूखा तनाव के अंतर्गत दाना भराव गति में तेजी देखी गई, परिणामस्वरूप स्टार्च संचयन, दाने के वजन तथा गुणता में कमी आई।

- इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण की जांच, अंत्य सूखा ने तनाव के अंतर्गत रबी ज्वार अनाज के भ्रूणपोष आवरण के अंदर स्टार्च कणों का विघटन दर्शाया।

- जड़ विशेषताओं, कार्यिकीय मापदंडों एवं उपज घटकों के मध्य मजबूत सहसंबंध, सूखा सहिष्णुता में जड़ संरचना की महत्वपूर्ण भूमिका दर्शाता है।

- कुल 14 ज्वार जीनप्ररूप (2 संकर (सीएसएच-25, सीएसएच-16); 2 खरीफ किस्में (सीएसवी 39, सीएसवी 27); 4 रबी किस्में (एम35-1, सीएसवी 29, एसपीवी 2217, एसपीवी 2758); 1 आर वंशक्रम (एनआर 459-15) और 4 ए और बी वंशक्रम (सीटीडी: 151ए, 151बी, 2219ए, 2219बी)) को वितान तापमान अवनमन (सीटीडी) कमी के आधार पर उच्च तापमान तनाव सहिष्णु के रूप में पहचाना गया।

2.5. जैव रसायन एवं प्रकार्यात्मक खाद्य पदार्थ

- रागी के प्रोटीन गुणता निर्धारण हेतु श्री अन्न की एमिनो एसिड प्रोफाइलिंग को मानकीकृत किया गया।

- 32 पीपीएम आयरन वाले जीनप्ररूप के लिए रागी में आयरन की जैव उपलब्धता 84.4% थी तथा 15.4 पीपीएम आयरन वाले जीनप्ररूप के लिए 96.4% थी। अम्लीय परिस्थितियों में जिंक तथा कैल्शियम प्रायोगिक रूप से घोल में पूरी तरह से छोड़ दिए गए थे।

- बाजरे के आटे में भंडारण के 7वें दिन अल्कोहालिक अम्लता से बासीपन हेतु वंशक्रमों का बेहतर विभेदन पाया गया। 97-आर वंशक्रमों एवं 33-बी वंशक्रमों की अल्कोहालिक अम्लता का आकलन 0.07 - 0.34 तक परिवर्तनशील था, जिसका औसत 0.15 ग्राम सल्फ्यूरिक एसिड/100 ग्राम प्रतिचयन था।

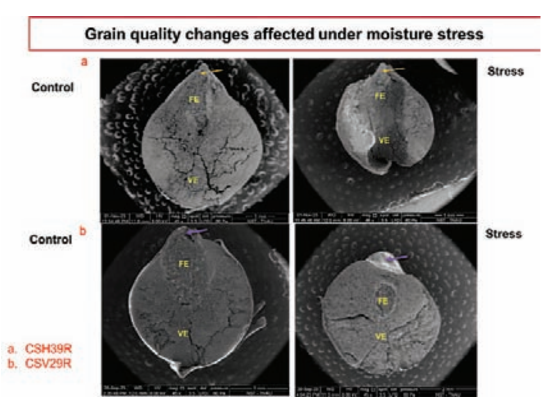

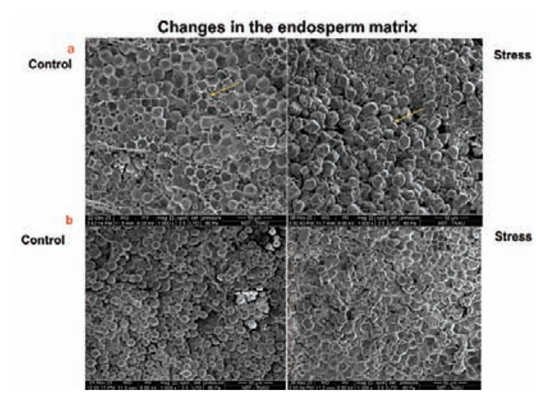

सिंचित तथा रोपित सूखा परिस्थितियों के अंतर्गत दानों में संरचनात्मक परिवर्तन

- 46 ज्वार भू-प्रजातियों का अनाज पोषण संरचना के लिए विश्लेषण किया गया, जिसमें प्रोटीन, वसा, राख व नमी की मात्रा में महत्वपूर्ण परिवर्तनशीलता का पता चला। बारह भू-प्रजातियों में उच्च प्रोटीन सामग्री >12% देखी गई।
- दो भू-प्रजातियों, केएलटी 64 तथा केएलटी 66 में जिंक की मात्रा उच्च > 40 पीपीएम दर्ज की गई।
- ज्वार भू-प्रजातियों में टैनिन की मात्रा व्यापक रूप से भिन्न 0.181% सीई (केएलटी 66) - 1.598% सीई (केएलटी 76) पाई गई, जो वैनिलीन-एचसीएल विधि द्वारा निर्धारित थी।
  - ज्वार की भू-प्रजातियों में एमाइलोज की मात्रा में काफी भिन्नता थी, जिसका मान 7.03% (केएलटी 58) - 21.39% (केएलटी 65) तक था।
  - माल्टिंग से सावां किस्मों डीएचबीएम 93-3 तथा वीएल-172 में प्रोटीन की पाच्य क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। माल्टिंग स्थितियों को अनुकूलित करने से उपज, माल्टिंग क्षति एवं संवेदी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए प्रोटीन की पाच्य क्षमता को और बढ़ाया जा सकता है।

3. कीटों एवं रोगों के प्रति परपोषी पौधे का प्रतिरोध

3.1 कीट प्रबंधन

श्री अन्न

- परीक्षण में, फाल सैनिक कीट (फासैकी), स्पोडोप्टेरा फ्रूजीपरडा ने नौ श्री अन्न पर अण्डजनन की वरीयता हेतु ज्वार, तत्पश्चात सावां को प्राथमिकता दी।
- खरीफ 2024 के दौरान श्री अन्न में फॉल सैनिक कीट पर अंडा-लार्वा परजीवी, चेलोनस एसपी की परजीवी क्षमता का अध्ययन किया गया। प्रक्षेत्र के नमूने में लिए गए फॉल सैनिक कीट अंडे के द्रव्यमानों पर प्रतिशत परजीवीकरण के संदर्भ में जैव नियंत्रण क्षमता के अनुमान में पाया कि ज्वार (55.0) चेना (52.4), कंगनी (50.6) में प्रतिशत परजीवीकरण ज्यादा था।

ज्वार

- नौ ज्वार जीनप्ररूप पर फासैकी लार्वा के पोषण सूचकांक का अध्ययन किया गया। सीएसवी19एसएस पर पाले गए लार्वा में खपत सूचकांक (खसू) तथा अनुमानित पाचन क्षमता (अपाक्ष) का मान उच्चतम दर्ज किया गया। खसू का सबसे कम मान सीएसवी 33एमएफ पर था।
- खरीफ 2023 के दौरान, ज्वार में फासैकी से होने वाली पर्ण क्षति मान 1.0-3.5 दर्ज किया गया, जिसमें महाराष्ट्र (3.0) व मध्य प्रदेश (3.5) में सबसे ज्यादा क्षति हुई। रबी 2023-24 के दौरान, फासैकी क्षति 3.0-3.5 पैमाने पर हुई, जिसमें सबसे ज्यादा क्षति तेलंगाना, कर्नाटक (3.5), तत्पश्चात महाराष्ट्र (3.0) में दर्ज की गई।
- फासैकी वयस्क शलभ की संख्या 2023 के 35वें और 47वें, 2024 के 1ले व 4थे मानक मौसम विज्ञान सप्ताह के दौरान उच्चतम पाई गई; यह कीट फसल की वानस्पतिक अवस्थाओं अर्थात पुष्पगुच्छ आरंभन को वरियता देता है।
- प्राकृतिक संक्रमण के अंतर्गत फासैकी के प्रति लगभग 30 ज्वार किस्मों व जननद्रव्य की जांच की गई। हाथी कुंटा, आईएस 12697, सी 43, सीएसवी 21 एफ, आईएस 12735 और फुले वसुदा प्रविष्टियां अत्यधिक संवेदनशील पाई गईं। रामपुर लोकल, सीएसवी 39, आईएस 4581 प्रविष्टियां 10% से कम वलय क्षति के साथ एस. फ्रूजीपरडा के प्रति सहनशील थीं।

3

चेना कंगनी ज्वार सावां

श्री अन्न में फाल सैनिक कीट का अंडजनन

- रबी 2023-24 के दौरान खेत में फासैकी के जैविक प्रबंधन का मूल्यांकन किया गया। उपचार में, साप्ताहिक अंतराल पर दो बार ट्राइकोग्रामा चिलोनिस/एकड़ का एक कार्ड छोड़ना, तत्पश्चात उद्भव के 20, 35 दिन बाद एम. एनीसोप्लिए (एनबीएआईआर एमए 35) 0.5% के छिड़काव ने संस्तुत पैकेज (36%) व नियंत्रण (55%) की तुलना में फासैकी के कारण होने वाली वलय क्षति (11.7%) को काफी सीमा तक कम किया। अनाज व चारा उपज में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।
- सोलापुर में रबी, 2023-24 के दौरान एक प्रक्षेत्र जांच परीक्षण में, सीएसवी 216 आर, सीएसवी 14, फुले रेवती, फुले अनुराधा, डीएसवी 4, कटार खटाव और एम 35-1 को प्ररोह मक्खी के प्रति; तना बेधक के प्रति आईएस 2205, वाई 75, एम 35-1 और आईएस 18551 जैसे जीनप्ररूप तथा प्ररोह मत्कुण के प्रति वाई 75, सीएसवी 26, सीएसवी 29आर को आशाजनक पाया गया।
- रासायनिक, जैव गहन तथा कृषक अभ्यास मॉड्यूल का लाभ-लागत (बीसी) अनुपात क्रमशः 1:1.80, 1:1.66 एवं 1:1.20 पाया गया।
- तना बेधक, प्ररोह मत्कुण तथा उनके प्राकृतिक शत्रुओं के प्रति तीव्र एवं प्रक्षेत्र विषाक्तता अध्ययन किए गए। क्लोरेंट्रानिलिप्रोले (एलसी$_{50}$ = 1.03 पीपीएम) और स्पाइनेटोरम को चिलो पार्टेलस के तीसरे इंस्टार लार्वा के प्रति बहुत प्रभावी पाया गया।सेसामिया इनफेरेंस के प्रति कीटनाशक, क्लोरएंट्रानिलिप्रोल, इमामेक्टिन बेंजोएट तथा स्पिनोसैड को प्रभावी पाया गया। शूट डिप जैव आमापन अध्ययनों में प्ररोह मत्कुण के प्रति ब्रोफ्लैनिलाइड को प्रभावी पाया गया। चयनात्मकता अनुपात के आधार पर इमामेक्टिन, फ्लुबेंडियामाइड, क्लोरएंट्रानिलिप्रोल और स्पिनोसैड जैसे कीटनाशक कोटेसिया के लिए सुरक्षित पाए गए।
- प्रक्षेत्र उपयोग पर्यावरणीय प्रभाव भागफल के आधार पर, फिप्रोनिल, थियाक्लोप्रिड और पाइमेट्रोजीन जैसे कीटनाशक उत्पादक/किसान के लिए खतरा उतन्न करते हुए पाए गए। पाइमेट्रोजीन व थियाक्लोप्रिड जैसे कीटनाशक विषैले होते हैं एवं उपभोक्ता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं।

श्री अन्न भंडारित अनाज पीडक प्रबंधन

- प्रत्येक छिलका रहित लघु श्री अन्न जैसे कंगनी, छोटी कंगनी, कुटकी, कोदो, सावां एवं चेना की पांच अलग-अलग किस्मों में सिटोफिलस ओराइज़े के प्रति जांच अध्ययन किए गए। साप्ताहिक अंतराल पर अनाज वजन, कीटों की संख्या, मृत कीटों के वजन संबंधी आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं। चेना (पीएम-एचपी-59 और पीएम-एचपी-186) और कोदो (जेके 106) में संतति उद्भव ज्यादा था, जबकि छोटी कंगनी एवं कुटकी में कोई संतति उद्भव नहीं देखा गया।
- छिलका रहित कंगनी भंडारण पर पैकेजिंग सामग्री के प्रभाव के मूल्यांकन हेतु किए गए अध्ययन से पता चला कि एमईटी पीईटी या एमईटी पीईटी + निर्वात पैकिंग, भंडारण का सबसे कुशल तरीका है। बोरियों में रखे गए श्री अन्न में कीटों का प्रकोप (सिटोफिलस ओराइज़े, ट्रिबोलियम कैस्टेनम और कॉर्सिरा सेफेलोनिका) ज्यादा पाया गया।

3.2 रोग प्रबंधन

श्री अन्न

- कंगनी किट्ट हेतु पांच प्रतिरोधी दाताओं (आईसी0479406, ISe1177, आईसी0479317, आईसी0479569 तथा आईसी0308976) की पहचान की गई। इन प्रजातियों में वर्तमान राष्ट्रीय चेक आईएसई1177 की तुलना में बेहतर प्रतिरोध है, और भारत में कंगनी वर्धक स्थानों पर परीक्षण की गई 179 प्रजातियों में प्रतिरोध और स्थिरता के मामले में शीर्ष प्रदर्शनकर्ता हैं।
- कंगनी में किट्ट प्रतिरोधकता जांच हेतु बेंगलुरू को सर्वोत्तम स्थान के रूप में चिह्नित किया गया।
- एक जीवाणु संघ (एसईबी15 + एफएमईबी-18 + केएमईबी-12 + एलएमईबी-23) की पहचान की गई, जिसने रागी, कोदो तथा कुटकी में पट्टीदार आच्छाद अंगमारी के प्रबंधन के लिए प्रभावकता दिर्शायी।
- एंडोफाइट्स से विलग बायोमॉलीक्यूल, बेन्ज़िल मैंडलेट ने श्री अन्न में एम. फेसियोलिना तथा आर. सोलानी के पीआर प्रोटीनों के सक्रिय स्थल में मौजूद अमीनो अम्ल के साथ उच्च समानता प्रदर्शित की, तथा इसमें कवकनाशी प्रभावकारिता हो सकती है।
- रबी ज्वार में एफिड वेक्टर संख्या के सापेक्ष लाल पट्टी विषाणु की प्रगति के अध्ययन में पाया गया कि मध्य दिसंबर से शुरू होकर मध्य फरवरी तक लाल पट्टी विषाणु लगातार बढ़ते रहे, जबकि वेक्टर संख्या जनवरी

के दूसरे पखवाड़े के दौरान अपने चरम पर पहुंच गई।

- ज्वार व कंगनी में विभिन्न विषाणु संक्रमण का पता लगाने के लिए अध्ययन शुरू किया गया। आगे के अध्ययन हेतु अगली पीढ़ी अनुक्रमण (एनजीएस) किया गया।

4. उच्च श्री अन्न उत्पादकता हेतु संसाधन प्रबंधन

- ज्वार व अन्य लघु श्री अन्न के साथ बाजरे की अंतरफसल से इसकी अनाज उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ, जिसमें सबसे ज्यादा वृद्धि (92.5%) बाजरा और ज्वार की अंतरफसल में देखी गई।
- ज्वार, बाजरा व रागी फसलों के लिए पर्ण वर्ण चार्ट (एलसीसी) मान विकसित किए गए तथा एलसीसी तैयार करने के लिए नाइट्रोजन मापदंडों को प्रस्तुत किया गया।
- पोटेशियम के प्रयोग से मध्यम व गंभीर तनाव की स्थितियों में रागी की वृद्धि, उपज विशेषताओं तथा अनाज उपज में उल्लेखनीय सुधार हुआ। 60 किग्रा के/हेक्टेयर के प्रयोग से उपज में अधिकतम सुधार दर्ज किया गया, गंभीर तनाव की स्थितियों में अनाज की उपज में 17% की वृद्धि हुई।

5. विस्तार अनुसंधान, अर्थशास्त्र तथा मूल्यवर्धन

5.1 विस्तार अनुसंधान

- विभिन्न स्तरों पर उपज अंतर का निर्धारण, सूरत एवं गुजरात के आस-पास के जिलों के किसानों से सीधे ज्वार की पैदावार के आंकड़ों और खरीफ ज्वार पर द्वितीयक स्रोतों से पिछले चार वर्षों (2019-2023) के आंकड़ों से पता चला कि प्रौद्योगिकी अंतर 5.35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा विस्तार अंतर 8.50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर था। उच्च प्रौद्योगिकी अंतर का कारण स्थानीय जलवायु में अंतर के साथ-साथ मृदा उर्वरता की स्थिति में भिन्नता तथा किसानों द्वारा प्रबंधन प्रथाओं को अपनाना था।
- मध्य तेलंगाना के संगारेड्डी जिले के न्यालकल, झारासंगम और रायकोडे मंडलों के नौ गांवों में फसल मॉड्यूल के अंतर्गत बारह प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप किए गए। चार प्रक्षेत्र दिवस, प्रक्षेत्र दौरे एवं 150 किसानों को नियमित रूप से व्हाट्सएप समूह "श्री अन्न किसान (तेलुगु)" के माध्यम से सलाह दी गई, जिसमें किसानों की शंकाओं के समाधान हेतु भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिक व विशेषज्ञ शामिल थे।

बाजरे के खेती, उत्पदान, उत्पदाकता तथा मूल्यवर्धन पर प्रक्षेत्र दिवस

लोकसंपर्क तथा किउसं गतिविधियां

- श्री अन्न की खेती को बढ़ावा देने के लिए, भाश्रीअनुसं ने लघु कृषक कृषि व्यापार संघ (एसएफएसी) श्री अन्न तथा एसएफएसी तिलहन परियोजनाओं के हिस्से के रूप में 10 से ज्यादा राज्यों में किसानों, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके), किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) तथा विभिन्न राज्य सरकार के विभागों को 10,696 किलोग्राम निःशुल्क श्री अन्न बीज वितरित किए।
- भाश्रीअनुसं ने आईसीआईसीआई, सेल्को जैसी संस्थाओं के सहयोग से तथा पीएमएफएमई जैसी कुछ सरकारी योजनाओं के माध्यम से एफपीओ स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर तथा प्रसंस्करण सुविधाएं स्थापित की हैं। किसानों, एफपीओ कर्मचारियों, छात्रों, उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य श्री अन्न आधारित उद्यमशीलता के अवसरों का पता लगाना, नव विकसित श्री अन्न किस्में प्रस्तुत करना एवं प्रतिभागियों को मूल्यवर्धित प्रौद्योगिकियों से परिचित कराना था।
- क्लस्टर-आधारित व्यवसाय संगठन (सीबीबीओ) के रूप में, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन विपणन में किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के लिए बाजार संपर्क को सुकर बनाया।

5.2 अर्थशास्त्र

- वर्ष 1966 - 2021 के दौरान बाजरा के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र की दशकीय वृद्धि एवं अस्थिरता का विश्लेषण किया गया। बाजरा के उत्पादन की राज्यवार दशकीय वृद्धि दर से पता चलता है कि कुल मिलाकर सभी दशकों के दौरान, देश में दूसरे दशक 1976-86 को छोड़कर वृद्धि देखी गई। रागी के मामले में क्षेत्र व उत्पादन में नकारात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई, यद्यपि, पैदावार में वृद्धि देखी गई।
- 1991-92 से 2020-21 तक के आंकड़ों का उपयोग करके राजस्थान व महाराष्ट्र में बाजरे एवं कर्नाटक में रागी की कुल कारक उत्पादकता (टीएफपी) का पता लगाया गया। सभी राज्यों में टीएफपी में वृद्धि दर्ज की गई, जो दर्शाता है कि अनुसंधान एवं विस्तार योगदान सकारात्मक टीएफपी वृद्धि का कारण थे।

5.3 मूल्यवर्धन एवं व्यावसायीकरण

- इंस्टेंट रागी मुद्दे मिश्रण, रागी के स्वास्थ्य लाभों के साथ-साथ उपयोग हेतु तैयार खाद्य उत्पाद का संयोजन है। पके हुए रागी के आटे का उपयोग करके पोषण, सुविधा व स्वाद के संतुलित संयोजन युक्त 12 सूत्रन विकसित किए गए, जो इसे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के लिए आदर्श बनाता है। विभिन्न अनुपातों में कंगनी तथा चना दाल का उपयोग करके इंस्टेंट कंगनी बिसिबेलेबाथ मिश्रण विकसित किया गया, जो सुविधा, बेहतर पोषण मूल्य व स्वस्थ आहार विकल्प प्रदान करने हेतु इंस्टेंट खाद्य उत्पादों में श्री अन्न एवं फलियों के संयोजन क्षमता पर प्रकाश डालता है।
- नौ श्री अन्न की प्रति-ऑक्सिकारक (एंटीऑक्सीडेंट) गतिविधि का मूल्यांकन किया गया। प्रति-ऑक्सिकारक गतिविधि रागी में ज्यादा पाई गई, तत्पश्चात छोटी कंगनी, बाजरा, ज्वार, कोदो, सावां, कुटकी, कंगनी तथा चेना का स्थान रहा।
- श्री अन्न आधारित दो उत्पाद विकसित किए गए, एक कैल्शियम समृद्ध रागी लड्डू, तथा दूसरा आयरन व जिंक समृद्ध बाजरा आधारित स्वास्थ्य मिश्रण।
- सामान्य विधि का उपयोग करके 1 किलोग्राम अनाज को रात भर भिगोकर देशी स्टार्च के रूप में ज्वार व रागी स्टार्च निकाला गया। सार्टोरियस नमी विश्लेषक का उपयोग करके प्रारंभिक ज्वार व रागी अनाज का एमसी 4.68%डब्ल्यूबी तथा 4.59% डब्ल्यूबी पाया गया।

3 प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

विभिन्न संस्थानों द्वारा आयोजित प्रत्यक्ष एवं ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाश्रीअनुसं के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के वैज्ञानिकों एवं अन्य कार्मिकों ने जनवरी-दिसंबर, 2024 के दौरान विभिन्न संस्थानों द्वारा आयोजित 10 प्रत्यक्ष एवं 7 ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

भाश्रीअनुसं के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/लघु पाठ्यक्रम

श्री अन्न में अनुभव साझा करने एवं क्षमता निर्माण पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के द्वारा भारत-अफ्रीका विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत 8-11 जनवरी, 2024 के दौरान ”अफ्रीका में जलवायु-लचीली फसल के रूप में श्री अन्न की खेती, उपयोग और प्रसंस्करण का विस्तार करने तथा कृषि जैव विविधता, संतुलित पोषण, श्री अन्न मूल्य शृंखला, मूल्य-वर्धन एवं उद्यमिता को मजबूत करने के लिए अनुभव साझा करने तथा क्षमता निर्माण” पर एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। डॉ. राघवेंद्र कवली, इंडो-जर्मन बीज क्षेत्र सहयोग परियोजना के राष्ट्रीय समन्वयक ने उद्घाटन सत्र में सहभागियों का स्वागत किया। की डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने अफ्रीका में श्री अन्न के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री एक्केहार्ड श्रोएडर, जर्मन परियोजना दल प्रमुख, इंडो-जर्मन कोऑपरेशन ऑन सीड सेक्टर डेवलपमेंट, जर्मनी के द्वारा कार्यक्रम का उद्देश्य प्रस्तुत किया गया। डॉ. विलास ए टोणपि, भूतपूर्व निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने श्री अन्न अनुसंधान व विकास के संबंध में भारत के द्वारा अफ्रीका को प्रदान की जा सकने वाली सहायता के बारे में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न अफ्रीकी देशों के शोधकर्ता व नीति निर्माता ने भाग लिया।

एचआरएम प्रशिक्षण कार्यक्रम

एसईआरबी-डीएसटी परियोजना की वैज्ञानिक सामाजिक दायित्व गतिविधि के अंतर्गत भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 1 फरवरी, 2024 को “शोध छात्रों हेतु अनुसंधान सुविधा” नामक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य श्री अन्न अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान कर्मियों के कौशल और ज्ञान को बढ़ावा देना था। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक राज्यों के कुल 41 पीएचडी, स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों ने भाग लिया। उन्होंने भाश्रीअनुसं में उपलब्ध नई सुवाधाओं तथा नवीन अनुसंधान तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु बीज विज्ञान और प्रौद्योगिकी, जैव रसायन, जैव प्रौद्योगिकी, श्री अन्न प्रसंस्करण और मूल्य-वर्धन पर भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया।

“श्री अन्न, स्थानीय फसलों की खेती, उत्पादन एवं उनकी नवीन प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने भाकृअनुप-अभासअनुप-बाजरा के एससीएसपी के अंतर्गत 16 मार्च 2024 को आंध्र प्रदेश में गुंटूर जिले के रामन्नापलेम गांव में “श्री अन्न, स्थानीय फसलों की खेती, उत्पादन और उनकी नवीन प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां” पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में प्रेस और मीडिया के अलावा, रामन्नापलेम, इतिकामपाडु, मर्रिपुडी, पूंडला, गोपापुरम और बोडिपलेम के किसानों, कृषि महाविद्यालय, कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज, खाद्य और विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, फार्मेसी कॉलेज, बापटला के छात्र; भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के वैज्ञानिक; आएनजीरंकृविवि के वैज्ञानिक; डीडीएम, नाबार्ड, गुंटूर, कृषि विभाग, आ.प्र. के कृषि अधिकारी; बापटला एग्रो फूड प्रोसेसिंग क्लस्टर के कारीगर; एसएआरआईडी (एनजीओ) के सदस्यों सहित लगभग 700 लोगों ने भाग लिया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक,

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं और उन्होंने श्री अन्न अनुसंधान गतिविधियों और उनके पोषण संबंधी लाभ पर सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने किसानों को कृष्णा गोदावरी बेसिन में बिना जुताई धान पड़ती भूमि में कम लागत के साथ ज्यादा लाभदायक श्री अन्न की खेती करने की सलाह भी दी। डॉ. बी सुब्बारायुडु, प्रधान वैज्ञानिक ने धान पड़ती भूमि में श्री अन्न की खेती के लाभ और तेनाली प्रभाग के ज्वार किसानों की सफल गाथाओं के बारे में बताया।

डॉ. ए श्रीनिवास ने वर्तमान परिदृश्य में किसानों, उद्यमियों और अन्य लोगों पर भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं एससीएसपी कार्यक्रमों के प्रभाव के बारे में बताया। श्री टी ई जी के मूर्ति, प्रधानाचार्य, बापटला फार्मेसी कॉलेज, बापटला ने वर्तमान परिदृश्य में फार्मास्यूटिकल्स के विकास में श्री अन्न की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. विजय भिनंदन, विस्तार निदेशक, आएनजीरंकृविवि, लैम, गुंटूर ने श्री अन्न और कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने में कृषि आधारित अनुसंधान संस्थानों की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. पी संजना रेड्डी ने धान पड़ती भूमि में श्री अन्न की खेती हेतु किसानों के लिए आवश्यक उन्नत किस्मों और उनकी फसल प्रबंधन प्रथाओं के बारे में बताया। डॉ. अरुणा रेड्डी ने सामान्य रूप से ज्वार संकरों और विशेष रूप से बौनी ऊंचाई वाले ज्वार संकरों के कई गुना लाभ के बारे में ज्वार उत्पादकों के साथ अपने अनुभव साझा किए। डॉ. आर वेंकटेश्वरलु ने वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को पूरा करते श्री अन्न के पोषण मूल्य के बारे में बताया। डॉ.डी सेवानायक ने आं.प्र. के पश्चिमी कृष्णा बेसिन जिलों में शून्य जुताई परिस्थितियों में जलवायु लचीली फसलों के महत्व पर व्याख्यान दिया। श्री जी सरत बाबू, डीडीएम, नाबार्ड, गुंटूर ने अनुसूचित जाति के किसानों को नाबार्ड ऋण संबद्ध योजनाओं के लाभ के बारे में बताया। डॉ. एल माधवी लता, प्रधान वैज्ञानिक, एआरएस, पेरुमल्लापल्ले, आएनजीरंकृविवि और डॉ. टी एस एस के पात्रो, प्रधान वैज्ञानिक, एआरएस, विजयनगरम, आएनजीरंकृविवि ने आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों में श्री अन्न की खेती, उत्पादन और उनके उपयोग पर प्रकाश डाला। डॉ. वेस्ले, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज, बापटला ने श्री अन्न और अन्य स्थानीय फसलों में किसानों हेतु आवश्यक मूल्य वर्धित प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला। सुश्री माधवी और श्री एल वी रमणा के द्वारा प्राकृतिक खेती के लाभ और वर्तमान परिदृश्य में लोगों और जंतुओं के स्वास्थ्य और मितव्ययीता में उनकी भूमिका बताई गई। श्री जी श्रीधर, प्रगतिशील किसान ने सभी किसानों और प्रतिभागियों को लागत प्रभावी कृषि विधियों के संबंध में प्रेरित किया। किसानों और अन्य हितधारकों के समक्ष भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और गृह विज्ञान महाविद्यालय, लाम, गुंटूर, आएनजीरंकृविवि के मूल्य वर्धित श्री अन्न खाद्य उत्पाद प्रदर्शित किए गए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान निःशुल्क स्वास्थ्य अभियान का आयोजन किया गया।

जैविक विज्ञान हेतु उन्नत माइक्रोस्कोपी पर कार्यशाला

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में 11-12 जुलाई 2024 को प्रत्यक्ष व ऑनलाइन रूप में जैविक विज्ञान हेतु उन्नत माइक्रोस्कोपी पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में देशभर के वैज्ञानिकों, शोधार्थियों, छात्रों सहित अस्सी प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्नत माइक्रोस्कोपी विशेषज्ञों तथा अनुप्रयोग विशेषज्ञों ने माइक्रोस्कोपी के मूल सिद्धांतों : माइक्रोस्कोपी के मूल, डिजिटल कक्षा अवधारणा, प्लांट कैरियोटाइपिंग, अनुप्रयोग हेतु उपयुक्त माइक्रोस्कोप का चयन, फ्लोरोसेंस, कॉन्फोकल, लाइट-शीट, लाइव सेल इमेजिंग, सुपर रेजोल्यूशन, 3डी माइक्रोस्कोपी इमेजिंग, इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी तथा एक्स-रे माइक्रोस्कोपी में उन्नत माइक्रोस्कोपी तकनीक पर व्यावहारिक सत्र आयोजित किए।

बिहार के किसानों के हेतु श्री अन्न उत्पादन एवं प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा), गया, बिहार के वित्त पोषण से बिहार के 26 किसानों हेतु 04-06 सितंबर, 2024 के दौरान श्री अन्न उत्पादन, प्रसंस्करण तथा मूल्य-वर्धन प्रौद्योगिकियां नामक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक ने 04 सितंबर, 2024 को उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न उत्पादन, बिहार हेतु उपयुक्त किस्मों, किसान उत्पादक संगठनों का गठन के संबध में जानकारी प्रदान की गई तथा प्रशिक्षार्थियों को निःशुल्क मृदा स्वास्थ्य परीक्षण किट भी दिए गए।

ओडिशा मिलेट मिशन के अंतर्गत "भाश्रीअनुसं के हस्तक्षेप द्वारा ओडिशा राज्य में गैर-रागी श्री अन्न के लोकप्रियन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाश्रीअनुसं के ओडिशा मिलेट मिशन के प्रधान अन्वेषकों - डॉ. संगप्पा और श्री के श्रीनिवास बाबू ने ओडिशा सरकार तथा एसएसीएएल गैर-सरकारी संगठन के सहयोग से 6-11 नवंबर 2024 के दौरान "भाश्रीअनुसं के हस्तक्षेप द्वारा ओडिशा राज्य में गैर-रागी श्री अन्न के लोकप्रियन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा आधार व्याख्यान दिया। उन्होंने खाद्य सुरक्षा बढ़ाने, पोषण में सुधार एवं किसानों की आय बढ़ाने हेतु श्री अन्न की खेती के विस्तार के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री के श्रीनिवास बाबू ने ओडिशा में गैर-रागी श्री अन्न की खेती और प्रसंस्करण को बढ़ावा देने में भाश्रीअनुसं की पहलों को रेखांकित किया। डॉ. संगप्पा ने आश्वासन दिया कि भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं आर्थिक स्थिरता को मजबूत करने के लिए ओडिशा मिलेट मिशन के माध्यम से उच्च गुणता युक्त बीज, तकनीकी प्रशिक्षण एवं बाजार संपर्क की सुविधा प्रदान करेगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न की खेती, रोग प्रबंधन, कृषि पद्धतियों तथा प्राथमिक प्रसंस्करण इकाइयों के संचालन के व्यावहारिक प्रशिक्षण पर प्रमुख सत्र शामिल थे। प्रतिभागियों ने न्यूट्रीहब और प्रसंस्करण इकाई सुविधाओं का भी दौरा किया तथा श्री अन्न मूल्यवर्धन के बारे में जानकारी प्राप्त की। किसानों को निःशुल्क मृदा परीक्षण किट एवं उच्च उपज युक्त श्री अन्न बीज भी दिए गए।

उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए श्री अन्न उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन प्रौद्योगिकियां पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने एग्री क्लिनिक और एग्री बिजनेस सेंटर, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश के वित्त पोषण से 11-12 नवंबर 2024 के दौरान उत्तर प्रदेश के 15 किसानों के लिए 'श्री अन्न उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन प्रौद्योगिकियां' शीर्षक से दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों ने श्री अन्न उत्पादन व प्रसंस्करण से संबंधित अपनी समस्याएं बताईं। निदेशक एवं अन्य विशेषज्ञों ने नवीनतम श्री अन्न उत्पादन तथा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों पर प्रशिक्षण दिया। किसानों के लिए श्री अन्न की नवीनतम उत्पादन और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी, श्री अन्न उत्पादन, संरक्षण, प्रसंस्करण, मूल्य-वर्धन, भंडारण, मृदा परीक्षण आदि विभिन्न तकनीकों के बारे में एक संवादात्मक सत्र चलाया गया। किसानों को श्री अन्न जननद्रव्य विविधता दिखाने हेतु श्री अन्न जीन संग्रह, उत्कृष्टता केंद्र, प्राथमिक व द्वितीयक प्रसंस्करण सुविधाओं का दौरा कराया गया। इसके अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त किस्मों, किसान उत्पादक संगठनों के गठन और उनके लाभों से अवगत कराया गया।

"श्री अन्न उत्पादन में उत्तम कृषि पद्धतियां" पर प्रशिक्षण

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने तमिलनाडु के वेल्लोर जिले के 30 किसानों के लिए 20 नवंबर 2024 को श्री अन्न उत्पादन हेतु उत्तम कृषि पद्धतियां पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। यह प्रशिक्षण कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) के अंतर्गत आयोजित एक अंतर्राज्यीय प्रदर्शन यात्रा का हिस्सा था। डॉ. श्रीविद्या, वैज्ञानिक ने श्री अन्न की खेती, उत्पादन तकनीकों और प्रसंस्करण विधियों के बारे में जानकारी दी, जिसमें उनके जिले में व्यापक रूप से उगाई जाने वाले श्री अन्न, ज्वार व रागी जैसी फसलों पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ. उमाकांत तथा डॉ. मालती ने किसानों को दोहरी फसल के रूप में मीठी ज्वार की खेती के लाभ से भी परिचित कराया। वैज्ञानिकों ने मीठी ज्वार के डंठलों से रस निकालने की प्रक्रिया का भी प्रदर्शन किया।

"श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं प्रमाणीकरण" पर प्रशिक्षण

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के द्वारा ओडिशा मिलेट मिशन के तत्वावधान में 20-22 नवंबर 2024 के दौरान "श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं प्रमाणन" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक,

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन भाषण दिया। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बीज उत्पादन, बीज प्रसंस्करण एवं बीज प्रमाणीकरण के व्यापक क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोग, बीज सुखाने, बीज भंडारण आदि विभिन्न विषयों को शामिल किया गया। इसने बीज उत्पादन, बीज प्रसंस्करण एवं बीज भंडारण आदि के व्यावहारिक पहलुओं पर ज्ञान प्रदान किया। इस प्रशिक्षण में प्रक्षेत्र व प्रयोगशाला का दौरा एवं कटाई उपरांत बीजों के संभाल कार्य सीखने हेतु निजी बीज उद्योग, यानी गंगा कावेरी सीड्स प्राइवेट लिमिटेड का ज्ञानवर्धन दौरा शामिल था।

उक्त प्रशिक्षण में ओडिशा राज्य के कृषि विभाग के अधिकारियों और ओमिमि परियोजना कर्मचारियों सहित कुल 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ओडिशा कृषि अधिकारियों हेतु "श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं प्रमाणन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने ओडिशा श्री अन्न अभियान (ओएमएम चरण II परियोजना) के अंतर्गत ओडिशा राज्य के 25 सहायक कृषि अधिकारियों (एएओ) के लिए 20-22 नवंबर 2024 के दौरान "श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं प्रमाणन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों ने बीज उत्पादन की मूलभूत अवधारणाओं, फसल उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए गुणता युक्त बीजों के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री अन्न फसल प्रबंधन, पोषक तत्व तथा जल प्रबंधन कार्यों पर विस्तृत सत्र आयोजित किए गए। प्रतिभागियों ने किस्म शुद्धता, बीज प्रमाणन मानकों एवं पीड़क तथा रोगों के प्रभावी प्रबंधन को बनाए रखने पर ध्यान देने के साथ श्री अन्न के लिए बीज उत्पादन प्रोटोकॉल की गहन जानकारी प्राप्त की। इसके अलावा, बीज उद्योग के ज्ञानवर्धन दौरों से बीज प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग संचालन में व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें भावी फसल सुधार पहलों हेतु महत्वपूर्ण श्री अन्न आनुवंशिक संसाधन संरक्षण के बारे में जानकारी दी गई।

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान में कृषकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में उत्तर प्रदेश के 44 किसानों हेतु 28-29 नवंबर, 2024 के दौरान श्री अन्न उत्पादन, प्रसंस्करण तथा मूल्य-वर्धन प्रौद्योगिकियां नामक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक के द्वारा किया गया। निदेशक ने किसानों को बाजरे की नवीनतम उत्पादन व प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्री अन्न उत्पादन, संरक्षण, प्रसंस्करण, मूल्य-वर्धन, भंडारण आदि विविध तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। किसानों को विविध श्री अन्न जननद्रव्य दिखाने के उद्देश्य से श्री अन्न जीन संग्रहालय ले जाया गया, इसके अलावा उत्कृष्टता केंद्र, प्राथमिक तथा द्वितीयक प्रसंस्करण सुविधाओं का दौरा भी कराया गया। किसानों को उनके क्षेत्रों हेतु उपयुक्त किस्मों के बारे में जानकारी भी प्रदान की गई।

ओडिशा के किसानों को "श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रमाणन एवं मूल्य-वर्धन" पर प्रशिक्षण

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के द्वारा ओडिशा मिलेट मिशन (ओएमएम) के अंतर्गत ओडिशा राज्य के किसान उत्पादक संगठनों (किउसं), गैर-सरकारी संगठनों और प्रगतिशील किसानों के लिए 3-5 दिसंबर, 2024 के दौरान "श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रमाणन एवं मूल्य-वर्धन" पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने इसका उद्घाटन किया तथा पोषण सुरक्षा एवं सतत कृषि सुनिश्चित करने में श्री अन्न की खेती के महत्व पर प्रकाश डाला। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों ने श्री अन्न बीज उत्पादन, प्रसंस्करण तकनीक, प्रमाणन मानक और मूल्य-वर्धन इकाइयां शामिल विशेष सत्रों में भाग लिया। किसानों के लिए श्री अन्न खेतों, जीन संग्रह, प्राथमिक प्रसंस्करण इकाई, उत्कृष्टता केंद्र और

प्रसाद बीज उद्योगों जैसी व्यावहारिक गतिविधियां व ज्ञानवर्धन दौरे शामिल किए गए।

श्री अन्न की उन्नत खेती विधियां एवं प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के द्वारा 3-5 दिसंबर, 2024 के दौरान श्री अन्न की उन्नत खेती विधियां एवं प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उन्नत खेती तकनीकों, प्रसंस्करण नवाचारों तथा सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों के माध्यम से श्री अन्न के उत्पादन और मूल्य-वर्धन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रतिभागियों ने श्री अन्न की खेती, कटाई उपरांत प्रसंस्करण वमूल्यवर्धित उत्पाद विकास के वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के बारे में जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों, उद्यमियों और हितधारकों को श्री अन्न आधारित कृषि व्यवसायों में उत्पादकता, लाभप्रदता और स्थिरता में सुधार हेतु व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्रदान करना था।

कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (एबीएफपीआई) पर राज्य स्तरीय कार्यशाला

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) तथा भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा 18 दिसंबर, 2024 को भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (एबीएफपीआई) पर एक राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई। श्री एल मदन कुमार रेड्डी, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी (दक्षिण क्षेत्र), केवीआईसी, बेंगलुरु, श्री एम एन सुधाकर, निदेशक, केवीआईसी, तेलंगाना तथा डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने औपचारिक रूप से दीप प्रज्वलित करके कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. सी तारा सत्यवती ने अपने उद्घाटन भाषण में कृषि खाद्य प्रसंस्करण में श्री अन्न व्यवसाय के अवसरों की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. संगप्पा और डॉ. श्रीनिवास बाबू, वैज्ञानिक ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा विकसित उन्नत श्री अन्न प्रौद्योगिकियों के बारे में प्रस्तुति दी तथा श्री अन्न स्टार्टअप को आकार देने में न्यूट्रीहब के अनुभवों को साझा किया। डॉ. सत्यमाला, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीएफटीआरआई, हैदराबाद तथा डॉ. पी माथुर, निदेशक, भाकृअनुप-भातिअनुसं, हैदराबाद ने खाद्य प्रसंस्करण नवाचारों और कृषि-औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने की कार्यनीतियों पर अपनी विशेषज्ञता साझा की। कार्यशाला में कुल 120 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भाश्रीअनुसं-न्यूट्रीहब में 2024 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	तारीख	कार्यक्रम का शीर्षक	कुल प्रतिभागी
1.	19 जनवरी, 2024	नवोद्यम उज्जवलन 'श्री अन्न उत्पादन एवं विपणन में उभरते रुझान'	57
2.	25 जनवरी, 2024	श्री अन्न संग आहार	33
3.	27 जनवरी, 2024	सैन्य महिलाओं हेतु श्री अन्न मूल्य-वर्धन	30
4.	16 फरवरी, 2024	श्री अन्न संग आहार	30
5.	23 फरवरी, 2024	नवोद्यम उज्जवलन 'श्री अन्न उत्पादन एवं विपणन में उभरते रुझान'	43
6.	27 फरवरी, 2024	श्री अन्न क्षेत्र में उभरते रुझान	26
7.	15 मार्च, 2024	श्री अन्न संग आहार	25
8.	16 मार्च, 2024	नवोद्यम उज्जवलन 'श्री अन्न उत्पादन एवं विपणन में उभरते रुझान'	45
9.	18 अप्रैल, 2024	श्री अन्न उत्पादन एवं विपणन में उभरते रुझान	40
10.	25 अप्रैल, 2024	श्री अन्न संग आहार	23
11.	26 अप्रैल, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	49
12.	10 मई, 2024	स्वयं सहायता समूह श्री अन्न संग आहार (महबूबाबाद)	45

क्र.सं.	तारीख	कार्यक्रम का शीर्षक	कुल प्रतिभागी
13.	16 मई, 2024	श्री अन्न संग आहार	22
14.	17 मई, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	49
15.	13 जून, 2024	श्री अन्न संग आहार	28
16.	14 जून, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	47
17.	26 जुलाई, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	47
18.	23 अगस्त, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	41
19.	27 सितम्बर, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	35
20.	25 अक्टूबर, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	33
21.	21 नवंबर, 2024	श्री अन्न संग आहार	16
22.	22 नवंबर, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	28
23.	19 दिसंबर, 2024	श्री अन्न संग आहार	15
24.	20 दिसंबर, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	32
25.	30 दिसंबर, 2024	श्री अन्न संग आहार	18
26.	31 दिसंबर, 2024	नवोद्यम उज्जवलन कार्यक्रम	39

भाश्रीअनुसं में अध्ययनरत छात्र

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 2024 के दौरान कुल 5 स्नातकोत्तर छात्रों ने अपना शोध कार्य पूर्ण किया एवं 10 पीएच डी तथा 5 स्नातकोत्तर छात्र अध्ययनरत हैं। इसके अलावा आईएआरआई - मेगा यूनिवर्सिटी कार्यक्रम के अंतर्गत भी 4 स्नातकोत्तर छात्र अध्ययनरत रहे।

4 पुरस्कार और सम्मान

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान के स्टाल को प्रशस्ति-पत्र

भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची में 3-5 फरवरी, 2024 के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र, दियांकेल, टोपरा खंड, खुंटी, झारखंड में पूर्वी क्षेत्र हेतु आयोजित क्षेत्रीय कृषि मेले में जनजातीय किसानों के मध्य श्री अन्न के प्रति जागरूकता लाने हेतु डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं के दिशा-निर्देश में डॉ. संगप्पा, वैज्ञानिक तथा डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) के द्वारा श्री अन्न स्टाल लगाया, जिसमें श्री अन्न की खेती एवं प्रसंस्करण हेतु विकसित प्रौद्योगिकियों एवं प्रकाशनों के साथ-साथ श्री अन्न फसलों की बालियों एवं मूल्यवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन किया गया।

संस्थान के द्वारा स्थापित श्री अन्न स्टाल को उत्तम साज-सज्जा एवं प्रबंधन हेतु समापन समारोह के दौरान प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद की ओर से डॉ. संगप्पा एवं डॉ. महेश कुमार ने श्री सी पी राधाकृष्णन जी, माननीय राज्यपाल, झारखंड के कर-कमलों से उक्त प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया।

क्र.सं.	नाम	पुरस्कार विवरण एवं पुरस्कार का शीर्षक	प्रदानकर्ता संगठन
1	बसवराज रायगोंड	फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (एफपीएसआई) फेलो	इंडियन फाइटोपैथोलॉजिका सोसाइटी, भाकृअनुप-भाकृअनुसं, नई दिल्ली
2	बसवराज रायगोंड	भारतीय आलू एसोसिएशन फेलो	भारतीय आलू संघ, भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला
3	बसवराज रायगोंड	भारत के उत्तर पश्चिमी पहाड़ियों में आलू पर *हैप्लोथ्रिप्स* टेनुइपेनिस बैगनॉल (थिसानोप्टेरा, फ्लेओथ्रिपिडे) की पहली रिपोर्ट पर कार्य हेतु सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कार के लिए आईपीए पदक *पोटैटो* जे, 2020, 47 (1): 92-96 (श्रीधर जे*, नीलम के, बस्वराज रायगोंड, वैलेपु वी, अनुज बी, कमलेश एम, संजीव एस, एम नागेश और एसके चक्रवर्ती) में प्रकाशित	भारतीय आलू संघ, भाकृअनुप-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला
4	बसवराज रायगोंड	"वैश्विक वायरस अनुसंधान में प्रगति" विषय पर विरोकॉन-2023 के दौरान "लक्षण विज्ञान, इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी तथा आणविक पहचान द्वारा कंगनी में विषाण्विक संक्रमण की जांच" पर सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति	आईवीएस, नई दिल्ली तथा भाकृअनुप-एनआरसी, केला, तिरुचिरापल्ली
5	बी दयाकर राव	सामाजिक प्रभाव	एमिटी यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश
6	बी गंगय्या	उपाध्यक्ष (दक्षिण), इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रोनॉमी, नई दिल्ली	द्विवार्षिक 2024-25 के लिए भारतीय कृषि विज्ञान सोसायटी के उपाध्यक्ष चयनित
7	संगप्पा	श्री गुरु सेवा रत्न प्रशस्ति	हरकुडा संस्था मठ, कर्नाटक
8	परशुराम पात्रोटी	कृषि पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान "मैजिक दृष्टिकोण का उपयोग करके वर्षा परवर्ती ज्वार में किसानों की पसंदीदा विशेषताओं हेतु प्रजनन" पर सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति	मैनेज, हैदराबाद
9	परशुराम पात्रोटी	जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में पीएच.डी. मार्गदर्शक/पर्यवेक्षक के रूप में मान्यता	पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
10	परशुराम पात्रोटी	सदस्य, जैव प्रौद्योगिकी अध्ययन बोर्ड	वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, सोलापुर (स्वायत्त)
स्थापना दिवस के दौरान संस्थागत पुरस्कार			
11	बी दयाकर राव	सर्वश्रेष्ठ प्रधान वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
12	आर वेंकटेश्वरलु	सर्वश्रेष्ठ वरिष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
13	संगप्पा	सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
14	एस नरेन्द्र	सर्वश्रेष्ठ तकनीकी अधिकारी	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
15	उषा सतिजा तथा जे भगवंतम्	सर्वश्रेष्ठ तकनीकी सहायक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
16	एस अमृत राज संतोष तथा श्री जे नरसिम्हा	सर्वश्रेष्ठ कुशल सहायक कर्मचारी	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
17	श्री वाई एस क्षीरसागर	सर्वश्रेष्ठ तकनीकी स्टाफ पुरस्कार (सीआरएस, सोलापुर)	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
18	श्री मलिक नानवारे	सर्वश्रेष्ठ कुशल सहायक कर्मचारी स्टाफ पुरस्कार (सीआरएस, सोलापुर)	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
19	श्री शेख रुकमान	सर्वश्रेष्ठ स्टाफ वित्त अनुभाग	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
20	श्रीमती ऋतु दलाल	सर्वश्रेष्ठ स्टाफ प्रशासनिक अनुभाग	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
21	बी दयाकर राव	सर्वश्रेष्ठ अंतःविषयक पुरस्कार	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
22	ए वी उमाकांत	ज्यादा उत्पाद/प्रौद्योगिकियां विकसित करने वाले वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद

क्र.सं.	नाम	पुरस्कार विवरण एवं पुरस्कार का शीर्षक	प्रदानकर्ता संगठन
23	पी जी पद्मजा, ए कलैसेकर, आर वेंकटेश्वरलु, बी दयाकर राव, वी ए टोणपि	उच्चतम प्रभाव कारक/नास स्कोर वाला शोध लेख	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
24	संगप्पा	कैलेंडर वर्ष 2023 के दौरान ज्यादा शोध लेख	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
25	सी तारा सत्यवती तथा अन्य एवं बी दयाकर राव	सर्वश्रेष्ठ गृह प्रकाशन	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
26	आर मधुसूदन और पी जी पद्मजा	अंतःविषयक मोड में सर्वश्रेष्ठ शोध लेख	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
27	बी दयाकर राव	अंतर-संस्थागत मोड में सर्वश्रेष्ठ शोध लेख	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
28	आर वेंकटेश्वरलु, वी एम मालती	सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला पुरस्कार (जैव रसायन)	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
29	संगप्पा	2023 के दौरान बाहरी वित्तपोषण की अधिकतम राशि	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
30	स्वर्णा रोणंकि	2023 के दौरान बाहरी वित्त पोषित परियोजनाओं की अधिकतम संख्या	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
31	संगप्पा	वैज्ञानिकों का किसानों के साथ मिलकर कार्य एवं श्री अन्न संवर्धन में महत्वपूर्ण प्रभाव	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
32	बी सुब्बारायडू तथा संगप्पा	कमजोर वर्ग/किसानों के साथ कार्यरत वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
33	ए वी उमाकांत	सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक संपदा (आईपी) विकास वाले वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद
34	बी वेंकटेश भट	सबसे अधिक राजस्व उत्पन्न करने वाले वैज्ञानिक	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद

5 संपर्क एवं सहयोग

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में वर्ष 2024 के दौरान कुल 38 बाह्य वित्त पोषित विभिन्न परियोजनाएं संचालित थीं।

श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र का निर्माणाधीन भवन

6

बाजरा, ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर भाकृअनुप-अभासअनुप की विशेषताएं

बाजरा, ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप की विशेषताएं

बाजरे पर अभासअनुप, ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप, भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र, आएनजीरंकृविवि, तिरुपति के द्वारा संयुक्त रूप से 27-28 जून, 2024 को बाजरे पर अभासअनुप समूह की 59वीं वार्षिक, ज्वार पर अभासअनुप समूह की 54वीं वार्षिक तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप समूह की 35वीं वार्षिक बैठकें आयोजित की गई। संयुक्त वार्षिक समूह बैठक में, 28 मई, 2024 को बाजरे हेतु वैज्ञानिक कार्य योजना की लेखा परीक्षा की गई, जबकि ज्वार व लघु श्री अन्न हेतु यह 5-6 जून, 2024 के दौरान वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। इसी तरह, बाजरे के लिए तकनीकी कार्यक्रम निर्माण बैठक 29 मई 2024 को, जबकि ज्वार व लघु श्री अन्न हेतु 7 जून, 2024 आयोजित की गई। समूह बैठक में विभिन्न बाजरा, ज्वार व लघु श्री अन्न केंद्रों, स्वैच्छिक केंद्रों, निजी क्षेत्र, गैर सरकारी संगठनों, इक्रिसेट व अन्य सहयोगी संस्थानों के लगभग 200 शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

डॉ. तिलकराज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप की अध्यक्षता में तथा डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप की सह-अध्यक्षता में 27 जून 2024 को 2023-24 की प्रगति रिपोर्ट एवं 2024-25 हेतु तकनीकी कार्यक्रम की प्रस्तुति पर तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। प्रस्तुतियों को 4 विषयगत समूह - फसल सुधार, फसल उत्पादन, फसल संरक्षण, और लोकसंपर्क गतिविधियां, बीज उत्पादन, आईपीआर और भाकृअनुप-इक्रिसेट साझेदारी परीक्षण में विभाजित किया गया। संबंधित समूहों के अध्यक्ष व सह-अध्यक्ष ने प्रत्येक श्री अन्न में सभी विषयों में प्रगति का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। तीन भाकृअनुप-अभासअनुप में अनुसंधान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया। अध्यक्ष ने बाजरा में संकर विकास के लिए नई नरबंध्य प्रणाली की पहचान पर बल दिया। सह-अध्यक्ष ने आग्रह किया कि किसानों हेतु श्री अन्न की खेती को लाभदायक बनाने के लिए सभी लघु श्री अन्न में उत्पादकता बढ़ाई जानी चाहिए। पोषण संबंधी विशेषताओं के लिए उन्नत जीनोमिक एवं फेनोमिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व, डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप की अध्यक्षता एवं डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं तथा सह परियोजना समन्वयक, बाजरा, और डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक ज्वार एवं श्री अन्न की सह-अध्यक्षता में 2023-24 के दौरान कार्य योजना एवं अगले वर्ष की योजना के आधार पर बाजरा, ज्वार व लघु श्री अन्न केंद्रों पर भाकृअनुप-अभासअनुप के अनुसंधान की समीक्षा और वैज्ञानिक लेखा परीक्षा की गई। प्रस्तुतियों के दौरान डॉ. ओ पी यादव, अध्यक्ष, पीएएमसी और डॉ. चेन्नबैरेगौड़ा सदस्य पीएएमसी विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे। भाकृअनुप-अभासअनुप केंद्रों के संबंधित प्रभारी अधिकारियों द्वारा तीन भाकृअनुप-अभासअनुप से कुल 43 प्रस्तुतियां दी गईं । प्रस्तुतियों में केंद्र के बारे में सामान्य जानकारी, कर्मचारियों की स्थिति, मौसम संबंधी जानकारी, वार्षिक सामान्य बैठक 2023 की सिफारिशों पर कार्य-निष्पादन प्रतिवेदन, महत्वपूर्ण उपलब्धियां, केंद्र हेतु अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्र और प्रत्येक के लिए कार्य योजना, प्रत्येक प्राथमिकता वाले क्षेत्र और विषयांतर्गत प्रमुख प्रयास व उपलब्धियां, बीज उत्पादन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, प्रकाशन, बाधाएं तथा कमियां, एवं 2024-25 के लिए कार्य योजना शामिल थीं। प्रत्येक प्रस्तुति के बाद क्षेत्रीय और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के आधार पर केंद्र के प्रदर्शन को और बेहतर बनाने हेतु चर्चा एवं सिफारिशें की गईं।

डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप की अध्यक्षता एवं डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं तथा सह परियोजना समन्वयक, बाजरा, और डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक ज्वार एवं श्री अन्न की सह-अध्यक्षता में विभिन्न फसलों तथा विषयों में शोध परिणामों तथा प्रगति प्रतिवेदन की समीक्षा की गई। प्रस्तुतियों के दौरान डॉ. ओ पी यादव, अध्यक्ष, पीएएमसी और डॉ. चेन्नबैरेगौड़ा सदस्य पीएएमसी विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे। सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र तथा इक्रिसेट के वैज्ञानिकों ने इस ऑनलाइन बैठक में भाग लिया। बाजरा, ज्वार व लघु श्री अन्न पर भाकृअनुप-अभासअनुप के सभी प्रमुख जांचकर्ताओं (कुल 27) ने विभिन्न विषयों जैसे पादप प्रजनन, सस्य विज्ञान, पादप शरीरक्रिया विज्ञान, कृषि कीट विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं टीएसपी, बीज उत्पादन, परीक्षण तथा पौधशाला, ज्वार आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन और बौद्धिक संपदा अधिकार के अंतर्गत अपने तकनीकी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

पूर्ण अधिवेशन की शुरुआत अध्यक्ष डॉ. तिलकराज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप के स्वागत संबोधन से हुई। तत्पश्चात विभिन्न सत्रों की कार्यवाही/तकनीकी सिफारिशों की प्रस्तुति हुई। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के द्वारा किस्म पहचान समिति (वीआईसी) की कार्यवाही (बाजरा) एवं डॉ. आर मधुसूदन (परियोजना समन्वयक, ज्वार व श्री अन्न) के द्वारा किस्म पहचान समिति (वीआईसी) की कार्यवाही (ज्वार व श्री अन्न) की प्रस्तुति के साथ सत्र जारी रहा। डॉ. एस एस माने (सदस्य, पीएएमसी, श्री अन्न पर भाकृअनुप-अभासअनुप), डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) तथा डॉ. तिलकराज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) ने अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की। डॉ. तिलकराज शर्मा ने कहा कि भाकृअनुप-अभासअनुप कार्यक्रमों में सभी सत्रवार सिफारिश/कार्रवाई बिंदुओं को कार्यान्वित किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रतिभागियों के बीच वार्षिक आम बैठक के प्रयोजन पर चर्चा और समान शोध हितों वाले साझेदारों को खोजना तथा वैज्ञानिकों को संयुक्त परियोजना प्रस्ताव बनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सीजीएआईआर केंद्रों के साथ अनुसंधान सहयोग को और मजबूत किया जाना है। उन्होंने स्पष्ट रूप से परिभाषित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए संसाधनों को साझा करने तथा सभी श्री अन्न हेतु अभासअनुप डेटाबेस तैयार करने पर बल दिया। भाकृअनुप-अभासअनुप संस्थानों की तरह भाकृअनुप-अभासअनुप वैज्ञानिकों को अनुसंधान में लक्ष्योन्मुख दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

डॉ. प्रधान ने किस्मों के लोकार्पण हेतु प्रयासों के लिए सभी प्रजनकों तथा कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने कार्यक्रम की सराहना की तथा कहा कि केंद्रों को जीनोमिक उपकरणों का उपयोग करते हुए लक्षणों में सुधार, विविधता की खोज तथा 2047 के लिए उत्पादन लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक अध्ययन में शामिल होना चाहिए। श्री अन्न विपणन कार्यनीतियों को भी मजबूत किया जाना चाहिए। उन्होंने सभी केंद्रों को बेहतर सामग्री, उत्पाद तथा प्रकाशन तैयार करने में सफलता की कामना की। डॉ. एस एस माने ने अपने संबोधन में संपूर्ण कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि रोगजनकों में विविधता है अतः रोगों की पहचान को मजबूत किया जाना चाहिए, जिसका उपयोग जीन पिरामिडिंग या रोग की घटनाओं को कम करने के लिए किया जा सकता है। आरएआरएस तिरुपति तथा भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद की विभिन्न समितियों तथा दलों ने बैठक के लिए अपेक्षित व्यवस्थाएं कीं। डॉ. आई के दास, प्रधान वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के नोडल अधिकारी थे।

लोकार्पण हेतु श्री अन्न की नई किस्मों की पहचान

डॉ. तिलकराज शर्मा उप महानिदेशक, (फसल विज्ञान), भाकृअनुप की अध्यक्षता में 27 जून, 2024 को हाइब्रिड मोड में किस्म पहचान समिति (वीआईसी) की बैठक आयोजित की गई। कुल 22 प्रस्ताव (बाजरा-2, ज्वार-13 और लघु श्री अन्न-7) प्राप्त हुए। समिति ने विभिन्न क्षेत्रों/राज्यों के सभी प्रस्तावों की गंभीरता से जांच की तथा सीवीआरसी को सिफारिशें करने के लिए 14 प्रस्तावों (बाजरा-2, ज्वार-6 और लघु श्री अन्न -7) की पहचान की। बाजरा की दो संकर किस्में संकर एमएच 2626 (एमपी7214) और संकर एमएच 2631 (पीबी1939) थीं। छः ज्वार संकर और किस्में - खरीफ ज्वार संकर एसपीएच 1974, खरीफ ज्वार किस्म एसपीवी 2773, एकल कट चारा ज्वार किस्म एसपीवी 2881 (एसएच 1955) और एसपीवी 2884, मीठी ज्वार किस्म एसपीवी 2890 और पीली ज्वार किस्म एसपीवी 2906 थीं। सात लघु श्री अन्न किस्मों में रागी किस्म एफएमवी1209, कंगनी किस्म एफएक्सवी647 और एफएक्सवी652, कुटकी किस्म एलएमवी539, चेना किस्म पीएमवी472 और पीएमवी473 और ब्राउनटॉप बाजरा किस्म एमटीवी31 शामिल थीं।

7 प्रकाशन-सूची

पत्रिका लेख

नास मान >6.0

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (नास) के द्वारा छह से ज्यादा मान वाली विभिन्न पत्रिकाओं में संस्थान के कुल 28 विविध लेख प्रकाशित हुए।

नास मान <6.0

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (नास) के द्वारा छह से कम मान वाली विभिन्न पत्रिकाओं में संस्थान के कुल 36 विविध लेख प्रकाशित हुए।

पुस्तकें

कुल 2 पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

पुस्तक अध्याय

विभिन्न पुस्तकों में संस्थान के वैज्ञानिकों के 22 पुस्तक अध्याय प्रकाशित हुए।

कार्यशाला/संगोष्ठी/परिसंवाद/सम्मेलन में प्रस्तुतीकरण

आमंत्रित वक्ता

राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों ने 2 विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान प्रस्तुतीकरण दिए।

अंतर्राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों ने 3 विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान प्रस्तुतीकरण दिए।

मौखिक प्रस्तुतीकरण

राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा विविध कार्यक्रमों के दौरान 2 मौखिक प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा विविध कार्यक्रमों के दौरान 3 मौखिक प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किए गए।

सारांश

राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा कुल 14 सारांश प्रस्तुत किए गए।

अंतर्राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा कुल 3 सारांश प्रस्तुत किए गए।

विस्तारित सारांश/सम्मेलन कार्यवाही

राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा 1 विस्तारित सारांश/सम्मेलन कार्यवाही प्रस्तुत की गई।

अंतर्राष्ट्रीय

संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा 1 विस्तारित सारांश/सम्मेलन कार्यवाही प्रस्तुत की गई।

तकनीकी बुलेटिन

संस्थान के 2 तकनीकी बुलेटिन प्रकाशित किए गए।

लोकप्रिय लेख

संस्थान के वैज्ञानिकों/तकनीकी कार्मिकों के कुल 6 लोकप्रिय लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

पुस्तिकाएं

संस्थान के 4 पुस्तिकाएं प्रकाशित हुई।

तकनीकी प्रतिवेदन

संस्थान के 6 तकनीकी प्रतिवेदन प्रकाशित हुए।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्याख्यान

संस्थान के वैज्ञानिकों/तकनीकी कार्मिकों ने विविध प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान कुल 15 व्याख्यान प्रदान किए।

विस्तार फोल्डर

संस्थान के 8 विस्तार फोल्डर प्रकाशित हुए।

प्रशिक्षण मैनुअल

संस्थान के 2 प्रशिक्षण मैनुअल प्रकाशित हुए।

पादप जननद्रव्य पंजीकरण सूचना

संस्थान के 17 पादप जननद्रव्य पंजीकरण सूचनाएं प्रकाशित हुईं।

लोकार्पण हेतु चिह्नित मीठी ज्वार किस्म - एसपीवी 2890

ताजा डंठल उपज	:	48-50 टन/हेक्टेयर
रस उपज	:	17000-18000 लीटर/हेक्टेयर
ब्रिक्स (%)	:	15.7
परिपक्वता हेतु दिन	:	130-133 दिन
प्रमुख विशेषताएं	:	उच्च ताजा डंठल उपज, रस उपज, मोटा डंठल, पर्ण रोगों के प्रति सहिष्णु
संस्तुत राज्य	:	महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा गुजरात

8

वर्तमान अनुसंधान परियोजनाएं

वर्तमान में भाकृअनुप - भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में कुल 55

- फसल (बाजरा-3) (ज्वार-5) (लघु श्री अन्न-7) उन्नयन परियोजनाएं - 15
- आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन - 3
- बीज विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी - 2
- फसल उत्पादन व कार्यिकी - 5
- फसल रक्षण - 13
- मूलभूत तथा अनुसंधानपरक अनुसंधान - 7
- विस्तार अनुसंधान - 5
- मूल्य वर्धन तथा सामाजिक-आर्थिक - 4
- वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र - 1

विभिन्न परियोजनाएं संचालित हैं।

9 अनुसस, पंसद तथा अन्य महत्वपूर्ण बैठकें

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

डॉ. अरविंद कुमार, भूतपूर्व उप महानिदेशक, इक्रिसेट की अध्यक्षता में, 2023-24 के दौरान संस्थान के अनुसंधान प्रगति की समीक्षा हेतु 19-20 सितंबर 2024 को भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की 25वीं बैठक आयोजित हुई। बैठक के दौरान आरएसी के सदस्य - डॉ. एस आर मालू, भूतपूर्व अनुसंधान निदेशक, एमपीयूएटी, उदयपुर; डॉ. एस टी कज्जिडोनी, भूतपूर्व डीन, कृषि महाविद्यालय, कृविविवि, धारवाड़, डॉ. ए निर्मलाकुमारी, भूतपूर्व प्रोफेसर, श्री अन्न उत्कृष्टता केंद्र, टीएनएयू, अथियांदल; प्रो. राजिंदर सिंह चौहान, डीन, स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज, महिंद्रा विश्वविद्यालय, हैदराबाद; श्री जी विनोद कुमार राव (किसान प्रतिनिधि), हैदराबाद; डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद तथा डॉ. पी राजेन्द्रकुमार, प्रधान वैज्ञानिक व सदस्य-सचिव, आरएसी उपस्थित थे। बैठक में विशेष आमंत्रिती के रूप में डॉ. राज कुमार भंडारी, राष्ट्रीय पोषण तकनीकी बोर्ड (एनटीबीएन), मुंबई और डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक (ज्वार व श्री अन्न), हैदराबाद उपस्थित थे। डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप, नई दिल्ली ऑनलाइन माध्यम से बैठक में शामिल हुए। डॉ. पी राजेन्द्रकुमार ने पिछली आरएसी बैठक की कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डॉ. सी तारा सत्यवती ने 2023-24 के दौरान श्री अन्न अनुसंधान एवं विकास का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। विभिन्न फसल/विषयगत समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी परियोजनाओं की प्रगति, उपलब्धियों तथा अपेक्षित परिणामों को प्रस्तुत किया। आरएसी दल ने 20 सितंबर, 2024 को प्रक्षेत्र प्रयोगों का भी दौरा किया एवं संबंधित वैज्ञानिकों के साथ अनुसंधान परिणामों पर चर्चा की, तत्पश्चात

जीन संग्रह, श्री अन्न उत्कृष्टता केंद्र, प्राथमिक व माध्यमिक प्रसंस्करण सुविधाएं तथा न्यूट्रीहब का दौरा किया। अध्यक्ष और सदस्यों ने उत्कृष्ट कार्य के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों तथा अन्य कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की तथा विभिन्न परियोजनाओं के सुधार हेतु बहुमूल्य सुझाव दिए।

डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने 2023-24 के दौरान श्री अन्न अनुसंधान व विकास का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने संगठित अनुसंधान हेतु फसल-वार अनुसंधान समूहों एवं सभी श्री अन्न में विकसित उत्पाद प्रोफाइल प्रस्तुत किए। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों, भाश्रीअनुसं में बीज उत्पादन, बाह्य वित्त पोषित परियोजनाओं, प्रकाशनों, अंतर्राष्ट्रीय पोषक-अनाज सम्मेलन 5.0, व्यवसाय ऊष्मायन, स्टार्ट-अप सुविधाओं तथा श्री अन्न प्रसंस्करण के अंतर्गत संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने श्री अन्न में वैश्विक अनुसंधान व विकास अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की जानकारी प्रदान की। उन्होंने श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत बुनियादी ढांचे के विकास एवं पूरे जीनोम अनुक्रमण, मेटाबोलोम प्रोफाइलिंग आदि जैसी नई पहलों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने उपलब्ध विशेषज्ञता का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए 15 भाकृअनुप संस्थानों को शामिल करते हुए श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के तहत किए गए सहयोगी अनुसंधान पर भी बल दिया। उन्होंने राजस्थान के बाड़मेर के गुड़ामालानी में बाजरा अनुसंधान पर केंद्रित एक क्षेत्रीय केंद्र की स्थापना के बारे में भी जानकारी दी।

विभिन्न फसल/विषयगत समूहों का प्रतिनिधित्व कर रहे वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजनाओं की प्रगति, उपलब्धियों एवं अपेक्षित परिणामों को प्रस्तुत किया। आरएसी दल ने 20 सितंबर, 2024 को प्रक्षेत्र प्रयोगों का भी दौरा किया और संबंधित वैज्ञानिकों के साथ शोध परिणामों पर चर्चा की। तत्पश्चात जीन संग्रह, श्री अन्न उत्कृष्टता केंद्र, प्राथमिक व द्वितीयक प्रसंस्करण सुविधाओं तथा न्यूट्रीहब का दौरा किया। अध्यक्ष तथा सदस्यों ने उत्कृष्ट कार्यों के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की। अध्यक्ष और सदस्यों ने विभिन्न परियोजनाओं के सुधार हेतु बहुमूल्य सुझाव दिए। आरएसी एवं परिषद द्वारा अनुमोदित सिफारिशें नीचे दी गई हैं :

क्र.सं.	XXV आरएसी बैठक की सिफारिशें
1	आरएसी ने पाया कि आरएसी द्वारा सुझाई गई तथा भाकृअनुप द्वारा अनुमोदित लगभग सभी सिफारिशों के कार्यान्वयन हेतु प्रभावी कदम उठाए गए हैं। आरएसी ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के निदेशक और दल द्वारा आरएसी की सिफारिशों के दीर्घकालिक कार्यान्वयन की दिशा में प्रभावी कदम उठाने के प्रयासों की सराहना की। फसल आधारित कार्य समूहों का गठन और फसलवार प्रस्तुतियां एक स्वागत योग्य कदम है। इससे लोगों को दल में कार्य के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। आरएसी सिफारिशों को लागू करने के लिए भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा शुरू किए गए कदमों को जारी रखने की आवश्यकता है। आरएसी 2024 के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा 2025 में करेगी।
2	अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की तर्ज पर भाकृअनुप- श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के पास एक व्यापक योजना होगी तथा भारत व श्री अन्न वर्धक अन्य देशों की भावी अपेक्षाओं को ध्यान में रखना होगा। व्यापक योजना में जलवायु परिवर्तन, खराब होते मृदा स्वास्थ्य, पानी की उपलब्धता में गिरावट, कृषि की स्थिरता के लिए प्रयास, साथ ही मशीनीकरण व डिजिटल उपकरणों का उपयोग, तथा इसके कर्मचारियों के साथ-साथ विश्वभर के अन्य केंद्रों की क्षमता विकास जैसी उभरती चुनौतियों को ध्यान में रखना होगा।
3	भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ज्वार एवं श्री अन्न हेतु परियोजना समन्वय के प्रबंधन चक्र के केंद्र में है, वर्तमान भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र और साथ ही महर्षि-सचिवालय है। मौजूदा व्यवस्था से यह अपेक्षा की जाती है कि यह अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभाओं की भर्ती, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बनाए रखने सहित एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में काम करेगा। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं को विशेष रूप से वैश्विक केंद्र की स्थापना और वैश्विक स्तर पर महर्षि गतिविधियों के समन्वय के लिए भाकृअनुप द्वारा क्रियाविधि, सशक्तिकरण व अधिकार प्रदान किए जाने की आवश्यकता है ताकि यह तीव्र गति के साथ काम करने में सक्षम हो सके। साथ ही, आरएसी का मानना है कि राष्ट्रीय स्तर पर, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सभी कार्यों के प्रबंधन हेतु, मौजूदा स्तर के कर्मचारियों के साथ, परियोजना समन्वयक को निदेशक भाश्रीअनुसं के साथ मिलकर काम करना चाहिए और सभी कर्मचारियों को निदेशक, भाश्रीअनुसं को रिपोर्ट करना चाहिए। इस समय संस्थान के निदेशक और परियोजना समन्वयक के बीच कर्मचारियों का विभाजन श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के विकास और महर्षि की स्थापना में बाधा उत्पन्न करेगा। आरएसी ने वैश्विक स्तर की अपेक्षित आवश्यकता को पूरा करने के लिए भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं को अतिरिक्त धनराशि के प्रावधान की भी सिफारिश की है।
4	आरएसी ने अतिरिक्त दायित्वों को ध्यान में रखते हुए केंद्र में अतिरिक्त कर्मचारियों के प्रावधान की सिफारिश की है और गुड़ामालानी, बाड़मेर, राजस्थान में बाजरा पर एक नया क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित करने की भी सिफारिश की है। आरएसी ने यह भी सिफारिश की है कि गुड़ामालानी से ही भाश्रीअनुसं के निदेशक के मार्गदर्शन में बाजरा पर अभासअनुप का समन्वय किया जाए।
5	जननद्रव्य संरक्षण के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। प्रत्येक वर्ष कुल 500 नए जननद्रव्य वंशावलियों को अंतर्राष्ट्रीय केंद्रों जैसे इक्रिसेट, यूएसडीए या अन्य केंद्रों से संग्रह या अधिग्रहण के माध्यम से संरक्षित मूल वंशावलियों में जोड़ा जाना चाहिए। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने विभिन्न रूपात्मक लक्षणों के लिए ज्वार के लगभग 25,000 वंशावलियों का मूल्यांकन किया है। साथ ही, इन वंशक्रमों के एक छोटे समूह हेतु इक्रिसेट या एनआईपीजीआर के पास कुछ जीनप्ररूपी आंकड़े उपलब्ध हैं। यह सुझाव दिया जाता है कि भाश्रीअनुसं उपर्युक्त दोनों संस्थानों के साथ सहयोग करे और भाश्रीअनुसं के आणविक जीवविज्ञानियों की भागीदारी के साथ आनुवंशिकी एवं जीनोमिक्स अध्ययन शुरू करे। इसके अलावा, आरएसी के श्री अन्न पोषण संबंधी महत्व पर ज्यादा सार्थक तुलना के लिए ट्रांसक्रिप्टोम डेटा के साथ विभिन्न फसलों के लिए उत्पन्न मेटाबोलोम डेटा के एकीकरण की सिफारिश करती है।
6	भाश्रीअनुसं में मीठी ज्वार पर कार्य अच्छा परिणाम दे रहे हैं। आरएसी ने मीठी ज्वार दल को उद्योग के साथ-साथ विभिन्न मंत्रालयों के साथ प्रभावी चर्चा की सिफारिश की है ताकि उन्हें जैव ईंधन के लिए मीठी ज्वार के महत्व के बारे में समझाया जा सके।
7	आरएसी ने मशीनीकृत उपकरणों, खरपतवारनाशकों का उपयोग करके खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ बुआई के लिए उपकरणों के विकास, लघु श्री अन्न सहित श्री अन्न प्रसंस्करण की दिशा में श्री अन्न पर ज्यादा कृषि संबंधी अनुसंधान शुरू करने की सिफारिश की है।
8	आरएसी ने भाश्रीअनुसं द्वारा जीन संपादन पर किए गए शोध की सराहना की है। आरएसी ने भाश्रीअनुसं को चावल व गेहूं की तरह श्री अन्न पकाने की गुणता बढ़ाने हेतु ब्लू स्काई शोध शुरू करने की सिफारिश की है।
9	आरएसी ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं को अपने स्वयं के कर्मचारियों की क्षमता विकासार्थ और ज्यादा कदम उठाने की सिफारिश की है, जिसमें भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के कर्मचारियों को 2-4 माह हेतु वहां काम करने के लिए भेजने और भाश्रीअनुसं में अन्य संस्थानों से कर्मचारियों को लाने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय केंद्रों के साथ वैज्ञानिक आदान-प्रदान कार्यक्रम शुरू करना शामिल है।
10	आरएसी ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं को निजी क्षेत्र के सीएसआर फंड को आकर्षित करने और उद्योग से धन आकर्षित करने के लिए सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के समान उद्योग/मांग आधारित अनुसंधान करने की सिफारिश की है।

पंचवार्षिक समीक्षा दल (क्यूआरटी) बैठक

डॉ. एस एल मेहता, पूर्व कुलपति (महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर)-अध्यक्ष और अन्य सदस्य डॉ. के गणेशमूर्ति, भूतपूर्व निदेशक, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी केंद्र, टीएनएयू, कोयंबतूर; डॉ. ओ पी गोविला, भूतपूर्व परियोजना समन्वयक, बाजरा पर अभासअनुप; डॉ. प्रभाकर, भूतपूर्व परियोजना समन्वयक, लघु श्री अन्न पर अभासअनुप, बेंगलुरु; डॉ. एस एस माने, अनुदेश निदेशक एवं डीन कृषि संकाय, डॉ. पीडीकेवी, अकोला तथा डॉ. एन के बाजपाल, निदेशक विस्तार, बीयूएटी, बांदा शामिल पंचवार्षिक समीक्षा दल ने भाश्रीअनुसं तथा तीन अभासअनुप (बाजरा, ज्वार और लघु श्री अन्न) के पंचवार्षिक समीक्षा दल प्रदिवेदन को अंतिम रूप देने के लिए 23-24 सितंबर 2024 एवं 6-8 नवंबर 2024 को भाश्रीअनुसं का दौरा किया। दल ने भाश्रीअनुसं की निदेशक डॉ. सी तारा सत्यवती, परियोजना समन्वयक (ज्वार व श्री अन्न) डॉ. आर मधुसूदन के साथ औपचारिक चर्चा की और भाश्रीअनुसं के विभिन्न वैज्ञानिकों के साथ अपेक्षा आधारित चर्चा की। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के प्रधान वैज्ञानिक और क्यूआरटी के सदस्य सचिव डॉ. ए वी उमाकांत ने इन बैठकों का समन्वयन किया। अंत में, सभी पंसद प्रतिवेदन डॉ. एस एल मेहता, अध्यक्ष, पंसद के द्वारा 31 दिसंबर, 2024 को एनएएससी, नई दिल्ली के बोर्ड रूम में भाकृअनुप के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक को सौंपी गईं। अध्यक्ष ने माननीय महानिदेशक को भाश्रीअनुसं और अभासअनुप के लिए पंसद द्वारा की गई समीक्षा व प्रमुख सिफारिशों से अवगत कराया। डॉ. डी के यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भाकृअनुप, डॉ (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक ज्वार व श्री अन्न एवं डॉ. ए वी उमाकांत, सदस्य सचिव, पंसद ने उक्त बैठक में भाग लिया।

संस्थान अनुसंधान परिषद (आईआरसी) की बैठक

संस्थान में संचालित परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा तथा नई परियोजना प्रस्तावों पर चर्चा के लिए भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के संस्थान अनुसंधान परिषद (आईआरसी) की बैठक 21 व 22 मई, 2024 को आयोजित की गई। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं एवं अध्यक्ष, आईआरसी ने बैठक की अध्यक्षता की तथा इसमें बाह्य विशेषज्ञ - डॉ. वी के सिंह, निदेशक, केबाकृअनुसं, हैदराबाद, डॉ. जे वी पाटिल, भूतपूर्व निदेशक, भाश्रीअनुसं हैदराबाद (ऑनलाइन), डॉ. (श्रीमती) ए निर्मलाकुमारी, प्रभारी अधिकारी (सेवानिवृत्त), श्री अन्न पर अभासअनुप, टीएनएयू, अथियांदल, डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक, अभासअनुप - ज्वार व श्री अन्न तथा आईआरसी के सदस्य सचिव डॉ. आई के दास के अलावा संस्थान के सभी वैज्ञानिक उपस्थित थे। दो दिवसीय

विचार-विमर्श के दौरान कुल 49 चालू परियोजनाओं पर चर्चा की गई और उनकी गहन समीक्षा की गई। प्रधान अन्वेषकों के द्वारा आरपीपी प्रस्तुत किए गए। पांच नए प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए एवं उन पर चर्चा की गई।

औपचारिक आईआरसी से पूर्व, नौ फसलों में से प्रत्येक पर अनुसंधान प्राथमिकताओं पर गहन चर्चा के लिए 22, 24, 26, 29 तथा 30 अप्रैल 2024 को पूर्व-आईआरसी बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं एवं अध्यक्ष, आईआरसी ने की और सह-अध्यक्षता डॉ. आर मधुसूदन, ज्वार व श्री अन्न के परियोजना समन्वयक ने की। प्रत्येक फसल के लिए एक अलग सत्र नियत था, जिसमें फसल-विशिष्ट वैज्ञानिकों के समूह ने भाग लिया। चर्चा के दौरान सामने आए प्रमुख शोध अंतरालों का उल्लेख कार्यवाही में किया गया है।

लोकार्पण हेतु चिह्नित एकल कट चारा ज्वार किस्म-एसपीवी 2884

हरा चारा उपज	:	440-480 क्विंटल/हेक्टेयर
सूखा चारा उपज	:	180-200 क्विंटल/हेक्टेयर
कटाई हेतु दिन	:	75-77 दिन
प्रमुख विशेषताएं	:	उच्च हरा व सूखा चारा उत्पादन, पर्ण अंगमारी, किट्ट, श्यामवर्ण (एन्थ्रेक्नोज), ज़ोनेट पर्ण धब्बा एवं मृदूरोमिल फफूंद के प्रति सहनशील
संस्तुत राज्य	:	महाराष्ट्र, तमिलनाडु तथा कर्नाटक

10 बैठकों/ संगोष्ठियों/ कार्यशालाओं/ सम्मेलनों आदि में सहभागिता

आलोच्य अवधि के दौरान विभिन्न संस्थान, संगठनों आदि के द्वारा प्रत्यक्ष/ऑनलाइन रूप में आयोजित 115 विविध बैठकों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों आदि में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

लोकार्पण हेतु चिह्नित कंगनी किस्म-एफएक्सवी 647

अनाज उपज	:	28 क्विंटल/हेक्टेयर
चारा उपज	:	58 क्विंटल/हेक्टेयर
कटाई हेतु दिन	:	85-88 दिन
प्रमुख विशेषताएं	:	मजबूत, अवश्यन रोधी वृद्धि, उत्पादक कल्लों की संख्या ज्यादा, सघन पुष्पगुच्छ, बड़े आकार के बीज
संस्तुत राज्य	:	कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश वर्षा आधारित खरीफ एवं सिंचित ग्रीष्म की स्थिति

11 बैठकें, प्रक्षेत्र दिवस तथा प्रदर्शनियां

अंतर्राष्ट्रीय पोषक-अनाज सम्मेलन 6.0

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के सहयोग से न्यूट्रीहब के द्वारा 17 - 19 अक्टूबर, 2024 के दौरान तीन दिवसीय आईएनसीसी 6.0 (अंतर्राष्ट्रीय पोषक-अनाज सम्मेलन) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित नीति निर्माता, शोधकर्ता तथा उद्योग विशेषज्ञ एक मंच पर एकत्र हुए एवं श्री अन्न के भविष्य पर चर्चा की। यह सम्मेलन सरकारी अधिकारियों, उद्योगपतियों, शोधकर्ताओं तथा नवोद्यमियों सहित श्री अन्न क्षेत्र के हितधारकों के लिए कृषि एवं पोषण में श्री अन्न के भविष्य पर चर्चा हेतु एक महत्वपूर्ण मंच था। श्री अन्न को एक सतत एवं स्वस्थ विकल्प के रूप में बढ़ावा देने के प्रयोजन से इस कार्यक्रम में गंभीर तकनीकी सत्रों, प्रदर्शनियों और नेटवर्किंग अवसरों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति श्री पी प्रसाद, माननीय कृषि मंत्री, केरल ने अनुसंधान तथा विकास सम्मेलन का उद्घाटन किया। डॉ. तिलकराज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) सम्मानीत अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. सीएच श्रीनिवास राव, निदेशक, भाकृअनुप-राकृअनुप्रअ ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ. सागर हनुमान सिंह, महानिदेशक, रावस्वाप्रसं, डॉ. राज भंडारी, सदस्य एनटीबीएन, डॉ. वेंकटेश भट, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं तथा निदेशक, न्यूट्रीहब एवं डॉ. बी दयाकर राव, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, न्यूट्रीहब तथा राष्ट्रीय संयोजक एवं डॉ. संगप्पा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं तथा आयोजन सचिव भी उपस्थित थे। डॉ. एस श्रीविद्या और डॉ. वी एम मालती, वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं की ने इस सत्र का संचालन किया।

उप महानिदेशक का दौरा

डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) तथा डॉ. डी के यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने 10 मई, 2024 को भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान का दौरा किया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने डॉ. शर्मा को संस्थान में संचालित अनुसंधान कार्य एवं उनमें हुई प्रगति के बारे में जानकारी दी। उप महानिदेशक के साथ भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों के चर्चा सत्र के दौरान, डॉ. तारा सत्यवती ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं की उपलब्धियों और श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के निर्माण कार्य की प्रगति पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। डॉ. तिलक राज शर्मा ने विश्व के समक्ष पोषक तथा स्वास्थ्यवर्धक आहार के रूप में श्री अन्न को प्रस्तुत करने में भारत के योगदान पर बल दिया और वैज्ञानिकों से मूल्यवर्धन तथा विभिन्न प्रौद्योगिकियों के माध्यम से वैश्विक बाजार में श्री अन्न के बेहतर प्रदर्शन का आग्रह किया।

उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप का दौरा

उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र (श्रीवैउकें) के अंतर्गत जारी गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा हेतु 29 नवंबर, 2024 को भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद का दौरा किया। केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) दल ने उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) को श्रीवैउकें भवन, प्रक्षेत्र अनुसंधान संकुल तथा फार्म शेड के निर्माण गतिविधियों की प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने भाश्रीअनुसं में विकसित अत्याधुनिक जीनोमिक्स तथा आणविक प्रजनन अनुसंधान सुविधाओं का भी दौरा किया तथा वैज्ञानिकों के साथ विभिन्न प्रयोगों पर चर्चा की। भाश्रीअनुसं के निदेशक ने उप महानिदेशक के समक्ष एक विस्तृत प्रस्तुति दी, जिसमें श्री अन्न पर श्रीवैउकें के सात प्रमुख घटकों एवं गतिविधियों की प्रगति को रेखांकित किया।

डॉ. राकेश सी अग्रवाल, उप महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप का दौरा

डॉ. आर सी अग्रवाल, उप महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप ने 21 अगस्त 2024 को भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद का दौरा किया। संस्थान में डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक एवं अन्य वैज्ञानिकों ने उनका स्वागत किया। डॉ. अग्रवाल ने श्री अन्न प्रदर्शन प्रक्षेत्र, सामान्य सुविधा केंद्र, श्री अन्न मूल्यवर्धन पर उत्कृष्टता केंद्र तथा न्यूट्रीहब का दौरा किया। उन्होंने श्री अन्न उत्पादन, प्रसंस्करण और उद्यमिता विकास पर श्री अन्न प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम तथा छात्रों के लिए भी श्री अन्न पाठ्यक्रम के विकास पर निदेशक एवं वैज्ञानिकों के साथ बैठक की।

कृषकों में उन्नत प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण हेतु प्रक्षेत्र दिवस एवं बीज वितरण कार्यक्रम

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान हैदराबाद द्वारा प्रवर्तित बेट्टाडा बसवेश्वरा किसान उत्पादक कंपनी के द्वारा कर्नाटक के रायचूर जिले के जक्कलदिनी गांव में 3 जून, 2024 को श्री अन्न बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। किसानों को डॉ. संगप्पा एवं डॉ. अमसिद्ध, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं के द्वारा सावां (सीबीवाईएमवी-1, डीएचबीएम 93-2), कुटकी (सीएलएमवी-1) तथा बहु-कट चारा ज्वार (सीएसएच 24एमएफ) के बीज निःशुल्क प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान डॉ. संगप्पा ने श्री अन्न मूल्यवर्धन, स्वास्थ्य तथा किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के माध्यम से विपणन संपर्क बनाने के महत्व पर बल दिया। डॉ. अमसिद्ध ने श्री अन्न के सतत श्री अन्न बीज संग्रह की स्थापना हेतु सर्वोत्तम खेती तकनीकों एवं कार्यनीतियों के बारे में सविस्तार बताया। इस कार्यक्रम में 50 से ज़्यादा किसानों ने भाग लिया। इस पहल से श्री अन्न उत्पादन को बढ़ावा मिलने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होने तथा रायचूर जिले में किउसं किसानों के आर्थिक कल्याण को बढ़ावा मिलने की आशा है।

छोटे जुगाली करने वाले पशुओं एवं मुर्गीपालन पर प्रक्षेत्र दिवस सह प्रशिक्षण

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) परियोजना के अंतर्गत डॉ. संगप्पा एवं किउसं नेस्ट दल के द्वारा कर्नाटक के हुलसूर गांव में 13 जून 2024 को “स्थायी आजीविका हेतु भेड़, बकरी एवं मुर्गी उत्पादन” नामक एक दिवसीय प्रक्षेत्र प्रदर्शन आयोजित किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बीदर (केवीएएफएसयू, बीदर), भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद और हुलसूर महिला किसान मिलेट उत्पादक कंपनी लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में कर्नाटक राज्य के बीदर जिले के बसवकल्याण, भालकी, बीदर और हुमनाबाद खंडों से कुल 50 किसानों ने भाग लिया। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, किउसं नेस्ट दल ने प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व से अवगत कराया।

स्कोटा किउसं के किउसं किसानों को फसल खेती राशन कार्ड पर प्रक्षेत्र दिवस

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा प्रवर्तित शृंगवरापु स्कोटा रैतु भारत किउसं ने 6 जुलाई, 2024 को कृषि तथा राजस्व विभागों और नाबार्ड अधिकारियों की सहायता से स्कोटा खंड में टिमिडी गांव के किउसं किसानों हेतु फसल खेती राशन कार्ड (सीसीआरसी) अभियान पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। प्रक्षेत्र दिवस के दौरान, कृषि अधिकारियों एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों ने रैतु भरोसा तथा पीएम किसान योजनाओं के महत्व पर प्रकाश डाला और किसान कल्याण सुनिश्चित करने के लिए इन योजनाओं तक पहुंचने तथा उनका उपयोग करने की प्रक्रियाओं का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में फसल की खेती में सर्वोत्तम कृषि कार्यों पर सत्र भी शामिल थे, जिसमें स्थायी कृषि तकनीकों पर बल दिया गया। किसानों को उपज एवं आय में सुधार के लिए इन तरीकों को अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया। तिमिडी गांव में लगभग 45 किसानों ने बैठक में भाग लिया। डॉ. संगप्पा ने श्री नागार्जुन डीडीएम विजयनगरम की सहायता से इस प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया।

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में दक्षिण अफ्रीका प्रतिनिधि मंडल के साथ प्रक्षेत्र दिवस

दुंदुबी किउसं के श्री वेंकटैया, श्री विष्णुवास रेड्डी, श्री नरेश और डॉ. मुरलीधर रेड्डी ने 20 जुलाई 2024 को प्रक्षेत्र दिवस में भाग लिया तथा भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में भाश्रीअनुसं दल और दक्षिण अफ्रीकी देश की वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की। प्रक्षेत्र दिवस का उद्देश्य भाश्रीअनुसं एवं दक्षिण अफ्रीकी देशों के बीच अनुसंधान सहयोग को मजबूत करना था। किसानों ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के विभिन्न अनुसंधान सुविधाओं, प्रयोगात्मक कृषि क्षेत्रों, जीन संग्रह, न्यूट्रीहब तथा उत्पादन संयंत्रों का दौरा किया। उन्होंने श्री

अन्न की खेती, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन में अत्याधुनिक अनुसंधान एवं प्रगति का अवलोकन किया। दक्षिण अफ्रीकी वैज्ञानिकों के साथ चर्चा ने वैश्विक अनुसंधान प्रथाओं और संभावित सहयोगी अवसरों में बहुमूल्य सूक्ष्म दृष्टि प्रदान की।

भाश्रीअनुसं द्वारा प्रवर्तित टेकमल किउसं में किसान वैज्ञानिक संवाद एवं किसान प्रक्षेत्र दिवस

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के किउसं-नेस्ट दल एवं कृषि ड्रोन परियोजना दल ने 21 अगस्त 2024 को टेकमल मंडल किसान सहकारी समिति की सहायता से मेदक जिले के कुसंगी गांव में किसान वैज्ञानिक संवाद बैठक और ड्रोन छिड़काव प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप - भाश्रीअनुसं कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं तथा अपने संबोधन में उन्होंने कपास और धान के खेतों में प्रभावी छिड़काव के लिए कृषि में प्रौद्योगिकी अपनाने और ड्रोन उपयोग के महत्व पर बल दिया। इसके अलावा उन्होंने टेकमल किउसं की गतिविधियों और नई तकनीक अपनाने के प्रयासों की सराहना की। डॉ. गंगय्या, प्रधान वैज्ञानिक ने ड्रोन की परिचालन प्रक्रियाओं के बारे में बताया तथा डॉ. संगप्पा, वैज्ञानिक ने एडीपी कार्यक्रम के प्रभावी उपयोग में किउसं के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. संगप्पा, डॉ. गंगय्या, डॉ. राजेश, डॉ. स्वर्णा एवं डॉ. रफी ने ड्रोन छिड़काव प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन एवं समन्वय किया।

उन्नत कृषि मशीनीकरण पर किसान दिवस

श्री के श्रीनिवास बाबू, डॉ. संगप्पा और डॉ. रफी, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने लंबसिंगी किउसं के साथ 29 अगस्त 2024 को एआरएस, रागोलू, श्रीकाकुलम में "उन्नत कृषि मशीनीकरण" विषय पर किसान प्रक्षेत्र दिवस में भाग लिया। इस दौरे का उद्देश्य खेती की दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए सीड ड्रिल, प्रेसिजन प्लांटर्स, हार्वेस्टर और थ्रेशर जैसी आधुनिक कृषि मशीनों से परिचित कराना था। इस कार्यक्रम में किउसं के लिए स्टॉल भी लगाया गया और किसानों को ज्यादा कुशल और टिकाऊ खेती के तरीकों के लिए इन नवाचारों को अपनाने का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया। इसके अलावा लंबसिंगी किउसं ने भी अपने मूल्यवर्धित उत्पादों का प्रदर्शन किया तथा 12000 का व्यापार किया।

भाश्रीअनुसं द्वारा प्रवर्तित टेकमल किउसं में किसानों हेतु श्री अन्न प्रक्षेत्र दिवस

डॉ. संगप्पा और भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के किउसं-नेस्ट दल ने तेलंगाना के मिलेट मैन श्री वीर शेट्टी के साथ मिलकर 29 अगस्त 2024 को टेकमल मंडल के दाडेपल्ले गांव में श्री अन्न उत्पादकों के लिए श्री अन्न प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। यह प्रक्षेत्र दिवस, टेकमल किउसं के माध्यम से भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा वितरित निःशुल्क बीज प्राप्त श्री अन्न किसानों के खेतों में आयोजित किया गया। श्री वीर शेट्टी ने श्री अन्न के पुष्पगुच्छों की जांच करके प्रमुख कटाई तकनीकों का प्रदर्शन किया और श्री अन्न प्रसंस्करण विधियों के बारे में जानकारी साझा की, जो किसानों को अपनी प्रथाओं को बेहतर बनाने में सहायक हैं। इस कार्यक्रम में कुल 45 किसान शामिल हुए। डॉ. संगप्पा ने इसका आयोजन और समन्वय किया।

बेट्टाडा बसवेश्वर किउसं, कर्नाटक में सावां बीज उत्पादन प्रक्षेत्र दिवस

डॉ. संगप्पा तथा डॉ. अमसिद्ध, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं हैदराबाद द्वारा प्रवर्तित बेट्टाडा

बसवेश्वर किसान उत्पादक कंपनी में 12 सितंबर 2024 को सावां बीज उत्पादन प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। डॉ. अमसिद्ध ने श्री अन्न की किस्मों, खेती के महत्व एवं कटाई तकनीकों के बारे में सविस्तार जानकारी दी। डॉ. संगप्पा ने जक्कलडिन्नी गांव को श्री अन्न बीज उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित करने का सुझाव दिया। हैदराबाद के श्री अन्न उद्यमी श्री अनिल रचमल्ला ने श्री अन्न बीज उत्पादन में योगदान के लिए किउसं के प्रयासों की सराहना की।

टेकमल में श्री अन्न के माध्यम से फसल विविधीकरण एवं श्री अन्न मूल्यवर्धन पर किसान प्रक्षेत्र दिवस

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद, ईएसएएफ फाउंडेशन और भाश्रीअनुसं द्वारा प्रवर्तित टेकमल एफपीसीएस के द्वारा 24 सितंबर 2024 को पलवंचा गांव, टेकमल मंडल, मेदक जिले में "श्री अन्न के माध्यम से फसल विविधीकरण और श्री अन्न का मूल्य-वर्धन" पर एक किसान प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। तेलंगाना के मिलेट मैन श्री वीर शेट्टी तथा भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों द्वारा श्री अन्न खेती के तरीकों, स्वास्थ्य लाभों एवं पोषण संबंधी गुणों के बारे में बताया गया। सभी किसानों को पलवंचा गांव के चकली साई और पुली सुभाष के कंगनी खेतों में ले जाया गया और उन्हें कंगनी की कटाई विधियां दिखाई गईं। तत्पश्चात स्थानीय किउसं की महिलाओं को शामिल करके, छिलका हटाए गए अनाज का उपयोग मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए गए। डॉ. संगप्पा और श्री के रामकिरण ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के तांडवा वैली तथा श्री अल्लूरी किउसं के द्वारा प्रक्षेत्र दिवस

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद द्वारा प्रवर्तित तांडवा वैली बागवानी और कृषि एफपीएमएसीएस लिमिटेड और श्री अल्लूरी किउसं एमएसीएस लिमिटेड ने किसानों को टिकाऊ कृषि प्रथाओं और जैविक खेती तकनीकों में शामिल करने के लिए अक्तूबर 2024 में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। तांडवा वैली किउसं ने 22 अक्तूबर को पयाकारोपटा खंड़ के केशवराम व राजावरम गांवों में कार्यक्रम आयोजित किया, जहां मंडल कृषि अधिकारी श्री आदिनारायण ने किसानों को धान के खेतों में पीड़क संक्रमण के प्रबंधन की सलाह दी और फसल वृद्धि हेतु कल्लन अवस्था में जैविक छिड़काव की सिफारिश की। इसी तरह, 30 अक्तूबर को श्री अल्लूरी एफपीओ ने श्री अन्न कटाई और कटाई उपरांत के मार्गदर्शन हेतु हुकुमपेटा खंड़ के पोढ़ी गांव में एक पोलंबडी सत्र आयोजित किया।

12 विशिष्ट आगंतुक

क्र.सं.	नाम	संपर्क	तिथि
1	पी प्रसाद	कृषि मंत्री, केरल सरकार	3 फरवरी, 2024
2	बी अशोक	ए.पी.सी., केरल	3 फरवरी, 2024
3	बी मीना कुमारी	भूतपूर्व उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप एवं भूतपूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण कोचीन	6 फरवरी, 2024
4	विन्सेंट वैड्ज़	आईआरडी-फ्रांस, भूतपूर्व-इक्रिसेट	21 मार्च, 2024
5	अलेक्जेंडर ग्रोंडिन	आईआरडी-फ्रांस	21 मार्च, 2024
6	आर सी अग्रवाल	उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), भाकृअनुप	21 मार्च, 2024
7	एच एस गुप्त	अध्यक्ष, असम कृषि आयोग	1 अक्टूबर, 2024
8	एल मदन कुमार रेड्डी	उप मुख्य कार्यपालक अधिकारी (दक्षिण क्षेत्र), केयूआईसी	18 दिसंबर, 2024

डॉ. राजीव वार्ष्णेय, निदेशक, सेंटर फॉर क्रॉप्स एंड फूड इनोवेशन, मर्डोक यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया ने 4 जनवरी, 2024 को भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं का दौरा किया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक और अन्य वैज्ञानिकों ने प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने तथा जीनोमिक्स, आनुवंशिकी, आणविक प्रजनन अनुसंधान में योगदान हेतु उन्हें सम्मानित किया। डॉ. वार्ष्णेय ने परस्पर हित के मुद्दों पर भाश्रीअनुसं दल के साथ विस्तृत चर्चा की। उन्होंने उत्कृष्टता केंद्र, प्रौद्योगिकी व्यवसाय उष्मायक तथा अन्य श्री अन्न प्रसंस्करण सुविधाओं का भी दौरा किया।

डॉ. पी बी कीर्ति, एग्री बायोटेक फाउंडेशन, हैदराबाद तथा भूतपूर्व प्रोफेसर, पादप विज्ञान, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने 16 जनवरी, 2024 को भाश्रीअनुसं का दौरा किया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती ने उन्हें भाश्रीअनुसं की वर्तमान अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने भाश्रीअनुसं वैज्ञानिकों से विचार-विमर्श किया।

श्री नीरज प्रजापति, श्री अन्न प्रचारक : कश्मीर से कन्याकुमारी (4200 किमी) तक साइकिल यात्रारत श्री नीरज प्रजापति ने 17 जनवरी, 2024 को भाश्रीअनुसं का दौरा किया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने पूरे देश में श्री अन्न को लोकप्रिय बनाने के उनके अद्वितीय प्रयासों के लिए उन्हें सम्मानित किया।

केरल के माननीय कृषि मंत्री का दौरा

श्री पी प्रसाद, माननीय कृषि मंत्री, केरल ने 3 फरवरी, 2024 को भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद का दौरा किया। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने उन्हें भाश्रीअनुसं में संचालित अनुसंधान और विकास गतिविधियों से अवगत कराया, जिसमें जीवनशैली से जुड़े रोगों को दूर करने के लिए पोषक अनाज के रूप में श्री अन्न के सेवन के स्वास्थ्य लाभ शामिल थे। डॉ. बी दयाकर राव के द्वारा माननीय कृषि मंत्री को भाश्रीअनुसं में उत्कृष्टता केंद्र तथा न्यूट्रीहब सहित सभी श्री अन्न प्रसंस्करण सुविधाएं दिखाई गईं। माननीय मंत्री ने किउसं, स्वयं सहायता समूह एवं अन्य अभिकरणों के गठन के माध्यम से बेहतर विपणन संबंधों के साथ शहरी एवं उपनगरीय क्षेत्रों में श्री अन्न आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों को बढ़ावा देने हेतु ज्यादा काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने किसानों के लिए बेहतर आय सुनिश्चित करने के लिए गांवों में ही प्रसंस्करण मशीनों की स्थापना का भी सुझाव दिया, ताकि श्री अन्न को प्रक्षेत्र द्वार के पास ही प्रसंस्करण के माध्यम से संसाधित किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर डॉ. (श्रीमती) नीरजा प्रभाकर, कुलपति, एसकेएलटीएसएचयू, तेलंगाना का दौरा

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान ने 8 मार्च, 2024 को 'इन्वेस्ट इन वुमन-एक्सीलेरेट प्रोग्रेस' विषय पर "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस-2024" मनाया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. (श्रीमती) नीरजा प्रभाकर, कुलपति, एसकेएलटीएसएचयू, तेलंगाना ने भाश्रीअनुसं के कर्मचारियों के साथ चर्चा की तथा बेहतर समाज के लिए शिक्षा और जीवन कौशल के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व पर एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने श्री अन्न खाद्य पदार्थ संबंधी अपने संस्मरण तथा दैनिक आहार में श्री अन्न शामिल करने के महत्व को साझा किया।

पेरुमल रामासामी, कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए का दौरा

डॉ. पेरुमल रामासामी, प्रोफेसर - ज्वार व श्री अन्न प्रजनन, कैनसस स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने श्री अन्न को बढ़ावा देने

के लिए संचालित अनुसंधान गतिविधियों, श्री अन्न प्रसंस्करण व मूल्यवर्धन, व्यवसाय ऊष्मायन, उद्यमिता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में ज्ञानवर्धन के लिए 04 मार्च, 2024 को संस्थान का दौरा किया। उन्होंने निदेशक की उपस्थिति

में वैज्ञानिकों के साथ, वैश्विक आवश्यकताओं के पूर्तिकर्ता के रूप में भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के साथ भावी संभावित सहयोग पर चर्चा की। उन्होंने अनुसंधान की गुणता बढ़ाने के लिए पीएचडी छात्र कार्यक्रम में सहयोग का भी सुझाव दिया। डॉ. कर्णम वेंकटेश, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने जीन संग्रह की गतिविधियों और श्री अन्न जननद्रव्य संग्रह के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने संस्थान में संचालित गतिविधियों को समझने के लिए उत्कृष्टता केंद्र, न्यूट्रीहब और प्रसंस्करण इकाइयों का भी दौरा किया। उनके समक्ष व्यावसायीकरण के लिए विकसित और मानकीकृत विविध श्री अन्न खाद्य उत्पादों और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।

उत्तर प्रदेश के मंत्री का दौरा

श्री सूर्य प्रताप शाही, माननीय कृषि मंत्री और श्री बलदेव सिंह औलख, माननीय कृषि राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश ने 28 अगस्त,

2024 को भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान (भाश्रीअनुसं) का दौरा किया। डॉ. बी दयाकर, प्रभारी निदेशक ने उनका स्वागत किया। गणमान्य विद्वजनों ने श्री अन्न जननद्रव्य इकाई का दौरा किया तथा श्री अन्न की उन्नत खेती प्रदर्शन का अवलोकन किया। उन्होंने बीज प्रसंस्करण इकाई का भी दौरा किया, जहां विभिन्न प्रसंस्करण तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। श्री सूर्य प्रताप शाही के द्वारा टिकाऊ कृषि और नवाचार में श्री अन्न के महत्व पर बल देते संबोधन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय आईटीईसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग के रूप में एशियाई व अफ्रीकी देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों का दौरा

आईसीटी केंद्र, मैनेज, हैदराबाद ने 4 - 17 दिसंबर 2024 के दौरान मैनेज, हैदराबाद में «कृषि में आईसीटी के अनुप्रयोग» पर एक अंतर्राष्ट्रीय आईटीईसी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में कृषि में आईसीटी की परिवर्तनकारी भूमिका का पता लगाने हेतु एशियाई व अफ्रीकी देशों के 30 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी शामिल हुए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के भाग के रूप में श्री अन्न की खेती तथा संवर्धन में आईसीटी के एकीकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु 11 दिसंबर

2024 को भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद का दौरा किया। डॉ. संगप्पा, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं ने श्री अन्न मूल्य शृंखला के सिंहावलोकन, किसान उत्पादक संगठनों (किउसं) की भूमिका और श्री अन्न को बढ़ावा देने तथा किसानों के समर्थन हेतु भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा की गई विभिन्न पहलों के बारे में सविस्तार बताया। डॉ. के एन गणपति, डॉ. एस अविनाश सिंगोडे तथा डॉ. के वेंकटेश, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं ने श्री अन्न के पोषण व आर्थिक पहलुओं पर बहुमूल्य जानकारी साझा की। प्रतिभागियों को जीन संग्रह का दौरा कराया गया तथा भावी कृषि उन्नयन हेतु आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने में भाश्रीअनुसं के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। इसके अलावा आधुनिक कृषि पद्धतियों पर चर्चा, श्री अन्न की खेती की तकनीकों के सिंहावलोकन हेतु प्रक्षेत्र दौरा भी शामिल था।

सचिव (कृषि एवं किसान कल्याण) और संयुक्त सचिव आईएनएम, महानिदेशक, मैनेज का दौरा

डॉ. देवेश चतुर्वेदी आईएएस, सचिव (कृषि एवं किसान कल्याण), कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, तथा डॉ. योगिता

राणा आईएएस, संयुक्त सचिव (आईएनएम) एवं महानिदेशक, मैनेज ने 29 सितंबर, 2024 को भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं का दौरा किया। निदेशक द्वारा उनका स्वागत करके श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र तथा महर्षि परियोजनाओं पर संक्षिप्त परिचय दिया गया, तत्पश्चात उन्होंने श्री अन्न प्रदर्शन प्रक्षेत्र, सामान्य सुविधा केन्द्र, न्यूट्रीहब और श्री अन्न मूल्यवर्धन पर उत्कृष्टता केंद्र का दौरा किया। वे भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं में उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु संपादित कार्यों व सुविधाओं से अत्यंत प्रभावित हुए। संयुक्त सचिव ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट के अंतर्गत पूर्वोत्तर राज्य में न्यूट्रीहब जैसी सुविधा का प्रस्ताव रखा।

छात्र एवं किसान आगंतुक

क्र.सं.	तिथि	आगमन	आगंतुक संख्या
छात्र			
1	17 जनवरी, 2024	केन्द्रीय विद्यालय, हैदराबाद	250
2	17 जनवरी, 2024	केरल कृषि विश्वविद्यालय, वेल्लानिक्कारा, केरल	100
3	8 जनवरी, 2024	एसआरएम विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, चेन्नई	80
4	10 फरवरी, 2024	स्नातक विज्ञान अंतिम वर्ष कृषि महाविद्यालय, कलबुर्गी	60
5	27 फरवरी, 2024	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़, कर्नाटक	62
6	28 फरवरी, 2024	केएल विश्वविद्यालय, हैदराबाद	37
7	27 फरवरी, 2024	बीजापुर, कर्नाटक	85
8	28 फरवरी, 2024	गोकाराजू रंगाराजू इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, हैदराबाद	30
9	7 मार्च, 2024	स्नातकोत्तर पीसी जाबिन साइंस कॉलेज, हुबली, कर्नाटक	30
10	7 मार्च, 2024	स्नातक कृषि अंतिम वर्ष, एसआरएस कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी वेदसंदूर, अगरम, तमिलनाडु	225
11	11 मार्च, 2024	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबतूर	109
12	3 अप्रैल, 2024	नम्माझवार कृषि एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, कामुदी, तमिलनाडु	80
13	18 अप्रैल, 2024	केएसएनयूएएचएस, शिवमोग्गा, कर्नाटक	
14	10 जुलाई, 2024	एससीएसपीए, कृषि महाविद्यालय, आष्टी, बीड और लातूर, महाराष्ट्र	88
15	27 अगस्त, 2024	कृषि महाविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र	23
16	14 अगस्त, 2024	श्रमशक्ति कॉलेज ऑफ फूड टेक्नोलॉजी	60
17	6 सितंबर, 2024	सेंट मैरी कॉलेज, हैदराबाद के बीबीए छात्र	30
18	19 सितंबर 2024	केलाडी शिवप्पा नायक कृषि और बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय (केएसएनयूएएचएस), शिवमोग्गा, कर्नाटक	55
19	21 अक्टूबर, 2024	लोकमंगल कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी, वडाला, सोलापुर	20
20	7 नवंबर, 2024	स्नातकोत्तर पोषण, सेंट ऐन्स कॉलेज फॉर विमेन, मेहदीपटनम	95
21	16 दिसंबर, 2024	फीनिक्स ग्लोबल स्कूल, राजमुंदरी, आंध्र प्रदेश	70

क्र.सं.	तिथि	आगमन	आगंतुक संख्या
22	17 दिसंबर, 2024	रानी लक्ष्मी भाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय	45
किसान			
1	4 जनवरी, 2024	तमिलनाडु	21
2	8 जनवरी, 2024	एटा, उत्तर प्रदेश	25
3	16 जनवरी, 2024	भुसावल, महाराष्ट्र	9
4	22 जनवरी, 2024	शहरी ग्रामीण एग्रोफ्लाई किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड, महाराष्ट्र	
5	29 जनवरी, 2024	कृषि विभाग, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश	10
6	25 जनवरी, 2024	विकाराबाद, तेलंगाना	25
7	5-6 फरवरी, 2024	तमिलनाडु	60
8	7 फरवरी, 2024	डिंडोरी, मध्य प्रदेश	31
9	08 फरवरी, 2024	ठाणे एवं पालघर, महाराष्ट्र	14
10	21 फरवरी, 2024	सेलम, तिरुनेलवेली और विल्लुपुरम, तमिलनाडु	20
11	22 फरवरी, 2024	राष्ट्रीय सहाय सेवाश्रम परिषद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश	35
12	23 फरवरी, 2024	डिंडोरी, मध्य प्रदेश	35
13	6 मार्च, 2024	कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश	35
14	6 मार्च, 2024	मध्य प्रदेश	25
15	14 मार्च, 2024	कोरापुट, ओडिशा	30
16	4 जुलाई , 2024	कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), नासिक	40
17	1 जुलाई, 2024	तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडु	25
18	30 जुलाई, 2024	तिरुनेलवेली, तमिलनाडु	25
19	5 सितंबर, 2024	आदिलाबाद	
20	10 सितंबर, 2024	बिहार	30
21	24 सितंबर, 2024	विरुधुनगर, तमिलनाडु	20
22	9 अक्टूबर, 2024	आत्मा, रामनाथपुरम, तमिलनाडु	20
23	23 अक्टूबर, 2024	तिरुपुर, तमिलनाडु	30
24	19-20 नवंबर, 2024	आत्मा, तमिलनाडु	40
25	4 दिसंबर, 2024	असम	15

13

कार्मिक

31 दिसंबर, 2024 की स्थिति

डॉ. सी तारा सत्यवती,
निदेशक

वैज्ञानिक

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विषय
1	डॉ. बी दयाकर राव	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि आर्थिकी
2	डॉ. जी श्याम प्रसाद	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
3	डॉ. अरुणा सी रेड्डी	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
4	डॉ. बी वेंकटेश भट्ट	प्रधान वैज्ञानिक	आनुवंशिकी एवं कोशिकानुवंशिकी
5	डॉ. बी गंगय्या	प्रधान वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान
6	डॉ. एन कन्न बाबू	प्रधान वैज्ञानिक	बीज प्रौद्योगिकी
7	डॉ. ए वी उमाकांत	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
8	डॉ. आई के दास	प्रधान वैज्ञानिक	पादप रोगविज्ञान
9	डॉ. पी जी पद्ममजा	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
10	डॉ. बी सुब्बारायुडु	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
11	डॉ. के हरिप्रसन्ना	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
12	डॉ. पी राजेन्द्र कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी
13	डॉ. राजेन्द्र आर चापके	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि विस्तार
14	डॉ. ए कलैसेकर	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
15	डॉ. डी बालकृष्णा	प्रधान वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी
16	डॉ. टी नोपोलियन	प्रधान वैज्ञानिक	आनुवंशिकी
17	डॉ. पी संजना रेड्डी	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
18	डॉ. के एन गणपति	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
19	डॉ. जे स्टेनली	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
20	डॉ. आर वेंकटेश्वर्लु	वरिष्ठ वैज्ञानिक	जीव-रसायन
21	डॉ. अनुराधा नरेला	वरिष्ठ वैज्ञानिक	कृषि अर्थशास्त्र
22	डॉ. अविनाश सिंगोडे	वरिष्ठ वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
23	डॉ. वेंकटेश कर्णम	वरिष्ठ वैज्ञानिक	आनुवंशिक तथा पादप प्रजनन
24	डॉ. डी सेवा नायक	वरिष्ठ वैज्ञानिक	कार्यिकी
25	श्री के श्रीनिवास बाबु	वैज्ञानिक	कृषि कीटविज्ञान
26	श्री पी मुकेश	वैज्ञानिक	कंप्यूटर अनुप्रयोग
27	सुश्री हेमशंकरी	वैज्ञानिक	कृषि अभियांत्रिकी
28	डॉ. जी राजेश	वैज्ञानिक	पादप रोगविज्ञान
29	डॉ. जिनु जेकब	वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी
30	डॉ. संगप्पा चिल्लर्गे	वैज्ञानिक	कृषि विस्तार
31	डॉ. अमसिद्ध बेलुंडगी	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
32	श्री ए श्रीनिवास	वैज्ञानिक	कृषि विस्तार

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विषय
33	डॉ. सूगण्ण	वैज्ञानिक	बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
34	डॉ. दीपिका चेरुकु	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
35	डॉ. स्वर्णा रोणंकी	वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान
36	डॉ. श्री एस विद्या	वैज्ञानिक	पादप कार्यिकी
37	डॉ. वी एम मालती	वैज्ञानिक	जीव रसायन
	रबी ज्वार केंद्र, सोलापुर, महाराष्ट्र		
38	डॉ. बसवराज रायगोंड	वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी	पादप प्रजनन
39	डॉ. परशुराम पत्रोटी	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन
	क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र - बाजरा, गुड़ामालानी, बाड़मेर, राजस्थान		
40	डॉ. शैलेन्द्र नाथ सक्सेना	प्रधान वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष	पादप कार्यिकी
41	डॉ. गोपी किशन	वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान
	बाजरा पर अभासअनुप, परियोजना समन्वयक एकक, जोधपुर		
42	डॉ. विकास खंडेलवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक	पादप प्रजनन

तकनीकी स्टाफ

नाम	श्रेणी
श्री एच एस गावली	मुख्य तकनीकी अधिकारी
श्रीमती डी रेवती	मुख्य तकनीकी अधिकारी
श्री डी एम बहादुरे	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
डॉ. महेश कुमार	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
श्री एस नरेन्द्र	तकनीकी अधिकारी (इलेक्ट्रिशियन)
डॉ. वी रवि कुमार	तकनीकी अधिकारी (कंप्यूटर)
श्री रघुनाथ कुलकर्णी	तकनीकी अधिकारी (प्रक्षेत्र/फार्म)
श्री अघाव विलास ज्ञानोबा	तकनीकी अधिकारी (प्रक्षेत्र अधीक्षक)
डॉ. पी वी राजप्पा	तकनीकी अधिकारी (प्रक्षेत्र/फार्म)
श्री सुरभी नरेश	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
सुश्री उषा सतीजा	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री प्रशांत भूसारी	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री जे भगवंतम	तकनीकी सहायक
श्री सी भीक्षपति	वरिष्ठ तकनीशियन
श्री साई कार्तिक	वरिष्ठ तकनीशियन
श्री मंत्री कुमार स्वामी	वरिष्ठ तकनीशियन
श्री जी चिमनलाल	वरिष्ठ तकनीशियन
श्री राहुल पांडेय	तकनीशियन
श्री सुमित कुमार	तकनीशियन
श्री शैख अब्दुल गनी	तकनीशियन
श्री सुमित कुमार (त्यागी)	तकनीशियन
रबी ज्वार केंद्र, सोलापुर, महाराष्ट्र	
श्री ए आर लिंबोरे	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
श्री आर एम पाटील	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री वाई एस क्षीरसागर	वरिष्ठ तकनीशियन
क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र-बाजरा, गुड़ामालानी, बाड़मेर, राजस्थान	
श्री कन्हैया लाल अठ्या	तकनीशियन

वरिष्ठ प्रशासनिक स्टाफ

नाम	पदनाम
श्रीमती ऋतु दलाल	वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री शेख रुकमान	वित एवं लेखा अधिकारी
श्री शिवप्रसाद पेरुमल्ला	प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती वी एस जी पार्वती	सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती जी सरस्वती	सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्री डी रामबाबू	सहायक प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती एन कनक दुर्गा	निजी सचिव
श्रीमती ए उषा रानी	निजी सचिव
श्री एस राममूर्ती	निजी सचिव
श्री ए नदाफ	सहायक
श्री के सुरेश कुमार	सहायक
श्री मो इनायतुद्दीन	सहायक
श्री अभिजीत	सहायक
सुश्री एम सुस्मिता	सहायक
श्री बबलू कुमार	सहायक
श्री मोहम्मद शादाब	सहायक
सुश्री अमनदीप कौर	सहायक

कुशल सहायक कर्मचारी

नाम	पदनाम
जे नरसिंह	कु.स.क.
श्रीमती जी प्रमीला	कु.स.क.
श्रीमती पार्वतम्मा	कु.स.क.
श्री अमृत राज संतोष	कु.स.क.
रबी ज्वार केंद्र, सोलापुर, महाराष्ट्र	
श्री जे वी छत्रे	कु.स.क.
श्री मलिक धर्मा नन्वारे	कु.स.क.

संस्थान में नवनियुक्त कार्मिक

नाम	पदनाम	कार्यभार ग्रहण तिथि
श्री सुमित कुमार	टी-1	06 मई 2024
श्री राहुल पांडेय	टी-1	06 मई 2024
श्री कन्हैया लाल अठ्या	टी-1	06 मई 2024
श्री शैख अब्दुल गनी	टी-1	09 मई 2024
श्री अभिजीत	सहायक	26 अगस्त 2025
श्री बबलू कुमार	सहायक	09 सितंबर 2024
सुश्री एम सुस्मिता	सहायक	10 सितंबर 2024
श्री मोहम्मद शादाब	सहायक	23 सितंबर 2024
सुश्री अमनदीप कौर	सहायक	30 सितंबर 2024
श्री सुमित कुमार (त्यागी)	टी-1	05 नवंबर 2024
श्री शिवप्रसाद पेरुमल्ला	प्रशासनिक अधिकारी	21 नवंबर 2024

पदोन्नत कार्मिक

नाम	पदोन्नति पूर्व	पदोन्नति पश्चात
डॉ. के एन गणपति	वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक
डॉ. जे स्टेनली	वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक
डॉ. डी सेवा नायक	वैज्ञानिक	वरिष्ठ वैज्ञानिक
श्रीमती डी रेवती	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	मुख्य तकनीकी अधिकारी
सुश्री उषा सतीजा	तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री प्रशांत भूसारी	तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री एस नरेश	तकनीकी सहायक	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री मंत्री कुमार स्वामी	तकनीशियन	वरिष्ठ तकनीशियन

सेवा-निवृत्त कार्मिक

नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्त तिथि
डॉ. के बी आर एस विशारदा	प्रधान वैज्ञानिक	31 मई, 2024
डॉ. के वी राघवेन्द्र राव	मुख्य तकनीकी अधिकारी	31 अगस्त, 2024
श्री ओ वी रमणा	मुख्य तकनीकी अधिकारी	31 अगस्त, 2024

दुखःद निधन

नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्त तिथि
श्री जी सोमय्या	कुशल सहायक कर्मचारी	23 जनवरी 2024

14 प्रमुख गतिविधियां

75वां गणतंत्र दिवस समारोह

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रभक्ति, उत्साह व उमंग के साथ 26 जनवरी, 2024 को देश का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। भाश्रीअनुसं की निदेशक डॉ. सी तारा सत्यवती ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर कर्मचारियों को संबोधित किया। इस अवसर पर निदेशक ने अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष-2023 महोत्सव की सफलता हेतु भाश्रीअनुसं के सभी कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का उल्लेख किया। निदेशक ने देश में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए समर्पण की आवश्यकता तथा भविष्य में भी उत्साहपूर्ण भागीदारी, समन्वय एवं सामूहिक कार्यों की आवश्यकता बताई। उन्होंने आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ 2023 के उत्पादक प्रदर्शन को दोहराने पर बल दिया। समारोह में भाश्रीअनुसं स्टाफ व उनके बच्चों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. बी अमसिद्ध, वैज्ञानिक और श्री जे भगवंतम, तकनीकी सहायक (प्रक्षेत्र अनुभाग) व उनके दल ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

भाश्रीअनुसं का स्थापना दिवस समारोह

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 9 फरवरी, 2024 को अपना "9वां स्थापना दिवस" मनाया। डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन तेलंगाना की माननीय राज्यपाल और पुडुचेरी की उपराज्यपाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। डॉ. एस एल मेहता, भूतपूर्व उप महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप, भूतपूर्व कुलपति, मप्रकृप्रौविवि, उदयपुर तथा डॉ. जैकलीन डी ‹एरोस ह्यूज, महानिदेशक, इक्रिसेट सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। हैदराबाद स्थित विभिन्न भाकृअनुप संस्थानों के निदेशक, भाश्रीअनुसं के भूतपूर्व निदेशक डॉ. एन सीतारामा तथा भूतपूर्व कार्यकारी निदेशक डॉ. सी वी रत्नावती ने भी इस अवसर पर समारोह की शोभा बढ़ाई।

प्रारंभ में, डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने अपने स्वागत भाषण में, संस्थान की ऐतिहासिक भूमिका एवं भावी पृष्ठभूमी पर प्रकाश डाला। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023 के दौरान संस्थान में संपन्न विभिन्न गतिविधियों और श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के रोडमैप के बारे में जानकारी प्रदान की।

अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य अतिथि डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन, तेलंगाना की माननीय राज्यपाल ने दैनिक जीवन में स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थों के रूप में श्री अन्न के महत्व तथा श्री अन्न को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के समर्थन पर प्रकाश डाला। डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन ने भाश्रीअनुसं, प्रगतिशील किसानों, श्री अन्न उद्यमियों द्वारा समर्थित श्रेष्ठ किउसं को पुरस्कार और स्मृति चिह्न वितरित किए और भाश्रीअनुसं के श्रेष्ठ कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए तथा क्यूआरटी के अध्यक्ष और आरएसी के सदस्य के रूप में भाश्रीअनुसं को सहायता प्रदान करने हेतु डॉ. एस एल मेहता को सम्मानित किया। समारोह से पहले, राज्यपाल ने भाश्रीअनुसं के न्यूट्रीहब में सभी श्री अन्न प्रसंस्करण इकाइयों, श्री अन्न उत्कृष्टता केंद्र, स्टार्टअप और ऊष्मायन सुविधाओं का भी दौरा किया।

डॉ. जैकलिन ह्यूज ने अपने संबोधन में न्यूनतम आगत के साथ लाखों श्री अन्न किसानों के राजस्व को बढ़ाने के लिए भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं और इक्रिसेट के बीच सहयोग को मजबूत करने के संबंध में चर्चा की। डॉ. एस एल मेहता, भूतपूर्व महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप ने भारत में श्री अन्न अनुसंधान पर एक संक्षिप्त संबोधन दिया।

डॉ. जैकलीन ह्यूज और डॉ. एस एल मेहता ने सभी श्रेणियों के कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र वितरित किए। इस अवसर पर, «अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023 के दौरान भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं द्वारा संचालित श्री अन्न गतिविधियां», «भारत

में श्री अन्न सुधार» तथा «भारत में श्री अन्न के पंजीकृत आनुवंशिक भंडार» नामक तीन पुस्तकें विमोचित की गईं। इसके अलावा भाश्रीअनुसं के शोध अध्येताओं, छात्रों और कर्मचारियों ने कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-2024 समारोह

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर 28 फरवरी, 2024 को स्प्रिंगफील्ड हाई स्कूल, राजेंद्रनगर में एक जागरूकता कार्यक्रम चलाया। इस वर्ष विज्ञान दिवस का विषय ‹विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकियां था›। भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों ने सातवीं और आठवीं कक्षा के लगभग 50 छात्रों से विज्ञान दिवस के महत्व पर चर्चा की। चूंकि श्री अन्न हमारे देश में सबसे मूल्यवान स्वदेशी प्रौद्योगिकियों में से एक है, वैज्ञानिकों ने श्री अन्न के महत्व, श्री अन्न के प्रकार और उनके स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताया। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों को अपने दैनिक आहार में श्री अन्न शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री अन्न नमूनों को प्रदर्शित करते हुए उनके बारे में समझाया गया। संपूर्ण व्याख्यान के दौरान छात्रों ने उत्साहपूर्वक चर्चा में भाग लिया। उन्हें आस्वादन हेतु श्री अन्न नाश्ते दिए गए। डॉ. जिनु जेकब और डॉ. दीपिका सी ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान ने 8 मार्च को ‘महिलाओं में निवेश, प्रगति में तेजी’ विषय पर "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस-2024” मनाया। डॉ. के बी आर एस विशारदा, प्रधान वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं ने स्वागत भाषण दिया और मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) नीरजा प्रभाकर, कुलपति, एसकेएलटीएसएचयू, तेलंगाना ने भाश्रीअनुसं के कर्मचारियों के साथ चर्चा की और बेहतर समाज के लिए शिक्षा और जीवन कौशल के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व पर एक विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने श्री अन्न खाद्य पदार्थ संबंधी अपने संस्मरण तथा दैनिक आहार में श्री अन्न शामिल करने के महत्व को साझा किया। निदेशक, भाश्रीअनुसं ने भी भाश्रीअनुसं के कर्मचारियों को संबोधित किया। भाश्रीअनुसं के सभी स्टाफ सदस्यों ने

उत्साहपूर्वक उक्त सत्र में भाग लिया और महिला दिवस के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. श्रीविद्या, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

“विश्व बौद्धिक संपदा दिवस” समारोह

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 30 अप्रैल, 2024 को “विश्व बौद्धिक संपदा दिवस- 2024” का आयोजन किया। डॉ. एस के सोम, अध्यक्ष, आईसीएम प्रभाग, राकृअनुप्रअ, हैदराबाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा उन्होंने बौद्धिक संपदा दिवस के विषय «आईपी और एसडीजी : नवाचार और रचनात्मकता के साथ हमारे साझा भविष्य का निर्माण» पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में परियोजना कर्मचारियों सहित संस्थान के सभी कर्मचारी शामिल हुए। डॉ. बी अमसिद्ध, वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

ज्वार पर अभासअनुप तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप की संयुक्त वार्षिक समूह बैठकें

क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र, आएनजीरंकृविवि, तिरुपति के द्वारा बाजरा पर अभासअनुप, ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप, भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में 27-28 जून, 2024 को बाजरा पर अभासअनुप की 59वीं वार्षिक, ज्वार पर अभासअनुप की 54वीं वार्षिक तथा लघु श्री अन्न पर अभासअनुप की 35वीं वार्षिक समूह बैठकें संयुक्त रूप से आयोजित की गई। डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने बैठक का उद्घाटन किया। तीन दिवसीय बैठक में भाकृअनुप संस्थानों के निदेशकों, बाजरा, ज्वार और लघु श्री अन्न केंद्रों पर अभासअनुप, इक्रिसेट, निजी क्षेत्र, भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान (भाश्रीअनुसं), हैदराबाद के वैज्ञानिकों तथा अन्य हितधारकों सहित लगभग 500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 27 जून, 2024 को गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ, तत्पश्चात भाकृअनुप गीत और आएनजीरंकृविवि गीत गायन हुआ। डॉ. तिलक राज

शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा मंच पर अन्य गणमान्य व्यक्ति - डॉ. आर शारदा जयलक्ष्मी देवी, कुलपति, आएनजीरंकृविवि (विशिष्ट अतिथि), डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) (विशिष्ट अतिथि), डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं तथा परियोजना समन्वयक - बाजरा, डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक - ज्वार एवं लघु श्री अन्न, डॉ. पी वी सत्यनारायण, अनुसंधान निदेशक, आएनजीरंकृविवि, तथा डॉ. वी सुमति, अनुसंधान सह-निदेशक, क्षेकृअनुकें, तिरुपति उपस्थित थे।

आरंभ में डॉ. वी सुमति ने वार्षिक सामान्य बैठक में आए गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. पी वी सत्यनारायण ने उद्घाटन भाषण दिया। डॉ. सी तारा सत्यवती ने बाजरे पर शोध की मुख्य विशेषताएं प्रस्तुत कीं और डॉ. आर मधुसूदन ने ज्वार तथा लघु श्री अन्न पर शोध की मुख्य विशेषताएं प्रस्तुत कीं। डॉ. एस के प्रधान ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने बताया कि खाद्यान्न तो पर्याप्त है, परंतु अभी भी पोषण संबंधी पर्याप्तता में कमी है, जिसके लिए श्री अन्न सबसे व्यवहार्य विकल्प है। श्री अन्न की खेती को लाभदायक बनाने के लिए इसकी उत्पादकता बढ़ानी होगी। आएनजीरंकृविवि की कुलपति डॉ. शारदा जयलक्ष्मी देवी ने महसूस किया कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली में श्री अन्न को शामिल करने से श्री अन्न का उत्पादन और खपत बढ़ेगी। श्री अन्न किसानों को प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है।

डॉ. तिलक राज शर्मा ने श्री अन्न के समग्र सुधार और लोक-प्रियकरण के लिए सुझाव दिए। उन्होंने बताया कि बाजरा एक प्रमुख श्री अन्न फसल है, जो श्री सकल अन्न के उत्पादन का 50% से ज्यादा है और दुनिया में 90 मिलियन लोगों का भोजन है। बाजरे में संकर विकास हेतु नई नर-बंध्य प्रणाली की पहचान और उपयोग लक्षित किया जाना चाहिए। अभा-सअनुप केंद्रों को जैविक तनावों के लिए प्रतिरोधी स्रोतों की पहचान पर काम करना चाहिए और उन्हें प्रतिरोधी किस्मों के विकास के लिए प्रजनन कार्यक्रमों में शामिल होना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के दौरान 4 पुस्तकों, 15 तकनीकी बुलेटिन और पुस्तिकाओं का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। बाद के सत्रों में, ज्वार एवं लघु श्री अन्न, दोनों के विभिन्न विषयों के प्रधान अन्वेषकों ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। दूसरे दिन - डॉ ईश्वर रामी रेड्डी, आईआईएसईआर, तिरुपति द्वारा "विकासशील जलवायु - लचीली फसलों के लिए जड़ और प्रकंद इंजीनियरिंग" पर एक विशेष अतिथि व्याख्यान दिया गया। तत्पश्चात डॉ. तिलक राज शर्मा, डॉ एस के प्रधान तथा डॉ एस एस माने, सदस्य, पीएएमसी ने परियोजनाओं पर अपनी टिप्पणियां दीं। अंत में, वी सुमति, एडीआर, क्षेकृअनुकें, तिरुपति ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

किस्म पहचान समिति की बैठक

डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप की अध्यक्षता में 27 जून, 2024 को अपराह्न 5.30 बजे आभासी एवं प्रत्यक्ष रूप में किस्म पहचान समिति की बैठक हुई। डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप सह-अध्यक्ष थे। बैठक में अन्य सदस्य : डॉ. आर शारदा जयलक्ष्मी देवी, कुलपति, आएनजीरंकृविवि, (विशेष आमंत्रित); डॉ. डी के यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भाकृअनुप; डॉ. संजय कुमार, निदेशक, भाकृअनुप-भाबीअनुसं, मऊ; डॉ. पी वी सत्यनारायण, अनुसंधान निदेशक, आएनजीरंकृविवि, श्री ए ब्रिटो, क्षेत्रीय प्रबंधक, राबीनि, सिकंदराबाद; श्री एन संपत कुमार, जिला प्रबंधक, एपीएसएसडीसी लिमिटेड, विजयवाड़ा; डॉ. प्रभाकर, भूतपूर्व परियोजना समन्वयक, लघु श्री अन्न पर अभासअनुप, डॉ. सी अरुणा (ज्वार प्रजनन), डॉ. बी गंगय्या (ज्वार सस्य विज्ञान व कार्यिकी), डॉ. आई के दास (ज्वार रोगविज्ञान), डॉ. ए वी उमाकांत (मीठी ज्वार प्रजनन); डॉ. बी वेंकटेश भट (चारा ज्वार प्रजनन); डॉ. के हरिप्रसन्ना (लघु श्री अन्न - प्रजनन); डॉ. टी एस सुकन्या (लघु श्री अन्न - सस्य विज्ञान); डॉ. पलन्ना (लघु श्री अन्न - रोगविज्ञान); डॉ. प्रभु सी गणिगेर (लघु श्री अन्न - कीट विज्ञान); डॉ. विकास खंडेलवाल, भाकृअनुप-अभासअनुप बाजरा एवं सदस्य सचिव - डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं और परियोजना समन्वयक, अभासअनुप-बाजरा; और डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक, अभासअनुप-ज्वार एवं श्री अन्न शामिल थे। कुल 22 प्रस्ताव (बाजरा-2, ज्वार-13 और लघु श्री अन्न-7) प्राप्त हुए। समिति ने विभिन्न क्षेत्रों/राज्यों के लिए बाजरा, ज्वार, लघु श्री अन्न के प्रस्तावों की गंभीरता से जांच की और 14 (बाजरा-2, ज्वार-6 और लघु श्री अन्न-6) प्रस्तावों की लोकार्पण हेतु पहचान की।

अनुसंधान प्रगति और वैज्ञानिक गतिविधियों की केंद्रवार समीक्षा

इस कार्यक्रम से पूर्व, वार्षिक सामूहिक बैठक 2024 के हिस्से के रूप में डॉ. एस के प्रधान, सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल), भाकृअनुप की अध्यक्षता में 5-7 जून 2024 के दौरान आभासी रूप में अनुसंधान प्रगति, वैज्ञानिक गतिविधियों एवं कार्य योजना की केंद्रवार समीक्षा की गई। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक-भाश्रीअनुसं और परियोजना समन्वयक - बाजरा तथा डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक, ज्वार एवं श्री अन्न ने परियोजना सलाहकार और निगरानी समिति के अध्यक्ष तथा विशेषज्ञ सदस्यों - डॉ. ओ पी यादव, डॉ. एम वी सी गौड़ा, और डॉ. एस एस माने (पादप रोगविज्ञान), तथा सभी प्रभारी अधिकारी एवं अभासअनुप केंद्रों के प्रतिभागियों तथा भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के वैज्ञानिकों का स्वागत किया। डॉ. एस के प्रधान ने अपने उद्घाटन भाषण में पोषक खाद्य पदार्थों के रूप में लघु श्री अन्न के महत्व का उल्लेख किया। अभासअनुप केंद्रों के प्रभारी अधिकारियों ने केंद्र पर संचालित अनुसंधान, प्रमुख क्षेत्रों, परिणामों, कमियों और भावी अनुसंधान हेतु कार्य-नीतियों पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। विभिन्न विषयक समूहों, प्रधान अन्वेषकों, संबंधित निजी चिकित्सकों और निदेशक, भाश्रीअनुसं के बीच विस्तृत चर्चा के माध्यम से 2024-25 के लिए तकनीकी कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया।

"ज्वार क्षेत्र एवं उत्पादन में सुधार हेतु कार्य-नीति विकास" पर गहन विचार-विमर्श

अनुसंधान सलाहकार समिति की अनुशंसा के अनुसार 19 जून 2024 को भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में ऑनलाइन रूप में "ज्वार क्षेत्र एवं उत्पादन में सुधार हेतु कार्य-नीति विकास" पर गहन विचार-विमर्श सत्र आयोजित किया गया। इसकी कार्यसूची - ज्वार क्षेत्र में गिरावट के कारणों पर चर्चा करना और सुधारात्मक उपाय निकालना था। बैठक में सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के ज्वार शोधकर्ताओं सहित पंसद और अनुसस के सदस्यों और लब्ध-प्रतिष्ठ वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया गया।

डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और ज्वार के क्षेत्र में कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए बैठक का उद्देश्य बताया। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सभी शोध प्रयासों के बावजूद, क्षेत्र में भारी कमी आई है। अब समय आ गया है कि इस गिरावट के कारणों को समझने के लिए आत्ममंथन किया जाए और ज्वार के क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कार्यनीति तैयार की जाए। तत्पश्चात ज्वार की खेती के विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुतियां दी गईं। डॉ. बी दयाकर राव ने "ज्वार उत्पादन, खपत और उपयोग पर अनुसंधान और विकास को मजबूत करना" पर विस्तृत प्रस्तुति दी। डॉ. सी अरुणा ने खरीफ ज्वार में अनुसंधान के अवसरों पर प्रस्तुति दी। उन्होंने भाश्रीअनुसं में खरीफ ज्वार अनुसंधान की वर्तमान स्थिति और उपज के गैर-खाद्य उपयोगों के लिए काम करने की संभावनाओं पर प्रस्तुति दी। डॉ. बी वेंकटेश भट ने चारा ज्वार अनुसंधान में अवसरों पर प्रस्तुति दी। डॉ. ए वी उमाकांत ने मीठी ज्वार के अनुसंधान का सिंहावलोकन और मीठी ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में सुधार के अवसरों पर प्रकाश डाला। डॉ. आर मधुसूदन, परियोजना समन्वयक - ज्वार व श्री अन्न ने रबी ज्वार अनुसंधान की स्थिति और अवसरों पर प्रकाश डाला। पौधे आकारिकी पर काम करके रबी संकर प्रजनन पर हाल के प्रयासों के बारे में बताया। डॉ. एफ्रेम, ज्वार प्रजनक, इक्रिसेट ने ज्वार क्षेत्र और उत्पादन बढ़ाने के अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया। विचार-विमर्श के दौरान ज्वार की खेती में आने वाली विभिन्न समस्याओं पर सुझाव व टिप्पणियां प्रस्तुत की गईं तथा उन्हें दूर करने के लिए कुछ कार्यनीतियां बनाई गईं। डॉ. ओ पी यादव, निदेशक, केशुक्षेअनुसं, जोधपुर, डॉ. प्रभाकर, भूतपूर्व परियोजना समन्वयक - लघु श्री अन्न, बैंगलोर और भाश्रीअनुसं-आरएसी के कई सदस्य, इक्रिसेट के अन्य विशेषज्ञ आदि ने भी अपनी बात रखी।

हिंदी कार्यशाला

भाकृअनुप - भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 24 जून, 2024 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, भूतपूर्व प्रभारी एवं उप निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे। कार्यशाला के प्रारंभ में डॉ. जिनु जेकब, वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिंदी कक्ष ने अतिथि वक्ता एवं कार्यशाला में उपस्थित सहभागियों का स्वागत किया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हमारे संस्थान में राजभाषा कार्यान्यन सुचारु रूप से संचालित है और हमें संस्थान में आयोजित होने वाली इस तरह की कार्यशालाओं का पूरा लाभ उठाते हेतु राजभाषा कार्यान्वयन को तेज गति के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस तरह की कार्यशालाओं के आयोजन से संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन में तेजी आएगी।

श्री तिवारी जी ने “मानक हिंदी तथा हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन” विषय पर अतिथि व्याख्यान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण देते हुए मानक हिंदी के स्वरूप एवं लाभ के संबंध में जानकारी प्रदान की। इसके अलावा उन्होंने कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले टिप्पण एवं पत्रों में हिंदी प्रयोग के आसान तरीके बताते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं का निराकरण किया। अंत में डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यशाला का समापन हुआ। उक्त कार्यशाला में वैज्ञानिक, प्रशासनिक व तकनीकी सभी संवर्ग के कुल 35 सहभागियों ने भाग लिया। इस पूरी कार्यशाला का समन्वय एवं संचालन डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती के दिशा-निर्देश में डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान ने 21 जून 2024 को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाया। इस अवसर पर डॉ. के बी आर एस विशारदा, भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भाश्रीअनुसं को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस वर्ष योग दिवस का विषय "स्वयं व समाज के लिए योग" था। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने कर्मचारियों का स्वागत किया तथा बताया कि योग हमें मजबूत बनाने में सहायता प्रदान करता है, जिससे समृद्ध स्वास्थ्य प्राप्त होता है और ज्यादा सकारात्मक व सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण होता है। डॉ. विशारदा ने योग प्रदर्शन के साथ-साथ, कर्मचारियों को उनके लाभ से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि योग दैनंदिन कार्यालय कार्यों में दल भावना एवं संचार शक्ति को बढ़ाता है। भाश्रीअनुसं के स्थाई व अस्थाई, सभी कार्मिकों ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में प्रक्षेत्र दिवस

दुंदुबी किउसं के श्री वेंकटैया, श्री विष्णुवास रेड्डी, श्री नरेश और डॉ. मुरलीधर रेड्डी ने 20 जुलाई 2024 को प्रक्षेत्र दिवस में भाग लिया और भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में भाश्रीअनुसं दल और दक्षिण अफ्रीकी देश की वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की। प्रक्षेत्र दिवस का उद्देश्य भाश्रीअनुसं एवं दक्षिण अफ्रीकी देशों के बीच अनुसंधान सहयोग को मजबूत करना था। यात्रा के दौरान, किसानों ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के विभिन्न अनुसंधान सुविधाओं, प्रयोगात्मक कृषि क्षेत्रों, जीन संग्रह, न्यूट्रीहब तथा उत्पादन संयंत्रों का दौरा किया। उन्होंने श्री अन्न की खेती, प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन में अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रगति का अवलोकन किया। दक्षिण अफ्रीकी वैज्ञानिकों के साथ बातचीत ने वैश्विक अनुसंधान प्रथाओं और संभावित सहयोगी अवसरों में बहुमूल्य सूक्ष्म दृष्टि प्रदान की। डॉ. संगप्पा, डॉ. रफी ने इस दौरे का समन्वय किया।

हिंदी चेतना मास

भाकृअनुप - भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में आज 18 सितंबर, 2024 को हिंदी चेतना मास समारोह का उद्घाटन किया गया। समारोह का शुभारंभ सरस्वति वंदना से हुआ, तत्पश्चात भाकृअनुप गान का प्रदर्शन हुआ। डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह के शुभारंभ की घोषणा की। डॉ. जिनु जेकब, वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी, हिंदी कक्ष ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा बताया कि इस तरह के समारोह मुख्य रूप से सभी को हिंदी के प्रति आकर्षित करने हेतु आयोजित किए जाते हैं जोकि हमारा ध्येय है। तत्पश्चात डॉ. तारा सत्यवती ने संस्थान के सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई।

इस अवसर पर श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री के संदेश तथा डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अपील का वाचन किया। इसके अलावा डॉ. महेश कुमार ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान करके 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं अतः इस बार हम राजभाषा हीरक जयंती उत्सव मना रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित की जा रही विभिन्न प्रतियोगिताओं (आशुभाषण प्रतियोगिता, टिप्पण एवं आलेखन, अनुवाद, अंत्याक्षरी, हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतीकरण आदि) तथा हिंदी में

हस्ताक्षर अभियान के संबंध में जानकारी प्रदान की।

डॉ. तारा सत्यवती ने इस अवसर पर अपने संबोधन में संस्थान के अधिकारियों को हिंदी चेतना मास समारोह के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएं दी तथा कहा कि अगले दो दिन आयोजित होने वाली अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक के बावजूद वैज्ञानिकों की उपस्थिति हिंदी के प्रति उनके सम्मान को दर्शाती है। उन्होंने बताया कि भाषा संप्रेषण का प्रमुख साधन होती है और हिंदी तो भारत की विविधता में एकता को संजोए हुए है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि हमें लक्ष्यों के अनुरूप काम करते हुए कम-से-कम सभी अधिकारियों को अपने हस्ताक्षर अवश्य ही हिंदी में करने चाहिए और इस हेतु हमने एक आदेश भी जारी किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन की गगनचुंबी सफलताएं प्राप्त करेगा। अंत में डॉ. महेश कुमार के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन, तत्पश्चात राष्ट्रगान के बाद समारोह का समापन हुआ। इस पूरे कार्यक्रम का समन्वय तथा संचालन डॉ. सी तारा सत्यवती के दिशा-निर्देश में डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024

किउसं नेस्ट, भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने सार्वजनिक और संस्थागत कार्य क्षेत्रों में सामूहिक नागरिक भागीदारी के माध्यम से स्वच्छता और पर्यावरणीय दायित्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए 22 सितंबर 2024 को "स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता" विषय पर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया। भाश्रीअनुसं द्वारा आयोजित इस अभियान में संस्थान के परिसर, सार्वजनिक क्षेत्रों, मुख्य सड़कों, सामान्य शौचालयों तथा खुले स्थानों में सफाई, अपशिष्ट संग्रह, पृथक्करण और उचित निपटान शामिल था। इस गतिविधि के माध्यम से, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में सहयोग शक्ति और स्वच्छता के महत्व को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में किउसं नेस्ट कर्मचारियों व स्थानीय नागरिकों सहित कुल 50 नागरिक शामिल थे। डॉ. संगप्पा, वैज्ञानिक और डॉ. रफी, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने कार्यक्रम का आयोजन व समन्वयन किया।

भारत तथा विश्व स्तर पर श्री अन्न हेतु भावी अनुसंधान एवं विकास कार्यनीति - गोलमेज चर्चा

भारत तथा विश्व स्तर पर श्री अन्न के भविष्य पर विचार-विमर्श हेतु एक गोलमेज चर्चा का आयोजन किया गया। गोलमेज चर्चा के प्रारंभ में डॉ. राज भंडारी, सदस्य, एनटीबीएन ने जलवायु लचीलेपन तथा वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए श्री अन्न के महत्व पर बल दिया। डॉ. दयाकर राव, सीईओ, न्यूट्रीहब तथा डॉ. शेख एन. मीरा, निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, हैदराबाद ने प्रमुख अनुसंधान एवं विकास प्राथमिकताओं के बारे में चर्चा की। डॉ. राव ने स्वास्थ्य प्रभावों और हितधारकों की आवश्यकताओं को संबोधित करने वाले व्यापक अनुसंधान के महत्व पर बल दिया, साथ ही किसानों के सामने आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला। डॉ. मीरा ने श्री अन्न की पौष्टिक-औषधीय क्षमता पर चर्चा की तथा फसल की निगरानी व जांच हेतु स्वचालन तथा ब्लॉकचेन जैसे तकनीकी नवाचारों का प्रस्ताव रखा।

देश भर से आए विभिन्न प्रतिभागियों ने श्री अन्न खेती के विस्तार, बेहतर किसान आय के लिए मूल्यवर्धन में सुधार तथा प्रभावी फसल प्रणालियों की पहचान हेतु बाजार विकास पर चर्चा की। पोषण संबंधी प्रोफाइल को बढ़ाने के लिए कार्बन फुटप्रिंट आकलन पद्धतियों को विकसित करने तथा अन्य उच्च मूल्य वाले खाद्य उत्पादों के साथ श्री अन्न को एकीकृत करने पर विशेष ध्यान दिया गया। अध्यक्ष एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ गोलमेज चर्चा का समापन हुआ। तत्पश्चात भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान में उत्कृष्टता केंद्र (सीओई), सामान्य सुविधा केंद्र (सीएफसी) तथा न्यूट्रीहब का दौरा कराया गया।

पाककला प्रदर्शन

शेफ विकास चावला, संस्थापक, कोर हास्पिटालिटी सोल्युशन ने श्री अन्न से निर्मित नए नए व्यंजन पर केंद्रित पाककला के प्रत्यक्ष प्रदर्शन का आयोजन किया। इस सत्र में श्री अन्न के पोषण संबंधी लाभों पर बल दिया गया तथा उन्हें दैनिक आहार में शामिल करने से स्वास्थ्य के सकारात्मक परिणाम के बारे में बताया गया।

डॉ. बी दयाकर राव, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, न्यूट्रीहब, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं तथा राष्ट्रीय संयोजक के उद्घाटन भाषण के साथ आईएनसीसी 6.0 "स्टार्ट-अप कन्वेंशन" शुरू हुआ। उन्होंने प्रारंभ में प्रतिभागियों का स्वागत किया और पोषण व सतत कृषि में श्री अन्न के महत्व पर बल दिया। सम्मेलन में सम्मानीत अतिथि के रूप में उपस्थित उच्च सरकारी पदाधिकारियों - डॉ. अशोक दलवाई, आईएएस, भूतपूर्व सीईओ, एनआरएए, डॉ. जी नरेंद्र कुमार, आईएएस, महानिदेशक, एनआईआरडीपीआर, श्री संजय अग्रवाल, भूतपूर्व सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, प्रो वी पी शर्मा, अध्यक्ष, सीएसीपी तथा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित श्री पी प्रसाद, माननीय कृषि मंत्री, केरल तथा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री गणेश जोशी, माननीय कृषि मंत्री, उत्तराखंड सरकार ने स्टार्ट-अप कन्वेंशन के अपने विचार प्रस्तुत किए।

स्टार्ट-अप प्रदर्शनी

इस कार्यक्रम में 100 से ज्यादा स्टार्टअपों ने भाग लिया, जो श्री अन्न क्षेत्र में बढ़ती रुचि को दर्शाता है। इनमें न्यूट्रीहब द्वारा समर्थित लगभग 55 स्टार्टअपों ने अपने अभिनव उत्पादों व सेवाओं का प्रदर्शन किया। इन स्टार्टअपों की भागीदारी ने केवल क्षेत्र के भीतर उद्यमशीलता की भावना को उजागर ही नहीं, बल्कि उन्हें संभावित निवेशकों और साझेदारों हेतु बहुमूल्य ज्ञानवर्धन भी प्रदान किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) और भाकृअनुप के निर्देशानुसार भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं में 28 अक्टूबर से 3 नवंबर 2024 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 का विषय "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" था। इसका शुभारंभ 28 अक्टूबर, 2024 को पूर्वाह्न 11 बजे अखंडता की शपथ लेने के साथ हुआ । इसी तरह, क्षेत्रीय केंद्रों - रबी ज्वार अनुसंधान केंद्र सोलापुर तथा क्षेत्रीय बाजरा अनुसंधान केंद्र गुड़ामालानी में भी शपथ ली गई। कर्मचारियों में जागरूकता व जिम्मेदारी की भावना लाने हेतु सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि" पर निबंध लेखन प्रतियोगिता, "एक विकसित राष्ट्र हेतु भ्रष्टाचार मुक्त भारत" विषय पर भाषण प्रतियोगिता एवं सतर्कता संबंधी प्रश्नों के साथ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन कार्यक्रमों के अलावा विद्यालय एवं ग्राम सभाओं में भी सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

आदर्श विद्यालय हाई स्कूल, राजेंद्रनगर के विद्यार्थियों हेतु 29 अक्तूबर 2024 को "विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत" विषय पर जागरूकता कार्यक्रम सह निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने विकसित राष्ट्र के लिए सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने के महत्व, भ्रष्टाचार उन्मूलन के उपायों तथा सतर्क नागरिकों

की आवश्यकता पर बल दिया। भाकृअनु-भाश्रीअनुसं हैदराबाद तथा हुलसूर महिला किसान मिलेट्स उत्पादक कंपनी (किउसं), बीदर ने कर्नाटक के बीदर जिले के हुलसूर तालुका के हलहल्ली गांव में 3 नवंबर, 2024 को संयुक्त रूप से सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम किउसं कर्मचारियों, निदेशकों और अंशधारक किसानों के बीच सतर्कता और नैतिक आचरण के महत्व के संबंध में जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु आयोजित किया गया था। स.जा.स. 2024 का समापन कार्यक्रम 4 नवंबर 2024 को आयोजित किया गया। निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं ने कर्मचारियों को संबोधित किया और कार्यप्रणाली में ज्यादा पारदर्शिता लाने हेतु उठाए गए विभिन्न उपायों की जानकारी दी तथा कार्यों में अनुशासन व पारदर्शिता की आवश्यकता पर बल दिया।

जय जवान किसान कार्यक्रम के अंतर्गत सेना, नौसेना व वायु सेना के अधिकारियों का दौरा

मैनेज, हैदराबाद तथा पुनर्वास महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय द्वारा 08 नवंबर 2024 को आयोजित जय जवान किसान कार्यक्रम के हिस्से के रूप में सेना, नौसेना और वायु सेना के 47 अधिकारियों ने भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद का दौरा किया। डॉ. संगप्पा ने श्री अन्न में व्यावसायिक अवसरों पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया और भाश्रीअनुसं किउसं की गतिविधियों के बारे में चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने किउसं की मौजूदा वस्तुओं को प्रदर्शित करके कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश किउसं के बारे में जानकारी साझा की। इस यात्रा ने रक्षा कर्मियों को सेवानिवृत्ति के बाद आजीविका के रूप में कृषि आधारित उद्यमों पर विचार हेतु प्रेरित किया। डॉ. संगप्पा और सुश्री चांदिनी, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं में स्वच्छता पखवाड़ा अभियान

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं के पर्यवेक्षण में16 दिसंबर, 2024 को स्वच्छता शपथ के साथ स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। सभी कर्मचारियों ने इस पखवाड़े के दौरान संचालित गतिविधियों में भाग लिया। इस अभियान के एक हिस्से के रूप में, भाश्रीअनुसं परिसर में कार्यालय रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण और ई-ऑफिस कार्यान्वयन का निरीक्षण किया, पुराने रिकॉर्ड, फर्नीचर व कबाड़ सामग्री को हटाया गया, कार्यालयों, गलियारों, प्रयोगशाला तथा प्रक्षेत्रों एवं संस्थान परिसर की सफाई गतिविधियां शामिल स्वच्छता अभियान चलाया गया।

संस्थान द्वारा दत्तक ग्रहण ग्राम में स्वच्छता, सफाई और खुले में शौच से मुक्ति हेतु जागरूकता पैदा की गई। ग्रामीण लोगों को शामिल करते हुए सफाई संबंधी गतिविधियां चलाई गईं।

आवासीय कॉलोनियों में कचरा प्रबंधन, जैविक कचरे का उपयोग/कचरे से आय सृजन, पॉलीथीन मुक्त होने के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा की गई। रसोई उद्यानों में जैविक खेती के तरीकों का प्रदर्शन किया गया। वहां रहने वाले लोगों को शामिल करके शहरी क्षेत्रों की सफाई की गई।

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में, कार्यस्थल व उसके इतर स्वास्थ्य जागरूकता एवं स्वच्छता गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 17 दिसंबर 2024 को डॉ. हिमा बिंदु, चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य केंद्र भाकृअनुप-राकृअनुप्रअ, हैदराबाद का "व्यक्तिगत स्वच्छता व स्वच्छता" पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

15

आधारिक संरचना का विकास

संस्थान के द्वारा जीनोमिक्स, कार्यात्मक जीनोमिक्स, आणविक प्रजनन, पोषक तत्व विश्लेषण, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन अनुसंधान हेतु नवीनतम उच्चस्तरीय उपकरण खरीदे गए।

जीनोमिक्स, कार्यात्मक जीनोमिक्स, आणविक प्रजनन अनुसंधान

नैनोपोर-प्रोमेथियन जीनोम सीक्वेंसर

डिजिटल पीसीआर

क्यू पीसीआर

आनुवंशिक विश्लेषक

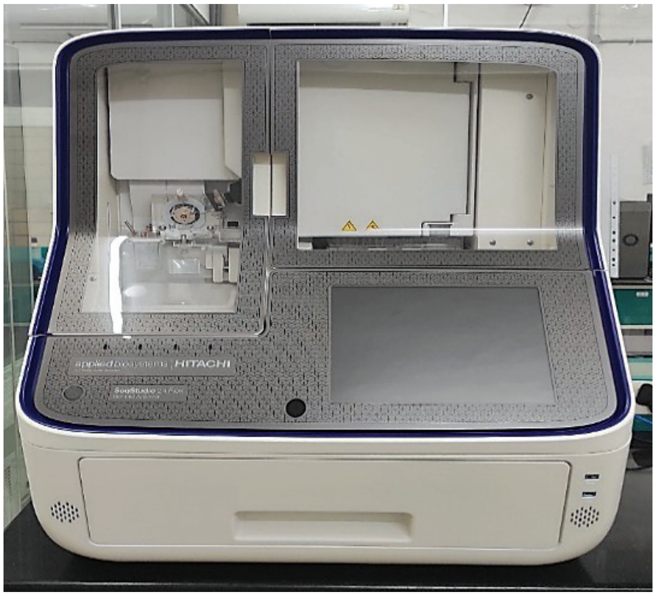

पोषक तत्व विश्लेषण

स्वचालित खाद्य रेशे विश्लेषक

माइक्रोवेव पाचन तंत्र

माइक्रोवेव राख प्रणाली

उन्नत माइक्रोस्कोपी

क्रायो अल्ट्रा माइक्रोटोम

पूर्णतः स्वचालित प्रतिदीप्ति स्टीरियो माइक्रोस्कोप

कटाई उपरातं प्रयुक्त मशीनें

बहु-श्री अन्न थ्रेशर

पुष्पगुच्छ थ्रेशर

प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन

डी हस्कर

पल्वराइज़र

डिहल्लर

मिक्सोग्राफ

एफटी-एनआईआर

पूर्णतः स्वचालित शीत

पूर्णतः स्वचालित ब्रेड लाइन

प्रीक्लीनर सह ग्रेडर सह एस्पिरेटर

- **श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र अनुसंधान परिसर:** वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत विश्व स्तरीय आणविक प्रयोगशालाओं एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण सुविधाओं का निर्माण कार्य शुरू किया गया तथा यह तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है।
- **ओटीसी-पॉलीकार्बोनेट ओपन टॉप स्ट्रक्चर:** श्री अन्न फसलों की गर्मी व सूखे के प्रति सहनशीलता की जांच के लिए नई सुविधा तैयार की गई।
- **एकॉस्टिक एन्कलोज़र युक्त 500 केवीए डीजी सेट:** बिजली विफलताओं के दौरान परिसर में निरंतर बिजली की आपूर्ति।
- **बीटी सड़क का पुनः निर्माण:** कृषि वाहनों की उचित आवाजाही तथा कृषि कार्यों के लिए संस्थान के आर्बरेटम तथा टेरेस प्रक्षेत्र में नई सड़क बनाई गई।
- **कृषि सुविधाएं:** कृषि कार्यों के लिए अपेक्षित कृषि सामग्री एवं उपकरणों के उचित भंडारण तथा परिसर के रखरखाव के लिए नई सुविधा का निर्माण।
- **एचपीसीसी संरचना के साथ प्रक्षेत्र अनुसंधान परिसर:** एक ही स्थल पर सर्वोत्तम प्रक्षेत्र जांच (सूखा, गति प्रजनन और जीनोम संपादन) सुविधाओं का निर्माण।
- **कांटेदार तार की बाड़ लगाना:** गुड़ामालानी, बाड़मेर, राजस्थान में बाजरा पर भाश्रीअनुसं के क्षेत्रीय केंद्र के लिए आवंटित भूमि पर बाड़ लगाना।
- **प्रशासनिक सह प्रयोगशाला भवन:** गुड़ामालानी, बाड़मेर, राजस्थान में भाश्रीअनुसं के क्षेत्रीय केंद्र हेतु नए भवन का निर्माण।

16 राजभाषा कार्यान्वयन

हिंदी चेतना मास समारोह

भाकृअनुप - भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 14 सितंबर से 13 अक्टूबर, 2024 के दौरान हिंदी चेतना मास समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने 18 सितंबर, 2024 को दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा संस्थान के सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई। इस समारोह के दौरान आशुभाषण, टिप्पण व आलेखन, अनुवाद, अंत्याक्षरी तथा पोस्टर प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। उपरोक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक कार्मिकों, अनुसंधान सहयोगियों, वरिष्ठ व कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं आदि ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। इसके अलावा, उक्त माह के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने आधिकारिक दस्तावेजों पर हिंदी में हस्ताक्षर किए।

संस्थान में 15 अक्तूबर 2024 को हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं हेतु पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् गान से हुआ। तत्पश्चात डॉ. जिनु जेकब, वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिंदी कक्ष ने समारोह में उपस्थित पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा संस्थान में 2023-2024 के दौरान संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत

किया तथा कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी सहभागियों, निर्णायकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती ने श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा श्रीमती जी सरस्वती, आहरण एवं संवितरण अधिकारी को अधिकाधिक नेमी कार्य हिंदी में करने हेतु प्रेरणास्वरूप नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। इसके अलावा उन्होंने हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र वितरित किए तथा अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। डॉ. तारा सत्यवती ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायकों एवं संचालकों को भी स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ. तारा सत्यवती ने इस भव्य समारोह में नव-नियुक्त कार्मिकों के उत्साह व उमंग को देखकर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी संस्थान की प्रगति दल-भावना से ही संभव है, अतः सभी को एक-दूसरे की सहायता करते हुए संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को नए आयाम प्रदान करने चाहिए। हिंदी ही

एक ऐसा स्तंभ है जो विविध संस्कृति, भाषा, भाव, व्यंजन, व्यवहार आदि से सराबोर भारत को एक सूत्र में बांधे हुए है। प्रत्येक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह गलतियों के कारण होने वाली झिझक से दूर रहकर हिंदी में कार्य को प्रमुखता दें और संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन को तीव्र गति प्रदान करें। अंत में डॉ. महेश कुमार के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन, तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। संस्थान में संपन्न पूरे हिंदी चेतना मास समारोह के कार्यक्रमों का संचालन एवं समन्वय डॉ. सी तारा सत्यवती के दिशा-निर्देश में डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने 8 मार्च, 2024, 24 जून, 2024, 26 सितंबर 2024 तथा 19 दिसंबर, 2024 को चार हिंदी कार्यशालाएं आयोजित कीं। श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, भूतपूर्व प्रभारी एवं उप निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप-संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राभा), भाकृअनुप-भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए एवं प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। उक्त कार्यशालाओं का समन्वय डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं के मार्गदर्शन डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार ने किया।

संस्थान में संचालित अन्य राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

भाश्रीअनुसं का राजभाषा कार्यान्वयन विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं की सूर्खियों में: भाश्रीअनुसं, हैदराबाद में आयोजित राजभाषा हिंदी से संबंधित विभिन्न गतिविधियां एवं अन्य कार्यक्रम “हिंदी मिलाप”, “स्वतंत्र वार्ता”, “शुभ लाभ”, “द साउथ इंडिया टाइम्स”, “आंध्र ज्योति”, “साक्षी”, “नमस्ते तेलंगाना”, ”राजभाषा आलोक” आदि पत्र-पत्रिकाओं की सुर्खियों में रहे।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राकास) की बैठकें: प्रत्येक तिमाही में अर्थात 15 फरवरी 2024, 14 जून 2024, 21 अगस्त 2024 तथा 19 दिसंबर 2024 को राकास की बैठकें को आयोजित की गईं। समिति ने भाश्रीअनुसं में राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा की तथा राजभाषा विभाग के लक्ष्यों के अनुसार इसे तेजी से आगे बढ़ाने हेतु चर्चा की।

राजभाषा हिंदी की त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट: राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में संस्थान की त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, बेंगलुरु, भाकृअनुप, नई दिल्ली एवं नराकास-हैदराबाद-2 (केंद्रीय सरकार के कार्यालय) को भेजी जा रही है।

वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी संस्करण: संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन 2023 का हिंदी संस्करण प्रकाशित।

भाश्रीअनुसं समाचार पत्र का हिंदी में प्रकाशन: संस्थान के मासिक समाचार पत्र के हिंदी संस्करण प्रकाशित किए गए।

भाश्रीअनुसं विज्ञापन: विज्ञान दिवस तथा हिंदी दिवस के अवसर पर दैनिक समाचार पत्र “आंध्र ज्योति” “शुभ लाभ” “हिंदी मिलाप”, “स्वतंत्र वार्ता” और “द साउथ इंडिया टाइम्स” में 28 फरवरी, 2024 तथा 14 सितंबर 2024 को हिंदी एवं अंग्रेजी में विज्ञापन प्रकाशित किए गए।

हिंदी रोस्टर: संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के ‘हिंदी ज्ञान’ के स्तर के आधार पर एक रोस्टर तैयार किया गया तथा इसे नियमित रूप से अद्यतित किया जा रहा है।

हिंदी सीखिए बोर्ड: भाश्रीअनुसं परिसर में हिंदी सीखिए डिजिटल बोर्ड पर प्रतिदिन एक हिंदी शब्द, उसका अंग्रेजी में उच्चारण व उसके समकक्ष अंग्रेजी शब्द प्रदर्शित एवं संकलित किए गए। यह संस्थान के कर्मचारियों की हिंदी शब्दावली बढ़ाने हेतु अत्यंत उपयोगी पाया गया।

करार ज्ञापन / समझौते

(जनवरी - दिसंबर 2024)

श्री अन्न में सहयोगात्मक अनुसंधान तथा संवर्धन एवं श्री अन्न की किस्मों तथा मूल्य वर्धित उत्पादों के लाइसेंसन हेतु 2024 के दौरान निम्नलिखित समझौतों/करार ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए :

क्र.सं.	करार तिथि	अन्य पक्ष/ लाइसेंसधारी	करार ज्ञापन/ समझौते का उद्देश्य	लाइसेंसधारी/अन्य पक्ष के हस्ताक्षरकर्ता	साक्षी
1	09.02.2024	कृषि विकास सहकारी समिति, राजस्थान	सीएसएच 24एमएफ हेतु लाइसेंस	श्री हीरालाल शर्मा, प्रबंध निदेशक	डॉ. वेंकटेश भट तथा जे स्टेनली
2	13.02.2024	बीएआईएफ विकास अनुसंधान फाउंडेशन, महाराष्ट्र	सहयोगात्मक अनुसंधान	श्री बी. शिवरुद्रप्पा	डॉ. संगप्पा तथा बी अमसिद्ध
3	19.02.2024	एटीएस जीन टेक प्राइवेट लिमिटेड	4के एसएनपी पैनल हेतु लाइसेंस	श्री श्रीनिवास उड्डमुडी, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. टी नेपोलियन तथा डॉ. जे स्टेनली
4	23.02.2024	सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून	सहयोगात्मक अनुसंधान	डॉ. अतुल रंजन, प्रमुख	डॉ. ए वी उमाकांत तथा डॉ. जे स्टेनली
5	06.03.2024	जनजातीय कल्याण निदेशालय, तमिलनाडु सरकार	सहयोगात्मक परियोजना तथा संवर्धन	श्री थिरु एस अन्नादुराई, निदेशक	डॉ. टी नेपोलियन तथा श्री के श्रीनिवास बाबू
6	16.03.2024	कृषि एवं किसान कल्याण निदेशालय, ओडिशा सरकार	श्री अन्न संवर्धन	डॉ. प्रेम चंद्र चौधरी, निदेशक	श्री के श्रीनिवास बाबू
7	04.04.2024	रासी सीड्स (पी) लिमिटेड, तमिलनाडु	सीएसएच 24 एमएफ हेतु लाइसेंस	श्री एन. सरवणन, व्यवसाय प्रमुख	डॉ. जे स्टेनली तथा डॉ. अविनाश सिंगोड
8	15.04.2024	लोयोला अकादमी, सिकंदराबाद, तेलंगाना	छात्र अनुसंधान	डॉ. एल. जोजी रेड्डी एसजे, प्रिंसिपल	डॉ. जे स्टेनली तथा डॉ. पी संजना
9	26.04.2024	गोल्ड डस्ट रसोई, मध्य प्रदेश	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पादों हेतु लाइसेंस	श्री निलय जैन, मालिक	डॉ. जे स्टेनली
10	26.04.2024	एसआर यूनिवर्सिटी, स्कूल ऑफ कृषि, वरंगल	छात्र अनुसंधान	डॉ. आर अर्चना रेड्डी, कुल सचिव	डॉ. जे स्टेनली तथा डॉ. स्वर्णा रोणंकी
11	01.05.2024	वैष्णवी एग्रो फूड्स, आंध्र प्रदेश	2 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्री ए. शिवकुमार मालिक	डॉ. जे स्टेनली
12	20.05.2024	आरोग्य मिलेट्स कंपनी लिमिटेड, आंध्र प्रदेश	8 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्रीमती एम सरस्वती, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. जे स्टेनली
13	28.05.2024	तश्विका इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली	15 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्रीमती साध्वी, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. जे स्टेनली
14	20.06.2024	अवनि एग्रो फ़ूड प्रोडक्ट्स, आंध्र प्रदेश	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्री राधाकृष्णैया, विपणन प्रबंधक	डॉ. जे स्टेनली
15	05.07.2024	पाणी फाउंडेशन, मुंबई	मीठी ज्वार तथा उसकी मूल्यवर्धित प्रौद्योगिकियों का किसानों तक प्रचार-प्रसार (सहयोगी अनुसंधान)	श्री सत्यजीत भटकल, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. ए वी उमाकांत

क्र.सं.	करार तिथि	अन्य पक्ष/ लाइसेंसधारी	करार ज्ञापन/ समझौते का उद्देश्य	लाइसेंसधारी/अन्य पक्ष के हस्ताक्षरकर्ता	साक्षी
16	12.07.2024	श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय, मध्य प्रदेश	सहयोगात्मक अनुसंधान तथा श्री अन्न संवर्धन	डॉ. के एन गुरुप्रसाद, निदेशक	डॉ. वेंकटेश भट्ट तथा डॉ. पी संजना
17	20.07.2024	मिलेट्स, हैदराबाद	बहु श्री अन्न ब्रेड हेतु लाइसेंस	श्री पिडीशेट्टी प्रणव कुमार, साझेदार	डॉ. जे स्टेनली
18	12.08.2024	मंगा श्रीनिवास फूड्स इंटरनेशनल लिमिटेड, हैदराबाद	इंस्टेंट इडली मिक्स हेतु लाइसेंस	श्री कवाली मनदीप, प्रबंध निदेशक	डॉ. जे स्टेनली
19	18.09.2024	कथिरावा नेचुरल्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद	3 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	ऐश्वर्या समाला, प्रबंध निदेशक	डॉ. जे स्टेनली
20	18.09.2024	अजीत सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद	सीएसएच 24एमएफ हेतु लाइसेंस	श्री समीर पी मुले, प्रबंध निदेशक	डॉ. जे स्टेनली
21	21.09.2024	मंगानी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद	3 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्री के रुनिथ, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. जे स्टेनली
22	23.09.2024	विवेकानंद ट्रस्ट	सहयोगात्मक अनुसंधान तथा श्री अन्न संवर्धन	डॉ. बालू	डॉ. कलैसेकर
23	30.09.2024	भद्रा एग्रो सेवाएं, बल्लारी	ज्वार चारा संकर, सीएसएच 24एमएफ हेतु लाइसेंस	सुश्री के सुजाता, मालिक	डॉ. जे स्टेनली
24	30.09.2024	मल्लेश्वर कृषि एजेंसीज, बल्लारी	ज्वार चारा संकर, सीएसएच 24एमएफ हेतु लाइसेंस	श्री के रवि कुमार रेड्डी, मालिक	डॉ. जे स्टेनली
25	30.09.2024	फोरेजन सीड्स, कर्नाटक	ज्वार चारा संकर, सीएसएच 24एमएफ हेतु लाइसेंस	श्री के अनिल कुमार रेड्डी, प्रबंध निदेशक	डॉ. जे स्टेनली
26	03.10.2024	श्री सूर्या ऑर्गेनिक्स, हैदराबाद	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्री लोकेश्वर राजू कोंड्री, प्रबंध निदेशक	डॉ. जे स्टेनली
27	08.10.2024	व्होलसम, हैदराबाद	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	सुश्री इरेनी इंदिरा, मालिक	डॉ. जे स्टेनली
28	15.10.2024	कैरियर पाइंट विश्वविद्यालय, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश	श्री अन्न के स्वास्थ्य लाभ, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन तथा संवर्धन पर सहयोगात्मक अनुसंधान	डॉ. संजीव कुमार शर्मा, कुलपति	डॉ. संजना रेड्डी तथा डॉ. जे स्टेनली
29	29.10.2024	श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय हेतु मानव उत्कृष्टता, श्री आत्या साईं अन्नपूर्णा विश्वास, आईसीएमआर-राष्ट्रीय पोषण संस्थान	सहयोगात्मक अनुसंधान तथा श्री अन्न संवर्धन	डॉ. डी एच आर नायडू, कुल सचिव, एसएसयूएचई डॉ. आनंद कुमार कदली, मुख्य कार्यपालक अधिकारी एएएटी डॉ. बी पी रेड्डी, आईसीएमआर-एनआईएन	डॉ. आर वेंकटेश्वरलू
30	05.12.2024	श्री अन्न उत्पादक, हैदराबाद	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्रीमती गायत्री वेमुरी, प्रबंध साझेदार	डॉ. जे स्टेनली
31	06.12.2024	मावी न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड, आंध्र प्रदेश	6 श्री अन्न मूल्य वर्धित उत्पाद हेतु लाइसेंस	श्रीमती हदास्सा मंथरी, मुख्य कार्यपालक अधिकारी	डॉ. जे स्टेनली

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

रासी सीड्स (पी) लिमिटेड, तमिलनाडु

तश्विका इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

पाणी फाउंडेशन, मुंबई

बीएआईएफ डिवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे

होलसम, हैदराबाद

दुबई, यूएई में 25-26 मार्च, 2024 के दौरान आयोजित आईवाईएम 2023 से इतर साझा दृष्टिकोण और समावेशी कार्रवाई हेतु ग्लोबल साउथ मिलेट सम्मेलन के प्रतिभागी

डॉ. अरविंद कुमार, भूतपूर्व उप महानिदेशक, इक्रिसेट, हैदराबाद की अध्यक्षता में 19-20 सितंबर, 2024 के दौरान श्री अन्न अनुसंधान और विकास की प्रगति की समीक्षा करते हुए अनुसंधान सलाहकार समिति

भाकृअनुप ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान

श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्टता केन्द्र

11-127, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत

दूरभाष: +91 40 2459 9301 (निदेशक); 2459 9300

ई-मेल: director.millets@gmail.com

वेबसाइट: http://www.millets.res.in